

विदेशों का वैभव

(पश्चिम के विभिन्न उन्नत देशों के सौंदर्य और वैभव का
आला-दला वर्णन)

लेखक

रामेश्वर तातिया, ससद-सदस्य

प्रकाशक

इण्डियन प्रेस (पब्लिकेशंस) प्राइवेट लिमिटेड,

इलाहाबाद

१९६५

मूल्य ३५० पैसे

प्रकाशक
बी० एन० माथुर
इंडियन प्रेस (पब्लिकेशन) प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबाद



प्रथम संस्करण
१९६५



मुद्रक
पी० एल० यादव
इंडियन प्रेस, प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबाद

भूमिका

बचपन में जब मैं हाई स्कूल में था, पाठ्य पुस्तक में दस विदेश सम्बन्धी वरान भी रहता था। विदेश में जाया का भाषा, रीति-नीति, और रहन-सहन आदि के बारे में जानने का रुचि होती थी। चाब बरता गया और मैं यात्रा सम्बन्धी जो भी पुस्तक मिली, पढ़ने लगा। हूँन चाग और इन्वन्तूता की यात्राएँ मुझे बहुत अच्छी लगती थीं। ऐसा लगता था कि मैं भी उनके साथ-साथ ही भ्रमण कर रहा हूँ। इसके बाद स्वामी मत्यदेवजी परित्राजक और राहुन जी की यात्रा-पुस्तकें पढ़ने को मिली दुनिया का समझने परखने का एक नया दृष्टिकोण मिला। स्वदेश तथा विदेश के तुलनात्मक विवरण की प्ररणा भी मिली। साथ ही स्वदेश के विवाय दूसरे देशों की यात्रा की उत्कट इच्छा होने लगी।

जिज्ञासा मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। जानने की प्यास बुझती नहीं। जब बुझ जाती है तो मनुष्य जटवत हो जाता है। उसकी चेष्टाएँ और प्रवृत्तियाँ कूप मण्की हो जाती हैं। भारतीय मस्त्रति में इसी कारण जिज्ञासा और जिज्ञामु दोना का महत्व दिया गया है। ज्ञान की प्राप्ति न लिए यात्रा पर अपभित बन भी दिया गया है।

भारतीय जीवन की पूराता वानप्रस्थ और मयाम से मानी जाती थी। इन्हा वाना आश्रमा में तीर्थाटन द्वारा मत्य का खाने और पहचानने का निर्देश था। इसीलिए हमारा मुख्य तीर्थ बद्रीनाथ, रामेश्वर, द्वारिका और पुरा देश के चारा वाना पर थे। इन तीर्थों में जाना हमारा सामाजिक राष्ट्रीय धर्म का एक अंग माना जाता रहा है और महात्मा मायता रही है कि जिना चारा धामा की यात्रा के मनुष्य को मोक्ष नहा भिनता।

भ्रमण और ज्ञाटन व प्रति प्रम, प्ररणा और रुचि क पन्वन्व ममार की विभिन्न मस्त्रति मार मन्वता का विभिन्न सामग्रा का मय कर साम्प्रतिक नवनात वनात का जितना ध्यापक प्रयोग हमारा इतिहास में मिलता है उतना विश्व क कियाम भी तस में नहा।

आज से ढाई हजार वष पहल जब न तो यातायात क सुगम माधन ही थे और न मुग्शा की उचित व्यवस्था ही परन्तु उम ममय भा मघाट अशाक की

पुत्री गुरुर लका से गई । धात्र भी गरी परणारा है भय हा गीत धीर धन्य
म म हा ।

हजार वर्ष की दागता व कवचरुण भारत का किमा बाग की धारपका
है ता यह है कि धात्र का जीवन रण व रित इत गृध्या पर धरत धाररा
प्रतिष्ठा कर । यह सभी सम्भर है जब यह धाय राट्टा का उन्वय उग
कागण धीर गतिविधिया का समभ धीर इन बगोटा मानार धरा कम्म धाग
बड़ा गति हमार भूमि धीर हमारे गरुति परिमात्रि हा धीर उगम
निसार धार ।

१९५० म मुभ पान्तों गी मे जान का धारण मिता । प्रन्तु पुस्तक में
उन्हा यासाधा व नमरण है । त्रि गी म गया उनर पुरानत धीर नवान
दाना गी का गमभन का चला की गाय ही धान दग व गाय एक तुनना
त्मर धध्यया का भा प्रयाग किया ।

धरा यह प्रयाग बैगा वन पाया धीर धारका बैगा तगा यह नहा जानता ।
स्वर्गीय गदा—भा मीयतागण गुप्त—का धारण या भाई इगता गवक लिए
लिराना मव समभे—एगा हा—इमी प्ररणा म लिखता रहा । उहाने ही इमका
नामकरण किया था "विगा का वैभय धीर भूमिका निम्न का भी स्वाहति
दी था परन्तु ईस्वर का यह स्वाकार नहा था ।

पंडित धानारायणजा चतुर्वेग व धापट म यह पुस्तक व रण म है, इमके
लिए आभारी हैं । यदि धापका धादा लगगा ता मुभ प्रासाहन मिलना स्वा
भाविक है । साहित्यिक नहा हैं हा साहित्यानुरागी धयदय हैं । धीर इग युग व
बड म बड साहित्यकारा के निकट रहन का सौभाग्य प्राप्त रहा है ।

धापक मुभाव का स्वागत है ताकि भगती पुस्तक म समन्वय कर सकूं ।
गन १९६१ धीर १९६४ म दूगरा धार तामरी वार विदेगा म गया रस ब्रह्मा
मलाया हागकाग जापान हवाई द्वीप धीर अमरिका का एक शिरे तक देखा धीर
वहाँ भी जो बुद्ध देख मुन आया व धापक मनोरजनाथ गीध्र प्रस्तुत करेगा ।

जन भारता व धनय एव विगात काय म यह अटपटा धध्य स्थान पा
गया ता धपना श्रम साधक समझूगा ।

—लखरू

क्रम-सूची

विषय	पृष्ठ
१—पगिया का नगरी परिम म एक रात	१
२—बला और मस्कृति का कद्र प्राम	६
३—गिरजा और गाणाला क बीच	१२
४—गाम्पियाई की भस्म-समाधि पर	१९
५—राम—यूरोप की प्राचीन पुरी में	२४
६—निशा-भूय क दश में	३०
७—समुद्र विजेता देग	३८
८—भूनाक का नन्दनकानन	४७
९—भवम ऊँची टून मवसे लम्बी सुरग	५४
१०—मुकरान और निवन्दर के दश में	६१
११—पिरामिडा क देश में	६७



विदेशों का वैभव

परियों की नगरी पेरिस में एक रात

लन्दन में पेरिस, वायुयान द्वारा सिर्फ दो घण्टा का सफर है। दृष्टि सिडकी में बाहर थी। कहीं-कहीं रुई जैसा बालूला क ढेर लिखनाई पट रह थे विन्तु मन की दृष्टि पेरिस पर थी।

पेरिस। फ्रान्स की राजधानी। फ्रांस। वह देश जो आधुनिक पश्चाय विचारधारा का प्रवर्तक है। वाल्सेयर्स रूमा विक्टर ल्यूगा घनानाले फ्रान्स, रोमारोला और बाल्जेक का देश फ्रान्स। पश्चिम का ममता बधुन्व और स्वाधीनता का पाठ पढाकर साहित्य, सस्कृति और राजनीति का एक नयी जिशा देनेवाला फ्रांस। पेरिस। फ्रान्सीसी लोग उस पारी कहते हैं। पारी' नहीं, वह पारी' है—मजौली छोली चिरयावना। मीन मनी क दपण म वह अपना मोन्य देखती है मुम्बुरानी है धार इठलाती है। राजनीति बदलती रही सना हस्तातरित हानी रनी पर पारी' मुम्बुराती ही रहा।

माघन लगा—राम और एथन्स का वैभव कान का विजित न कर सका विन्तु पेरिस ? इसका तो निरास ही जमघुटी मिनी है। तीन-तीन बार जमन तापें गरजो, इसके नीचे स टकराइ पर इसकी मुम्बान बंद न कर सकी यह हमना ही रही और आज भी इठना रहा है।

पेरिस की मीनार लिखनाई दन गगा। वायुयान की परिचायिका की आवाज आयी— हम पेरिस पहुँच रहे हैं। कुछ हा क्षणा में वायुयान पक्ष तीव्रता हुआ पेरिस का धरती चुमन लगा। पौनूहल बलिनया उठन रहा था। वायुयान एक हल्का मी उछान क बान स्थिर हो गया।

सीलिया में उतरन लगा। नाम की ठडा ट्वा के एक भाके न कहा— 'यह पेरिस है। कदम जरा सँभान कर रखना।

दूब निश्चित होटल में पहुँचकर यात्रा का क्ताति दूर की। इस यात्रा में यरे पास पेरिस घूमन क लिए समय कम था। लन्दन में ही तय हा गया था कि सबसे पहल पेरिस को रात दखा जाय। भाजनानि स निवत हाकर घूमने निकना। चौडी सन्क दाना धार यथा की बतारा के पीछे बादना को

छेड़ती हुई मीनारों गुम्बज की घोटियाँ। त्रिनेत्रा का प्रस्ताव म माना 'परम' को गजधज से झालें चौधिया रही था। स्त्रा-गुण्य मौज म बन जा रह था। दूतानें ता मानो सजी हुई प्रस्तावनी ही हा। 'जों इय बर्र भापन बग स सजी था वि' धोखें लसती ही रह जाता। इतरगत गभनयुग क गनाना-ग सगने थ। भडकीनी पोनाकें ऊँच बालर, उठा हूइ गनन और तना मीना। काई तागनुव नहा यदि इन दूताना ग गुजरने हुए भाग्यो का अपना उम्य म उम्य पागाक म भी बुद्ध नुक्म गितनाइ पड जाय। गाए राजा नाम की विन्वविश्यात सन्न का दूताना का देखता हुआ भाग बर रहा था। गगाए की सत्य प्रसिद्ध दूतानें और सत्य चतुर एव व्यवहार-कुशल दूतानगर यहा दखन में आने हैं।

रात्रि क दस बज रह थे पर रात्रि की शाम का अभी शरमान हा हुँ थी। पेरिम की शाम भाटूर है। जहाँ बहा जाया मौज मान क निल सभा गाउन मौजूद है—बानून का काई पायला नहा। भांपरा, थियरर मिनेमा तो सभी शहरा म है, विन्तु परिस क 'रात्रि-वनर' और 'वनरो' इम इन्पुरी की अपना ही विशयनाय है। एम वनरा की सस्या काफी है। भापकी जेठ भारी चाहिए फिर जैमो इच्छा हो वमा वनब चुन जाजिए। रात हमत खलत भाग्यो प्रमाद म गुजर जायगा।

म इसी तरह का एक रात्रि-वनब देखने जा रहा था। अचानक विसा न पीछ से आकर पूछा 'महाशय वैसा लया पेरिम ?'

अभी तो देख रहा हूँ —मने उत्तर दिया।

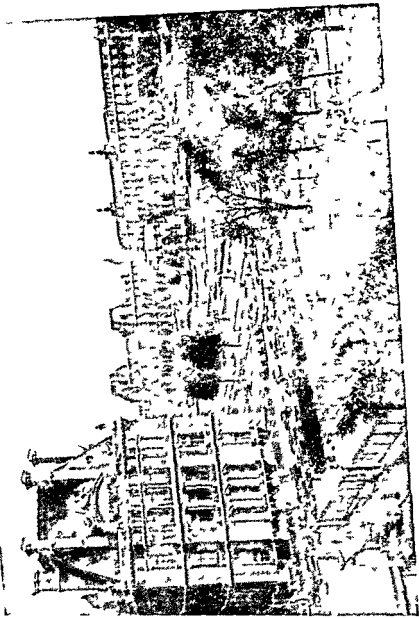
उमन तुरत ही कहा 'आप पेरिम की वनात्मक चीजें भी देखना पय करग ?'

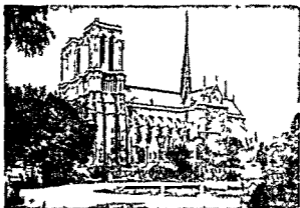
'अवश्य' विन्तु महाशय मुझे तो जोरा की प्याम मालूम पड रही है।

उम भल भाग्यो ने एक भू भरी मुस्वान के साथ भरी और देखा और पास ही के एक रस्तारा म ने गया मुझम पूछा 'कौन सी गराब पसद करगे ?'

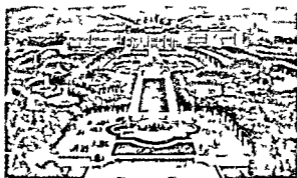
मैंने उस बताया 'म शराब नही पीता अलबत्ता दूध या चाय पी लूंगा।

पेरिम क उस दंबदूत ने बड तपाक से मेरे लिए दूध का भाग्य देते हुए अपने लिए गराब की फरमाइश कर दी। कहना नहा हाया कि मुझ ही दाना का चिन चुवाकर अपनी जब कुछ हलकी करनी पडा। शराब पाते हुए उमने अपना जत्र स कई तरह की अश्लील तस्वीरा का एक त्रिपाफा निकाना, परन्तु मेरी बस्ती देखकर बेचारा चुप रह गया। पर उमने हिम्मत नही हारी कहने लगा





परिस का नात्रदम गिरजाघर



वामाई का उद्यान और फव्वारे

‘महालय, परिम है और जीवन है। दुनिया के किमी भी कान के ध्यान प्राप्त व दुःख म दुःख माधन भी यहाँ मनुष्य को महज प्राप्य हैं। लोग परिम आते हा इमानिए हैं। यहाँ मनुष्य ता क्या पत्यर की प्रतिमाएँ भी बनती हैं।

इसी दौरान उस त्रिफाफ म एक मस्ताभरा नव-यावना की तस्वीर निकाल कर निखाने हुए कटने लगा ‘इम देखिए, यह मरी भतीजी है। इसका भारत तथा उसके निवासिया व प्रति बडा रुमान ह। बहुत प्रच्छा रह कि जब तक आप परिम में है इमक माय भी कुछ समय बिनाएँ। परन्तु म परिम व एम बिना पहचान हुए मित्रा स पहल हा स सावधान था इमलिए ‘भागिए का वय वा’ भर देता हुआ रात्रि-कनव व त्रिण प्राग ब’ गया।

परिम के रात्रि-कनवा म ताप लुक छिपकर नहा जात। एक ही कनव म भाई-बहिन, पिता-पुत्र और माँ-बटी नि मकाच भाव स पीत या नाचते हुए मिल जाते ह। बहा बढ-बढ राजनीतिना, कलाकारा लखवा और बिचारवा को देखकर भा आपका आश्चय नही हाना चाहिए। पति पत्नी का भा आप वहाँ पायेंगे, किन्तु अलग अलग ज़ाडा म नाचने हुए।

मध्यम स्तर के एक कनव व फाटक पर पहुँचा। मुमजिजा द्वारपात बर्दी परिम लय था। मुझे देखकर उमन बढ अत्र व माय दरवाजा खाना और जरा मुका। मैं अन्तर चला गया। पाम ही काउन्टर पर बठी एक पाउली न मन्भरी मुस्कान के माय अँगरेजी म आवरकोट और टोपी रखन के त्रिए माँगी। आवरकोट की जरूरत न थी, कारण बाग् जैमी मर्ने अन्दर न थी। इमारत ताप नियमित थी।

कनव का प्रकाश-शुक् भारतीय मुद्रा के हिमाव म ६ रुपय चुकाकर ऊपर हाव म गया। फग पर मोटे च्येंदार नम गनाच, छता स लटकती हुड बनिम व कीमती बिल्लीरा गारे की बडी-बडी फानूमें तथा दीवारा पर कीमती चित्रा और आदम-कन आर्नोनाना हाँन एसा जगता था माना मध्य-युग का कार्द भव्य राज प्रामाण ही। फक कवल इतना ही था कि जहा उस समय व राज प्रसादा म कवल एक हो नेग के नाग निखाई पड सकत थे, वहाँ बामवी मदी व रस राज प्रामाद में विभिन्न दगा व नाग आनद ल रह थे।

मामन म एक बटर आया। उमने भुक्कर मनाम करन व बाग् एक खाली कुर्मी की और बँडन का सवत किया। मर मस्तिष्क म नाना प्रकार व प्रान चक्कर काट रहे थे। रात का सूर्य देखा लंपनण्ड में नदन कानन की छटा दस्ता

स्त्रियजनों में घोर घोर गाथाएँ इत्र का स्वर में गता हूँ पवित्र म । गवां
 गामन टविन पर मन्त्रि क अधभर प्याय व घोर घोरों म गुमारा । माता
 गारा वातावरण ही मन्त्रिरामय हा । गामन हा एक बडा मच था, जिग पर गगान
 की हरतान पर पूरा घोर घोर-नान् मुरारिया धिरगा हा हूँ नाच गी था ।
 लगनऊ व धर्मिम नराय वाजिमघना गा का वितागिता का हात पडा था ।
 वर इद्रगभा बटाता था । पर जा मे मग रग रग हूँ दार गामन वर एक
 गिनवाड हा गहा हागा । इहा विवारा म गाने मगा गहा था जि ग मुरारिया
 बगन म धा बैग एम नि गवार भाव ग जैम मरी उरगा बरगा की ऊन
 पहचान रग हा । वर न भा वर लपाव ग गरावा की एन नगा वर्गमन
 पग वा । ऊपर ग नाच तग गई तरग का गरावा व नाम घोर दाम जिग हूग
 व । वामन वाजार म छ गुना अधिव था । मैत वर म कहा कि मै गराव नहा
 पाता । वर न बड घाननय ग दगा घोर नुगन्त ही ह-वर का पुता नाया ।
 उमन बड ही नग्न भाव ग बग वा बात नहा । मुग न गरी गुन्ारिया ता
 है । मुरगान व बरमी मनारजन घापका हागा । परन्तु इग बात पर भी मर
 राजा न हात पर उमन धपन निचन हाड का जग विचराकर गाना कथा का
 ठपर की घार मिहा निया फिर उगी नवाच एन विनमता व साम कहा
 महामय मुरगान न बरनवाला व निग वर गामन की गैरगा है, जहाँ म खड
 हाकर नाच देला जा भक्ता है । पच मवार क भैरवी चन स बच रहन व निग
 मन गैरगा म खड रहन म हा धपना घोर धपन बटुग का भलाई समभी ।

प्राय घट भर गैरगी म रहा । एक लमनड पिया । दाम चुवाना पग ६
 स्पया । यहा म सार हाँन का रगरनिया का दुख्य बगुबी देला जा सकता था ।
 मभी यावन घोर मन्त्रि व नश म भूमन हुए घानन ल रहे थ । सभी जिन्दगी
 क इस पार की ही फिर म थ । उग पार की बात साचन की पुमन
 किस थी ?

वित्त एकाएक उब गया घोर हाटल की घार ताट पडा । मध्य रात्रि का
 समय था । सडका पर भीड नहा थी, पर लाम चल फिर रह थ । रास्त म भी
 कई महिराघा ने अधिवादन किया । क्या ? — मन म आया भी कि घट प्रान
 पूर्य पर फच नहा जानता था । मन एक स्त्री को ता अग्रजी म जवाब भी
 दिया मर पाम पैस नहा है — आपको निराशा हागी । उसका जवाब था
 कितन हैं ?

मैं तेजी स काम बगता हुआ आग निकल गया ।

होटल पहुँचकर कपड बन्त और बिस्तर पर नट गया । बड़ी गान्धि अनुभव की । इतन अल्प समय में परिया व परिम का जादुय सामन आया उसने मन्त्रिक का साचन व लिए काफी मामग्री दी । यही वह नगरी परिम है, जहा सऊदी अरब व अमीर और दरान के पागा तेन की रायल्टी स प्राप्त धन का पानी की तरह बहान के लिए आते रहते है ? अपन दस की बातें याद आ गइ । राजे-महाराजे, रईस और जमीनार भा कभी इस परिम म गरीब प्रजा की गान्ठी कमाई का नामा हाथा लुगते थे । कभी-कभी ता परिम व किसी विख्यात क्लब म एक ही रात्रि का उनका बिद लाहा स्पष्ट तक पन्च जाता था । यहा बारए ह कि आज भा भारतीया व पीछे परिम की मुन्तरिया दौडती रहता है । उन वचारिया का क्या मालूम कि अब न व राजे-महाराजे रह और न रजवाड । साम-तगाही व अवमान स नरगा को तो खद हुआ ही पर यहा का परिया और दूकानदार का भा कम दुख न हुआ हागा ।

कला और सस्कृति का केन्द्र फ्रांस

रात्रि-व्रतवा का माहीन परिम का इवतरफा पट्छू है । फास घोर परिम को केवल एययाणी माज और गीव की जगह समभना भारी भूत होगी । ससार प्रसिद्ध नेपालियन घोर कोण जैसे बार तीन घाष भाव जैमी वीरागता, बाल्यर और राष्मपिभर जैम राजनीतिन ड्यूमा बाल्जर ह्यूगा फनातान फाम घाण एमिल जागा जैम माहित्यवार इमी भूमि में पैग हुए है ।

दूमरे तिन तडक ही उठा । नास्ता-पाना लिया । घाज परिम का दूमरा रूप दखना था । उस नगरी का जा परी नहा बल्यि फाल्मीमी मन्वृति सम्मता और चतना का उत्तम है । उम पेरिम को देखना था जिमन बड बड विचारक कलाकार, लखर और गिली पैग किय है जिमक विश्वविद्यालय में दीर्घित हान घाज भी हजारों विद्यार्थी विदेगा स घाते रहते हैं ।

इम उद्देश्य स टामम बुक की पैर्मजर बम का एक टिकट १५ रुपय म लिया । इसम सबसे बडी मुविधा यह थी कि अगरेजी में सब बातें समभनवाना एक गाइड भा भाथ रहता है । चालास पचास यात्री आराम से बठ सवते हैं । मुवह नी म बारह बजे दापहर तक और फिर दा स छ बज शाम तक बस पेरिम के मुख्य मुख्य दशनीय स्थाना का चक्कर लगा लती है । इसम स्थाना को अपनी इच्छानुमार दखने का मिलसिना तो नही बन पाता और न किमी स्थान विशेष को अधिन समय तक देखन का अवसर ही मिल पाता है फिर भी बहुत कम खच में इतने सारे स्थान एक ही बार में देख लने का बडी सतूलियत हो जाती है । कई यात्रिया से परिचय-लाभ का भी अच्छा अवसर मिल जाता है । हा यदि किमी स्थान को विशय रूप स देखने की इच्छा हो, तो उसे दूसरा बार अलग स जाकर देखा जा सकता है ।

मबमे पहल इतान पढ़ा । यहां से बारह सडकें निजलती हैं । ठाक बाचा बीच माए बेजा का एक वृत्ताकार उद्यान है । इमी उद्यान क केंद्र म विजयतारण है जिमे मघ्राट नेपालियन न अपनी विजय क स्मारक-स्वरूप बाबाया था । १६५ फुट ऊचा फाम का यह स्मारक अपने देश के गात्वमय इतिहाम के उस पृष्ठ की याद गिनाता है जब माधारण परिवार में उत्पन्न हानवाने एक असाधारण

वार न यूरोप क बड-बड मम्राटा का दप चूर कर लिया था । फाम क नाग विनामप्रिय है, विन्तु वे तनवार क घनी भी हैं । क अपन दग क लिए, भारत के राजपूता की तरह जान ह्येनी पर रखकर मृत्यु से खेलना भी जानते हैं । इम विजय-तारण के चारा काना पर चमकीनी धातु म बनी चार भव्य मूर्तियाँ हैं जिनमें कनाकारा न प्रम्यान, विजय, गान्ति और प्रतिगाव की भावनाभा का अपना कल्पना क अनुसार मूत रूप लिया है । इन मूर्तिया की कारीगरी और कना को देखकर फाम की अठारहवी गती की कना का उत्कष प्रत्यक्ष सामन आ जाना है । समार प्रमिद्ध माए-नजा नाम की मटक यहा स निकलना है जा समार भर म अपनी मुन्दरता के लिए प्रमिद्ध है । मीने यूरोप क प्राय सभी दशा का भ्रमण किया है । ज्यूरिच स्टाकहाम, वापनहगन, हग और ब्रूमल्म आदि मुन्दर न मुन्दर गहरा का दला परन्तु इननी मुन्दर सुविस्तृत मटक कही भा देखन मे नहीं आपी । बीच में सवारिया क लिए बहुत चौग रास्ता, दोनों तरफ काना का कनार और उमक बाद पैगल बननवाना क लिए दाना तरफ रास्ते, और फिर बनी-बडी दूकानें—जिनमें मुद से उकर हीरे-जवाहरात तक खरीद जा सकते हैं । मटक का मफाद और चमक तो इननी ज्यादा है कि बहुत न विनेशिया का इमक खड का हान का भ्रम हो जाता है । हमारे दग म ता यह मगहूर भा है कि फारि म खड की सङ्क है ।

इमक बाद प्लेम द ना कबड दला । फच मम्राद् तुर्द पद्रहवें न इम स्मारक का अपनी विजय क उपलक्ष्य में बनवाया था । विधि का बीमी विन्बना है कि इमी स्मारक के नीच जनता न उमक उत्तराधिकारी साबहब लुई की गतन फरम स उडा नी था । वास्तु शिल्प और कना की दृष्टि स नि मणैह पद्रहव लुई का यह स्मारक ममार में एक विशिष्ट स्थान रखता है । मित्र का विजय क बाद नपानियन वहाँ स ७५॥ फुट उंचा एक स्तम्भ लाया था । २३० टन क पत्थर का यह स्तम्भ अनुमानत २ २०० वष पुगना है और इम पर प्राचीन त्रिपि में कुञ्ज रख खुदे हुए हैं । इम स्तम्भ का स्मारक क उपर खडा किया गया है ।

इमक बाद हम विश्व का सबस विशान और प्रगस्त राज फामाट दखन गय जिमे लुब्रे कहते है । कका निर्माण १२००-३० म प्रारभ हुआ और १८७० ई० में यह बनकर तैयार हुआ ग । इमके बनान म लगभग ७०० वष लग थ । पहन यह एक किना था । बाद म फाम क राजाभा न इम महन क रूप म परिवर्तित कर दिया और अब इमके एक भाग में फाम का वित्तमन्त्रालय है और शप भागा म मान बड बड सग्रहालय हैं जिनमें विश्व की बहुमूय कलात्मक वस्तुभा का

गण्ड है। मोना विद्या का विचार विभूत विचार में लेगा था यह गया। उमर मुन
की रहस्यमयी मुग्धा छात्र भी स्मृति में गाओ है। इस विचार का बचा जाय या
वाणिज्य तथा शिक्षा स्मृतिप्रथम एक बराबर गाने का न गाने है।

प्रायः क विभिन्न तन्त्रों के जराहता यहाँ दम। गन्ताया के गाने के कारण
प्रायः सभी दंगा में एक न ही र, है। गन्ताया का दुर्गम्यता और विचारिता। हमारे
यहाँ मुग्धा गन्ताय और समनत के नवाय भी इसी कारण गन्त विन्दु प्रायः के
गन्ताया का छात्रा उत्तरी विस्मय का। गन्त कर्ता जाता न उह करन तन्त्र में
हा उहता परम में उनही गन्त तन्त्र उत्तरी।

मुन के बाद विचारविशेषता तन्त्रों का प्राथमिक गिरजा गन्त गया। गन्ता
मा पताया पर बा इस गिरजा का दूरा दूर ही में प्रभावगाना गन्ता है। परिण
के दूरीगम में इसका स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। गन्ताय का गन्तायिभयत इसी
गिरजा में हुआ था। इस गिरजा की यही प्रायः के अन्त राजाया और गन्तुगन्ता
के विचारों की माओ है। गन्ताय प्रायः का गन्ताय भावना का जायि प्रायः
गन्ता है। गिरजा का दायारा पर माता मन्त्रिम, दूरा और अन्त सता के विचार
अन्त है। गन्ताय में रग अन्त गन्तायों काया के दूरा के अन्त मुन्त्र विचार
बनाय गया है। गन्त गन्ताय की गन्त गन्ताय का है और इस गिरजा में उमर
बहुत गन्त नमून गन्ता है।

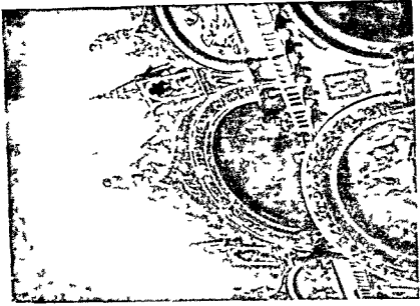
गन्ताय की अन्त गन्ताय उमकी स्मृति गाओ ही उओ। प्रायः का गन्त
माधारण व्यक्ति अन्त अन्त उलाह गन्ताय और गन्ताय में गन्ताय की राजगन्ताय
का सबभ्रष्ट नायक बन गया। उमर प्रायः की गन्ताय में तुम्हाते हुए राजमुकुट
का तन्त्रवार की नाक में उठा लिया। एक गन्ताय एका भी था जब इन्त में
मानाए अन्त अन्ता को गन्तायत के नाम से उलाह गन्ताय था, फिर एक
जमाना एका भी प्राया जन्त अन्तगन्ताय का अन्त बन गया। अन्त गन्ताय में बहुत दूर
गन्त हुनता के निजन्त टापू पर अन्त में उमकी मृत्यु रहस्यमय ढंग से हुई। अन्तकी मृत्यु
के पूर्व उमर इन्त प्रवन्त की थी कि मरी गन्ताय मान गन्ताय के गन्ताय प्रायः
मियो के बीच दन्ताई जाय जिन्त मने जीवन-अन्त प्यार लिया है। यह स्पन्
है कि गन्तायत के विजय अभियान में प्रायः का गौरव बड़ा था। उमर प्रताप
के प्रायः गन्ताय गन्ताय भुन गया था। गन्तायिका ने अन्त इस राष्ट्रीय वीर की
अन्त को जी भर कर मजान्तर अन्ता और स्नह प्रगन्त किया है। जिन्त गन्ताय
नेपोलियन की अन्त है वहाँ एक अन्त सन्तान्तर भा है, जिन्तको प्रगन्त बादगाह
तुई चौदहव ने अन्त सिपाहिया के रहने के लिए अन्ताया था और इसी कारण

इसका नाम घायना का स्थान है। यहां चर्च आफ़ इनवालिन्स है, जिसके गुम्बद में साने के ३ १०,००० पत्र लगे हैं।

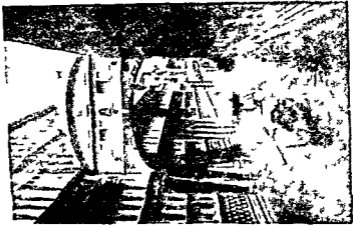
दिल्ली की कुतुबमीनार, बनकत्त का विक्टोरिया मेमोरियल, लन्दन का टावर ऑफ़ लन्दन, रोम का सत पीतर का गिरजा जिस तरह अपने अपने नगर के प्रतीक हो गये हैं, उसी तरह परिस का प्रतीक है एफ़िन टावर। ११ ००० टन लोह की मीनार के इस ढाँच का खड़ा करने में दो वर्ष का समय लगा था। इसका ऊँचाई ९८८ फुट है। इस पर चक्कर मारा परिस बख़ूबी दखा जा सकता है। लिफ्ट से ऊपर चला। ऊपर एक छाटा-सा रेस्तराँ है। ऊपर से देखने पर पेरिस नगरी खिलौन-सी लगी। कहा जाता है कि पिछले महायुद्ध में विजेता जर्मनी ने इस मीनार के लोह का गलाकर युद्ध के कार्या में लगाने की बात एक बार सोची थी, किन्तु आनेवाली पीढ़ियाँ उनका नाम किस प्रकार स्मरण करेंगी यह सोचकर उन्होंने अपना विचार त्याग दिया।

जम लन्दन का केंद्रस्थान पिकाडिली सर्कस है इसी तरह पेरिस के सामाजिक जीवन का केंद्र आफ़रा है। यहाँ कई तरफ़ में प्रधान मडकों आकर मिलता है, और बीच में विश्वविख्यात थियेटर आफ़रा है। यह मजार का सबसे बड़ा थियेटर है जिसका बनाने में उस समय भी २॥ करोड़ रुपये लगे थे। इसके साथ ही कनाकारा की नान-बद्धि के लिए एक उत्तम मद्रहालय भी है जिसमें नाटयगारा सम्बन्धी ४०,००० पुस्तकें और ६० ००० चित्र हैं। मपूर्ण भवन सगमरमर के पथग में बना है। इसमें २२०० आदमिया के बठने की जगह है। विश्व के बड़े से बड़े कनाकार की भी यह इच्छा रहती है कि उसे इसक रगमच पर एक बार अभिनय करने का अवसर प्राप्त हो।

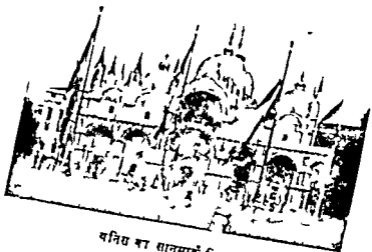
वसाई पेरिस से बारह माल दूर है। इतिहास में यहां कई क़ब्रत बंदनी है। यहां का राजमहल ममार के प्रसिद्ध राजमहल में से एक है बल्कि या कहिए कि वह अपने ढंग का निराला ही है। लुई तेरहवें ने इस मन् १६२० ई० में बनवाना प्रारंभ किया था। इसके बाद उसके जितने भी उत्तराधिकारी हुए, सभी ने इसक निमाए में अरबा रुपये लगाये। लाखा लागे से बगार नो गयी। राजप्रामाण तैयार हुआ। प्राप्त का मरकारी केंद्र पेरिस में हटकर वसाई के महल में आ गया, जिसमें राज-काज के उत्तरदायी १० ००० अमीर-उमरावा के रहने की व्यवस्था थी। उस समय वसाई के राजप्रामाण के उद्यान विश्व में अपनी सुन्दरता की सानी नहीं रखते थे। इनकी हरियाली कायम रखने के लिए सीन नदी से नहर लाने में ही करोना रुपये खच हो गये थे।



वेनिस में सानमाक गिरज का शीप



वेनिस की नहर पर 'आ होका पुल' (बल पर गोदोला)



वनिस का सानमार्क गिरजा



वनिस के पुराने राज ड्यूक का महल

मिलान

मिलान व हवा अड्डे में अपने पूर्व निर्दिष्ट हाट में पहुँचा। जहर का नक़्का परिम स बहुत-कुछ मिनता-जुता है परन्तु परिम की भव्यता और सजावता तो उसकी अपनी है। इसमें मध्य भाग का क्षेत्र बनाकर परिम का तरह का मडकें एक दूसरे के समानांतर चला गया हैं जिनका मारी मडकें आपस में जाना हैं। प्रायः सभी बंग मडका पर छायादार बना की बतारें बगल में लगी हुई हैं।

मध्य भाग का एनिहामिक मिलान कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। यहाँ अतिवाण प्राचीन इमारत और भग्नावशेष हैं। समय के अभाव ने मुझे उन स्रष्टृहृग के वैभव को मरमगी निगाह से ही स्मरण का मौका दिया। फिर भी उनका दृश्य ममय मुझे बार-बार यही लगा कि इतिहास ने हमारे देश की स्रष्टृ यज्ञ भी कई बार करवटें बतानी हैं। जैसे भारत पर एक दृग, तुक पठान और मुगल के आक्रमण गंगा-यमुना की शस्य श्यामता भूमि के कारण हान रह है जो तरह डटनी के लाम्बाओं के हरे भरे मगलाने ने अपने धन-वभव के कारण यूरोप के आक्रमणकारियों का सग्रा आकर्षित किया है। जिनकी तरह, मुकील भाला और प्रचण्ड तनवारा की टक्करें स्मरण के अनगिनत अवसर मिलान का भी प्राप्त हुए हैं।

मिलान उत्तरी इटली का एक प्रमुख धार्मिक केंद्र रहा है। गहर के मध्य भाग में स्थित प्राचीन गिरजा मयामिया के मठ और मकरी गनिया श्रिया पहन की घटनाओं पर प्रकाश डालता है। गहर के इस भाग में वाला बरगल विनकुल बदनामा मिनता है। कुछ दूर के विग उनमें से जाना पड़ता है। तब स्थान तक नहीं आता कि हम कामवा मनी के किन्ही आधुनिक गहर में है।

वास्तु-कला और विगिण मता के कारण प्रत्येक गिरजा अपना पृथक् महत्त्व रखता है। मुझे मन्त अम्प्राजियो का गिरजा तथा ड्यूमा क्यटल वड भय एव आकर्षक लगे। विगन महायुद्ध की विभाषिका के फलस्वरूप मन्त अम्प्राजियो के गिरजे का बग्रा धनि पड़ोची है। मन्त १९४३ की बमबारी से हमारे कई अग ध्वस्त हो गये थे। इस गिरजा का धार्मिक तथा एनिहामिक मन्त्व भा है। इसका निर्माण चाची गताली में प्रारंभ हुआ था फिर बारहवा गताली में इसका पुनर्निर्माण हुआ और कुछ नये अग जोर गये थे।

इसकी बनी पर अनुर नरगा का राममुट पहनाया गया है। भित्ति चित्र प्राचीन है। मन सन अम्प्राजिया क विविध चित्र रख, जा नया गत-ग क भासपाम क है। इनम उन कान रे रहन-सहन, पाशाक और आनार विचार का सुस्पष्ट परिचय मिलता है।

ड्यूमा कैथड्रन की गणना समार क मुविंगल गिरजा म है। जनश्रुति है कि इसका निर्माण म लगभग ५०० वर्ष पुराने थे। विगत मन्गुद्ध की बमबारी म इस भी बहुत क्षतिग्रस्त किया था। गनीमत है कि यह मंगुण ध्वस्त होने म बच गया वरना आनवाली पीढ़ियाँ निमदह विन्व की एक मर्वी-तृष्ट कना कृति स वचित रह जाती। मने सुप्रसिद्ध चित्रकार ल्योनार्डो का ध्युतम कृति अन्निम भोज (नास्ट गपर) यहा देखी। सबमुच ही चित्र अन्तिम है।

चित्र म महात्मा ईसा अपने शिष्या क साथ अन्तिम भोज पर बैठ है। उर दूसरे हा त्ति मूली दी जानवाली थी। भाज म वह व्यक्ति भी गानिन है जिमन महामा ईसा क साथ विश्वासघात किया था। ल्योनार्डो की कृतिवा ने प्रत्येक व्यक्ति क मनाभावा की बडी सूक्ष्म और सफन अभिव्यजना की है। महात्मा ईसा क चहरे पर शान्ति दया क्षमा और मात्स्विबता क भाव स्पष्ट परिलभित हात है। भक्ता की आक्षा म श्रद्धा भक्ति और विश्वास है।

ल्योनार्डो क निवा विश्व क सभी बड बड चित्रकारान अन्तिम भाज कान की वाशिना की पर वह मूरत वह सारत किमा स न बना किमी स न उतरी। इस चित्र म महात्मा ईसा को अन्तिम उपदेश देत हुए देखकर लगा कि करणा की मूर्ति स्वय साकार हाकर हमार सामने मौजूद है। बरबस हृदय म यह भावना उठी कि करणा ही तो सायात ब्रह्म है।

गोतम और ईसा करणा क सायात रूप बनकर ही ता मानव स महामानव ही नहा भगवान क परम पद तक पडुव सन। मन परिस क दूध म ल्योनार्डो का मोना लिसा भी देखा और यही पर अन्तिम भोज भी देख लिया। न जान क्या कया पारखी 'मोना लिसा' को प्रथम और 'अन्निम भोज' का द्वितीय स्थान प्ते है यह मरी समझ म आज तक नहा आया।

अप्य नशनीय स्वाना म स्काला थियटर आव आफ पाम और रायन विला प्रमुख है। स्वाला अपन परिमार्जित एक कनापूण संगीत नत्य आर नाटका क कारण कवल इटली म हा नहा सारे विन्व म अनुकरणाय माना जाता है। कई अजायबघर भी हैं जहाँ इतिहास, कला समाज शास्त्र और धार्मिक मन्त्र क अध्ययन की यथेष्ट सामया सगृहीत है।

इटली के शायद शहरों और मिनान में एक उल्लेखनीय अंतर यह है कि यहाँ के स्थानीय लोग अधिक परिश्रमी और व्यवहार कुशल हैं। अक्षिणी इटली में अपेक्षाकृत गरम जलवायु का कारण लगातार परिश्रमशीलता कम दखन में आइ। मिनान इन्हीं का आध्यात्मिक और व्यापारिक केंद्र भी है। शहर में मने शेषर बाजार भी अच्छा। व्यापार बड़ जारा में हाथ फटकारत हुए भाव ताव में व्यस्त हैं। मानचित्र बता कि अकत कलकत्ता और बम्बई में ही यह रोग नहीं, यहाँ ता मार विन्द में प्राप्त है। एक गाँव-मठान मञ्जन मुस्कराकर अभिवादन करते हुए वाले क्या मैं आपकी कुछ सेवा कर सकता हूँ ? मैंने बताया कि मैं यहाँ केवल दवाक मान हूँ मौन करना नहीं आया। वे हमकर वात सियार मनुष्य और पत्ते का सम्बन्ध मत्र अशा में एक-सा है कवल नाम का भेद है।'

हम जाना हैं मने लगे।

वेनिस

वेनिस मिलान से करीब ७० मील पूव की ओर एडियाटिक सागर के उत्तरी छोर पर बसा है। वास्तव में यह शहर कई छोटे छोटे द्वीपों का पुंज है। वेनिस की सुन्दरता के बारे में बहुत लिखा है म सुनता आ रहा था आज प्रत्यक्ष देखकर जाना कि इसके लिए जो भी कहा गया है उसमें कुछ भी अत्युक्ति नहीं।

इसकी स्थिति सामुद्रिक व्यापार के लिए अत्यधिक उपयुक्त है। आधुनिक युग में यूरोप के बाजार पर वर्चस्व का जा नियंत्रण है वह मौभाग्य प्राचीन काल में वेनिस को प्राप्त था। स्वयं भाग बनने पर इसका महत्त्व धीरे धीरे घटता गया। जो भी हो, यह अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण वाणिज्य व्यापार के क्षेत्र में प्रारंभ से ही अग्रणी रहा है। इन्हीं कारणों से यह निरंतर समृद्ध होता गया। यहाँ के निवासी सुदूर अतीत में प्राच्य और प्रताप्य के संपर्क में बराबर रहते आ रहे हैं फलतः कला काल पर भी इटली के अन्य भागों में भिन्न एक स्पष्ट छाप है। वन-बूटे कटाई मिलार्ड और कटाई-तराशी का इमरा अपना निराना रंग है जो मंत्र में आकषक रहा है। आज भी वेनिस की वनी बाँच की वस्तुएँ अपनी नक्कली और तराशी के कारण दुनिया में अद्वितीय हैं। मजाबट के लिए यहाँ के भाट फानूम विश्व के सभी देशों में

बड नाजप्रिय है। यह मामान यर्ग नागा नागा का राजी का नाज बन गया है।

बैम इटली व सभा देशा म मान नाव है पन् बनिम के बाजाग के त्रय विप्रय वा दृश्य अनुपम है। वहाँ या भी चीजें महगा है, फिर नपान चाजा वा ता कहना हा क्या ? यहाँ विदशा स आन बाल यात्रिया का फमान वाता की कमी नहा है। मुभ भी एव एमा मोका पडा। चाय का एक सट खराणा चाहता था। मन मारका व विश्व प्रसिद्ध बाजार म गया। एक दूकान पर पटुचा। दाम घनाप गताप। मुह फेरकर लौटन गगा, ता नाम तात चौथार् जहाँ दूकान व बाहर पर रखा कि दाम आधा। इम चमत्कार स पुरान समय की जयपुर की दूकानें यात्र आ गयी। मैन जिम दूकान म सट खराणा उमन ता कइ गुना दाम हाव लिया वा। मैन भा साच ममभकर अपना दाम बताया। पर बाहर रखा पर मिथोर बुळ पाल नही। मुभ बुड आश्चय तो हुआ पर इमम अधिक आश्चय तत्र हुआ जब दूकान छोडकर चार काम आगे बन् गया। व दूकान स उतर आय और अहमान उताकर कहन लग आप विन्गी ह वरना क्या बहू आपन ता कौडिया का मान भाद बताया है। फिर आगमान की आर अपनी गोद मटीन आख नचात हुए क्या कहू मिथार बनिम की चाज विन्गी न ल जाय यह मुभ गवारा नहा। चनिय न जाइये।' आखिर इत्याखियन ११ ००० लीरा (भारतीय ३३० रुपये) दकर वह सट खराणा ही लिया। आन भी जब विगिष्ट अनियिया को उममें चाय पान कराता हू ता व उमकी नक्काशा आर सुनहर काम की मराहना विप्य जिना नहा रहत।

बनिम शहर की बनावट मित्रनुन निराला ह। छाटे-छाट द्वीपा पर बसा हनि व वारण आज भा यातायात का प्रमुख साधन नाव आर माटर वाट है। यद्यपि पुला द्वारा द्वीप बहा-बन्ग पर जुड हुए है जिन पर माटरें आर बसें भा दोडता है फिर भा प्रयात माग नहरा व हा है। वास्तुगिन्य की दृष्टि स इन्हा व अय गहरा म यहाँ विशय अतर नहा। एक बात अत्य है कि यहाँ गिरजा व अरावा बहून स एम पुरान भय भवन भी है तिह मध्ययुग म रईमा या मामन्ता न बनवाया था पर आज व मरम्मत व अनाय म जीण दारा पड है।

बनिम में गिनमा है थियटर आर म्यूजियम तथा आंपरा भा। आक्पण के मभी प्राचान आर आधुनिक साधन उपनय है। पर इतना सब होने नग भी

वहा का विशेष आकर्षण है—गोदोला । हसिना के समान मुन्दर मजीली इन नौकाओं का बेनिम की नहरो के गान्त जन म मस्ती के माथ विचरते देखकर मम्माहित हो जाना स्वाभाविक है । 'गोदोला में सजावट के माथ आराम का भी पूरा ध्यान रखा जाता है । इनमें माफ और नरम विस्तर गीशे जन् शृंगार टविन आइने और कामदार परदे लगे हुए हैं । विनाम के इन सारे मायना का आकर्षण सजावट और मफाई के कारण और भी बढ़ जाता है ।

वनारम के बजर और कम्भीर के शिकार गौन्दोला की टक्कर में नहा ठहर पाते क्याकि वे वचारे उस मुख और विलास के माधन नहा जुटा पाते । यही कारण है कि आज माटर बाटा के युग में भी गौदोला मस्ती और शान में भूमता है ।

गौन्दोला स्वयं में एक आकर्षण है पर गान्धाना के प्रति आकर्षण का कारण है उसका एकाकी मल्लाह उनका स्वस्थ सुगठित शरीर और मस्ताभंग प्रेम-मगात । यही कारण है कि ममार के मुद्ध अचना में आकर विनामप्रिय स्त्रिया गौन्दोला में हपता गुजार देती है और गौन्दोल उनके लिए शारीरिक सुखापभाग के प्रतीक बन गये हैं ।

नन्हे के किनारे प्रठा इन्हा वाता पर विचार कर रहा था । रात बनन लगा हान्त की आर चय पण । कमर में पट्टेबन्ध खिडकिया खानी । मन का थाडी गान्ति मिनी । इसी उधेड-बुन में नाच आ गया ।

प्रात विलम्ब से उठा । दखा बनिम धूप में नहा रहा था । आज बनिम में विनाई लनी थी । मोचा कि यहा का विश्व विथुन समुद्र-नट विन्ने अवश्य दख लेना चाहिए । प्राण बैनाय (बडा नहर) से हाता हुआ समुद्र-नट पर परेचा ।

समुद्र का नाय जहरासि पर हल्की धूप लहरा के साथ नाच रहा थी । समुद्र तट पर रेत की अच्छी खासी चौडी पट्टी है । रेत में दृष्टकर किनारे-किनारे एक कतार में होटना की उंची मफा इमारतें अत्यधिक सुरचिपूण पृष्ठभूमि उपस्थित करता हैं । लोग धूप के चम नगाय रेत पर रग बिरगी छतगिया के नीचे विश्राम कर रहे थे । अधिकांश नग्नप्राय थे । कुछ दूर दृष्टकर बठ गया । रेखा, हजारों की सख्या में गुबक युवतिया समुद्र में कन्दान करने में मस्त हैं । निमकोष भाव से छत्र-छाड, हँसी-मजाक चल रही है । न उह आम-गाम के लोगो का परवाह है न हमारा यहा की तरह आमगाम के

लाग ही उन्हें देखने का उत्सुक है या घूर रहे हैं। पाम ही अधनग्न युवक युवतियाँ घालिगन-पाग म आबद्ध हैं। उन्हें इस रूप में देखकर मुझ विशय आश्चय नहीं हुआ, क्योंकि इससे भी कहा अधिक परिस व नाइट-बलबा म त्स चुवा था। साचने लगा—क्या यूरोप इसी तरह अपनी भावी पीढ़िया का निर्विकार हान की शिक्षा दे रहा है, अथवा भौतिकवाद का आर आकृष्ट करता हुआ कह रहा है कि—

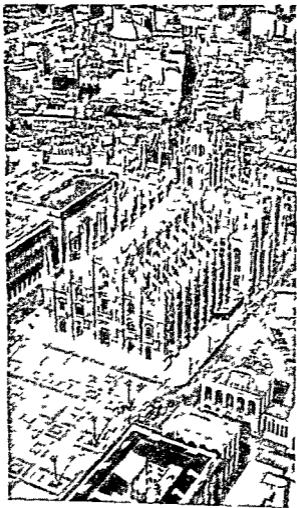
परिते हथ में पूछेंग पाकवाजा स—

गुनाह क्या न किए क्या खुदा गफूर न था ?

मन में एक प्रश्न उठा क्या पाश्चात्य सभ्यता गिरजा और गौतमी के बीच अनिश्चित-भी नहीं भटक रही है ?

आज ही तो मुझे गिरजा की महानगरी रोम व लिए खाना होना था।





मिलान का ड्यूमा कथेड्रल

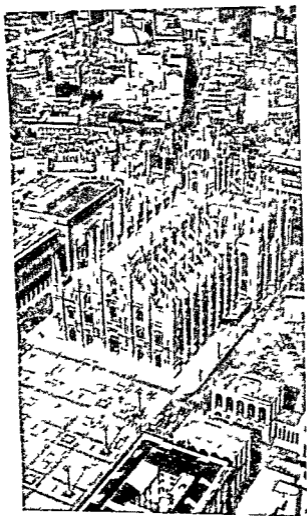
राग ही उन् श्वेत का उजुत है या पूर रह है । पाग ही अधनभ गुक्त
 युवनिया अनिगत-याग में धारड है । उह इम रूप में लगर मुक्त विरग
 धारनय नग हूमा, क्याकि इमन भी कहा धरित परिम क नादर-ननबा म दम
 चुना था । मानन लगा—कना यूराग इगी तरह धरना भावा पीडिया का निरिगत
 हान की विष्णा न रग है धरना भोनिहारा का धार धारण करता हूमा कन
 रग है कि—

वर्गिन हृथ म पूर्ण पावबात्रा म—

गुनाह कना न विग कना मग मरूर न था

मन में लख प्रान उग कना पाषाण्य मभ्यता विरगा धीर गो पीता
 क बाव धनिधिवगी नग भयक रग है ?

धार ही ता मभ विरगा की मशामरी रोम क विग रगना गेता था ।



मिलान का ड्यूमा कैथेड्रल



सिमाय में विद्युत् र ंसङ्गुञ्जय सागरत प्रमुखा गङ्गा

पाम्पियाई की भस्म-ममाधि पर

मुबह आठ बज चुक थे। वादना क हल्क फुल टुकड ग्रामपान म धीर धीरे तर रहे थे। ममुद्र का नहरिया म भठमनियों करती हुई हवा पाम स कुट्ट फुमफुमावर चनी जाती था। जाला बोत चुका वा फिर भा एक मिहरन-मी हा उठनी थी।

हमारी बम नेपल्स म पाम्पियाई तक वा रास्ता तय कर रही थी। बम काफी आरामन्ह था। सामन डाइवर की बगन म गाइड हाथ म एक छोटा ना माइनाफान निय बीच-बीच म हम ग्रामपान क म्याना की विशेषताएँ बताता जा रहा था।

नेपल्स म पाम्पियाई का फामना कवन १८ मान है। पीच की माफ मडक पर बम दौल रही थी। दाना आर के खेत अगूर सब आर दूमरी विम्म के फना क बाग बड ही माहक नग रह थे। बीच-बाच म किमाना क माफ गुयरे मकान घानावरण की गाभा और भी आकषक बना रहे थे। इहें देखकर भग घ्यान अनायाम ही अपने देहाना क घरा की ओर चला गया। मुझे तगा कि विदनी जब हमार यहाँ दाना क घरा का दखते हागे तो साचते हागे कि हम भारतीयो का रहने वा ढग नहा आता स्वच्छता और सौणव क प्रति हमारा आकषण बम है। इन्तो की आर्थिक अवस्था अच्छी नहा है। बहा क रहन-महन का स्तर भी अय यूरापीय दशा म गिरा हुआ है। फिर भी, यहाँ क किमाना के घरा म गराबा भल ही लिखा दे, पर उनम फूहडपन हरगिज नहा।

दाहिना आर नजर उठाई। ममुद्र गजन कर रहा था। कुट्ट दूर सामने दखा। विमुवियम खटा था। एक्टक देखता रहा उम जवानामुखी वा। हल्क वादला की चान्तर म उमका सिर ढका हुआ था आर शराग कुहासे क भीन आवरण म। तगा कि वह प्रगाण निद्रा में मगन है।

गाइल की आवाज आई य काल कान पत्थर जो आप नाग देख रहे है विमुवियम क लावा स बन हैं। राग रग के तम मुदरतम नगर क साथ विमुवियम ने आग की फाम खेती थी और कुट्ट ही तर म बह भस्म-ममाधि म तीन हा गया था।

सामन विमुचियम था। उमन पैरा पर पाम्पियाई। पाम्पियाई नन्हा, उमन तण्ठर। रात की ढरी।

इस नगरी का भा एक भ्रमना जमाना था। विन्गो ही गान्धिया का मजो हुई अपनी सस्त्रति और सम्यता का गरिमा म गर्बोन्नता पाम्पियाई सुन्तरता में अद्रिनोय थो। नगरवासी एवय-भाम्पन्न थ। इसकी रीति-नीति और मस्कार क अनुसरण देश शैशान्तर म होने थे। विन्गु कराल बाल की गति इतना न्यारी है। उमके एक हा भ्रूकुचन पर विमुचियम ने ठकार भरी और सन्धिया की सम्यता और सस्त्रति रात की ढरा क नीच दन गई। जिन्गो की मृस्वान पर मृत्यु की यवनिवा गिर पनी। मिट गया पाम्पियाई का अस्तित्व। अब रहे ये य तण्ठर।

एक भट्टवा लगा। हमारा वध रक गया थी। सभी यानी वध स उतर पड। पाम्पियाई म पवश किया। गाइड परिचय दन लगा—“इग जनपद का उत्पत्ति के बार म विद्वान आज भा एकमत नहा हा पाय है कि यह सवप्रथम वध बसा था, विन्गु व्तना सभी मानते है कि इग मसीह क जम स कइ सौ वप पूव इस नगरी का यग और एशवय विश्व विधुत हा चुका था।” उमन मुस्कराकर कहा— मठाशया, किसी सुन्दरी क लिए तलवाग का खटवना कोई आशचय नहीं। कई साम्राज्या न पाम्पियाई को अपनान क लिए आपस म अपनी अपना शक्ति आजमायी। खून का नदिया बह गया। अन्त म ईमवा पूव प्रथम गान्धीनी म इस पर रोम का अधिकार हुआ। इनक बाद स इस जनपद क एवय का स्वस्थ विकास निरन्तर जाता हा गया। राम के धनिक सामन्त व्यापारी तथा नागरिका क आवास यहाँ सभी स बनन शुरू हुए। समुद्र क सारिध्य न इस वाणिज्य में प्रतिष्ठा दी और कृपि न इस उन्नतिशील बनाया। क्रमश इसकी जनसख्या ब ती गई।

पाम्पियाई का इतिहास बताता है कि सन ५३ ई० म एक भापण भू-कम्प ने नगरी का दुरी तरह भकभारा था। काफी नुकसान पत्रचाया। वर्षों तक पुनर्निर्माण का काय नागरिका न साहम और उत्साह क साथ चलाया। विन्गु उम कहीं पूरा पडना था ?

सन ७९ ई० की वाप है। रात हा चुका था। दिन भर क परिश्रम क बाद योग धरो में निश्चिन्त थ। कुछ आमत प्रमात् म व्यस्त थ। विमुचियम अपन चरणा क पाम बठी सुन्तरा पाम्पियाई पर एक विकट अट्टहास कर उठा। फूट निकन धुल क बादन रात क गुबार और दहकते गाना क फौज्वारे जनत हुए

लावा की सहस्र धाराएँ फूट पड़ीं। काल की इन लपलपाती जीभों व बाव पाम्पियार्ड घिर गयी। रागा को भागने का मौका तब नहा मिला। जहरील धुएँ और गल्ल का आधी तथा अगारा का बपा। जा जहाँ था, वही रह गया। समुद्र व रास्ते भी बच निकलना अशक्य था। समुद्र में भी लावा अनन्त धाराओं में बह रहा था। भीला तब समुद्र का पानी खीन उठा। 'बस इतना व्यापक हुआ कि फिर इस मिर उठाने का मौका नहा मिला। पुनर्निर्माण अशक्य था। करता कान ? किममें माहस था कि विमुक्ति व पराक्रम का चुनौती दे ?

प्रलय-नाण्ड शान्त हान पर, बचकर भागे हुए कुट्ट लागा म जा बच वे अपनी अपनी धन-सम्पत्ति व उद्धार व लिए लौट किन्तु मफल न हा सक। अब तो सब कुछ राख पत्यर और लावा म नीच ळवा पडा था। लावा जमकर चट्टान-भा बन गया था। कही कहा ता ३० फुट माटी परत जम गयी था। खोदकर कुछ निकालना व्यथ था। प्रकृति व सामन मनुष्य को पराजय स्वाकार करनी पग।

मध्ययुग म पाम्पियार्ड की और किमी का विशद ध्यान रहा गया। इसकी कहानी विस्मृति के गभ में पडी रहा। १६वा शताब्दी व अन्तिम धरण मे रागा का ध्यान इसकी तरफ गया। उद्धार का काय प्रारम्भ किया गया पर प्रगति बहुत ले मुस्त और सीमित रही। १९वा शताब्दी व प्रारभ म फ्रांसीसा सरकार न बं दुहू काय अपन हाथा म लिया और तत्र स लगानार इस ळिगा म प्रगति हाती रहा। धीरे धीरे इतना सरकार का भी ध्यान पाम्पियार्ड की और गया और उमन १८६१ में गार्ड का काम अपन हाथ म ल लिया।

'गाइड के माथ घूमता हुआ सब कुछ ळव रहा था। दां हजार वष पूव यग बडा जनपद था। इसकी निर्माण-व्यवस्था, बानून-काय और यहा क रहन मन्न के ढग का लेखकर एसा अनुमान हाता है कि आधुनिक तरह व शहर का सूत्र यहा भी हमार यहाँ क भाहन-जादडा और हल्पा का तरह ही रहा हागा। नगरी के चारा और दीवार थी। उन दिना स्वर्क्षा व लिए एसी व्यवस्था का रचना आवश्यक था। रास्ते अच्छे बन थे। १२ १८ फुट स अधिक चाँ तो नहा व मगर विशेषता यह थी कि इन पर फुटपाय बन थे। सडक नगरी के महत्त्वपूर्ण अचना म अप राकृत प्रगस्त बनायी गयी था तमा इन पर चोटा चोटी पन्डिया भा थी। ये पन्डिया अथवा फुटपाय प्राय सभी सडका पर उच्च रखे गय थे। इसमें पाण्डियों क आन-जान म निवृत्त हान की सम्भावना नहा थी। मवान और रास्ते नगरी का जन निस्मारण-मुक्ति का लक्ष्य रखन हुए बनाय गय थे। कई

स्वातंत्र्यवाद के ध्वजावलीय स्पष्ट बयान है कि एक मास ही समय और २० लाख का प्रयास था।

एक स्थान वरुण कुन्द और जैना गया। अनुमानित यथा पार्लियामेंट का ध्वजावलीय-रूप रहा होगा क्योंकि इसी के साथ ही तारी का विचार है। कल्याणन में बाजार तक और गायतय भी था। इस स्थान पर गया बनना है कि पार्लियामेंट का पार्लियामेंट-स्थान विचार उपनिवारण रहा होगा। नागरिकों के मनोरंजन की भी व्यवस्था थी। नाट्य-प्रदर्शन के अलावा का गाने गाने का कार्यक्रम हुआ है। उनमें १००० तक व्यक्तियों के बंश का गाना हुआ था। इन नाट्य-प्रदर्शनों पर सूत्रों का अनुभव का प्रभाव था।

इसका भी सरकार ने पार्लियामेंट में एक म्यूजियम बना दिया है। म्यूजियम द्वारा विन्नु धारा है। यहाँ मरुतान तमूना में पार्लियामेंट का बनना स्पष्ट हो जाता है। कृति व्यवहार में धान धाना विभिन्न वस्तुओं का अलग-अलग नागरिकों के जीवन-कार्य का गाने अनुमान हो जाता है। कल्याणन के बीच गाने के द्वारा कृषि तथा इसी तरह के नाना प्रकार के वस्तु-भूषण स्थितियों के अंगुलीय और कृति का परिचय देना है। तन्त्र-कार्य के बनना के साथ सुरापात्र भी हो जा सकता है कि जीवन में विनाश का प्रयोग नहीं तक था। विभिन्न प्रकार की प्रतिमाओं भी वही स्थान में छाया। ये सभी धर्मिकों को साथ ही काम (शक्ति) का बना था। यहाँ रम्य सुरा-नीय तराजू और अन्वय वस्तुओं में उनका सामाजिक जीवन का भी परिचय मिला।

म्यूजियम के एक भाग में प्लास्टर किए गए शरीर दस्तान में छाया। एक स्त्री का शरीर देखा। एक हाथ की काटना में ध्वजावलीय मूर्ति छिपाव है और दूसरे हाथ का मुठ्ठा उगता ध्वजावलीय बनानी है। ज्ञानामुखा में निरन्तर विपरीत धुएँ में बचाव का दम घुटा होगा। एक कुत्ते का शरीर तथा विषाक्त प्रतिनिधियों में उसका शरीर विन्नुन धनुष की तरह एँठ गया था।

म्यूजियम में जो भी मद्रह है वह वास्तव में उद्धार में प्राप्त वस्तुओं का एक सामान्य अंगमात्र है। बहुत-सी वस्तुएँ सुरापात्र के अर्थ में लगी गयी हैं जिनमें सबसे अधिक भाग के रूप में म्यूजियम में गणना है। अमरिका के 'सूत्रक सप्रधान' में भी पार्लियामेंट के कुछ ध्वजावलीय त्रि-आय गये हैं।

ज्वानामुखी विन्नुवियम पर चढ़ने के लिए एक मंडक बना ले गयी है। मोटर डमी रास्त पर विन्नुवियम के मुख में कुछ भी फुट दूर तक यात्रिया का ने

जाता है। पदल ता काद भी मुटू तर पदच जाय। पर गामत किम आयी है और आप्त माल लना किम पमन्द हागा ?

यानिया की सुत्रिया क तिए यहा एक पास्ट आफिम ह। एक अछा सा रस्तरां भा है और छाती छाती दुकानें भी हैं। इन दुकाना म इटली क विभिन्न भागा म बनी शौक की चाजें मिलनी है।

शाम हा चुका थी। धूमते धूमते काफी थक गया था। वम लौटन म अभी दर था। म रेस्तरां म बठकर काफी पान रगा। मिडकी क ग्राहर विमुकियम दिखान पड रहा था। वह अब भी हल्का धुआ उगत रहा था। मैं माचन लगा कि इसना धुआ बताता है कि यह ता न सुप्त ह और न शान्त हा। पर अब यह किम पाम्पियाद का ग्रम नन क तिए भीतर हा भीतर उवन रहा है ? हुक् म धुए न मरी दष्टि का धुपता कर दिया और जस वान म काट बह गया—‘यह नफरत भरी निगाहें मुझ पर है या प्रकृति पर ? खुद पर क्या नहीं ? हिराशिमा और नागामासा का किमन प्रगा—मैंन, फ्युजियामा* न या तुमन ।’

म चौक उठा। देखा गरम काफी क धुए न चदमा धुपता कर दिया है। उतारकर धम का साफ किया और जल्दी-जल्दी काफी पीन की वागिन करन रगा।

* फ्युजियामा—जापान का एक उच्चतमपर्वत।

रोम—यूरोप की प्राचीन पुरी में

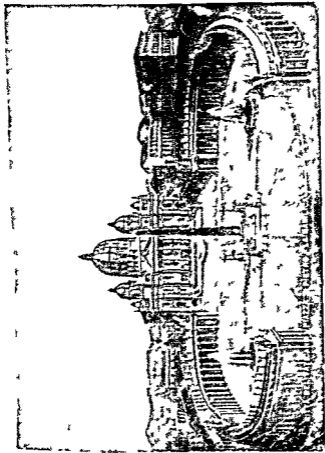
यदिग म राम क तिा दून म बेग । उतरा इन्हा की याग मिनान धोर
धनिस रेगारर गमासु कर गता था अरु राम एव नाल्म एम कर र्निाणा भाग
की याग पूरा करता सात्ता था । मुन्ग्या की गता पत्राग्य धोर रिनाप्ता की
दगने का म म हा ए गर्द । गमम बूत हा कम था ।

रोम पहुँचन की गुणा म गन राम पुनरिन हा रहा था । दून धाना रफार
न भाग रग थी । न्वाएन धार म्बिउररवेण का दूता म बान भूम पुन था,
इमरिण इन्हा का दून याग उता था नहा गता ।

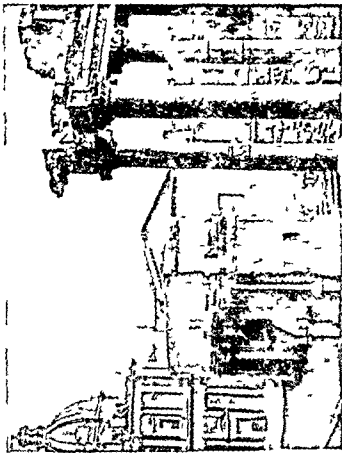
उचन म बन्ग गु, पडा था— गम एक त्रि म नहा बना । 'विान
की सारा सन्के राम पहुँचता है द्रत्यानि । आज प्रीः मन्निण उन्हा पर विचार
कर रहा था । नि मन् राम का निमाण एव त्रि में रहा हुआ हागा । सन्धिया
गता हागा । नई नई विचार धारासा न उन प्रभावित किया हागा । धम धोर
मस्वृति का अद्ग रहा है राम धार आज ना है । र्गार्न धम क वैधानिक मठ
का ता यह तीथ है । सारा पाचात्य चगन् ग इगार्न है । इमीनिण भडा भक्ति
धोर प्रम न उट रोम की धार आट्टण किया । बाधाएँ धोर विपत्तियो पार कर
धम ताथस्थली क एगन मात्र स धाना धोसा का वृत्त कर धमन को धोर
धमन जीवन का ध आज भी धय मानत है । गाचा लगा बभवाली इतिहास
के राम का रूप आज जाने बीया हागा । गायन हमारी दिल्ली की तरह या
कागी की तरह मनाता की बनावट में भिन्नता भन ही हो वातावरण एव
सा ही रहेगा ।

रोम पहुँचा । द्विःकुन आधुनिक वातावरण । स्टेगन पर अय यूरोपीय देशो
की अपेक्षा कुछ गारगुल अधिक था । वहत कुछ हमारे देश का सा । सामान
उठाकर हाटन की धोर जाते हुए सोचने गता कि ससार के प्राचानतम समक
जाने जाने इस नगर म तो तन्मन पेरिस स्टावहोम ब्रुसेल्स नजर आते हैं पर
प्राचीन राम की भाँकी नहा मिलती । न पोगाक में धोर न रोगो के ढग में ।
मरा आक्शण आधुनिक रोम से अधिक प्राचीन रोम की धोर था । अत मीने
पहले इसे ही दख लेना निश्चित किया ।

रोम का प्रथम बस्ती ईसा पूव आठवी सदी म बसी थी । आज तक यह



सेंट पीटर्स का विश्वविद्यालय मिरजा और प्राण



एक प्राचीन रामन मन्दिर का सुन्दर अवगम

स्थिर नहीं हो पाया है कि इस अमरपुरी के आदिवासी कौन थे और वहाँ से आकर बसे थे। बहुत लंबा की धारणा है कि तब क युद्ध में बचकर भाग हुए कुछ लोग एशिया माइनर में आकर पहल-महल यहाँ बस गए थे।

राम के खण्डहर का देखकर ध्यान बरबन मुद्गर अनीत की ओर चला जाता है। राजवंश एवं जनतन्त्र के उत्थान पतन, रामन प्रभुत्व का उदय और अस्तमाना सभी एक साथ मस्तिष्क में घूम जाते हैं। राम में इन ऐतिहासिक खण्डहर और भवन हैं कि प्रत्येक का बखाना संभव नहीं। यहाँ सदियाँ तक आक्रमणकारियों के प्रहार होते रहे। नय-नय प्रामाद बने, पिछले कुछ ताड़ गए, कुछ स्वयं ही दखल रख कर अभाव में पीए गए।

इन्हीं खण्डहरों में राम के प्रतिष्ठित कारीगरीयम (एफा थियटर) का दस्ता। चार तल्ले के बीच विंगल बत्ताकार भवन के चारों ओर दशका के बठन का स्थान है। एक ओर वह स्थान भी है जहाँ मन्नाट स्वयं बैठकर 'प्रदग्गन' करने के सामने अपने पत्नानुमार बैठते थे। ठीक मध्य भाग में एक बत्ताकार बड़ा गा आंगन है। यहाँ वे प्रदग्गन हुआ करते थे। प्रदग्गन क्या थे नक्षत्रता का नमनतम रूप था। हमारे देश में तो गायत्री ही इस प्रकार के दृश्या का विवरण मिलता है। एम्फाथियटर के विस्तृत आगन में मनुष्य और पशु में द्वन्द्व कराया जाता था—कभी जगती सुअर तो कभी भूखे सिंह के सामने मनुष्य छोड़ दिया जाता था। दृश्य कितना बीभत्स हो उठता होगा! याद आया कि यहाँ तो क्रूर मन्नाट नारा न ईसादया का एक जगह दकटा कर उन पर भूखे सिंह छोड़ दिये थे। रामाच हा आया। आरक्षक हुआ कि क्या यही जूलियस सीजर के मुसम्बत की मस्जिद और मम्बना थी? क्या इसी रामन मस्जिद और मम्बना न पश्चिम का कानून का बाप कराया था? क्या यह वही रामन मस्जिद थी जो आज भी यूरोप ही नहीं बल्कि समग्र पाश्चात्य मम्बना की आधार पत्ता है? किस प्रकार एम्फाथियटर में बैठ पचास हजार लोग मनुष्य के चित्त उड़ते बंधास्त करते थे? पन्तु मनुष्य भी तो मूलतः पशु ही है—पश्चिम के महान जीवशास्त्री डार्विन के मतानुसार।

राम के खण्डहर और प्राचीन भवना का देखकर विंगल गताश्रिया के इतिहास का परतें एक-एक कर खाल में बट्टिनाई नहीं होता, क्योंकि उनमें अपने अपने समय की छाप अतिमिन्नता है। लोगों के रहन-सहन और रचित का परिचय मिलता जाता है। यह निरदेह इन्हीं और विशेषतः रामन मम्बना के लिए गीभाग्य की बात है कि सिदेनिया के आक्रमण तो उन पर हुए पर वहाँ के मास्जिदिक विज्ञान का हमारे देश का तरङ्ग मठियामट नहीं किया गया। यही नहीं,

राम का यह भा मीभाष्य रहा है कि प्राचीन भवना और जाणप्राय ऐतिहासिक स्वता का पुनर्निमाण भी समय-समय पर हाता रहा है। इस जिशा म बहा वं पोप (धर्म गुरु) विशेष रूप म उन्नतनीय और श्रद्धा पात्र है। १५वा शताब्दि स तो निरंतर समय-समय पर पापा की चप्पा यहा रही है कि रोम का गौरव बढ और सांस्कृतिक केंद्र कहवान का उसका अधिकार अनुपुष्प रह।

यही कारण है कि आज भी रोम म ऐतिहासिक श्रुतता की कटियाँ प्रक्षुष्प है। नपोनियन व साथ युद्ध व बाद इटली म प्रादेशिकता की भावना धीरे धीरे घटन लगा और एका की भावना बढन लगी। रोम का महत्त्व बढ और एक बार फिर रोम यूरोप का संस्कृति का नियंत्रण करने लगा। बाद म भी सम्राट विक्रम एम-युएन न इस सजान सवारन म कमर न रखी। यूरोप और सुदूर अमराका न लाग यहा व जीवन का ध्यान नन व निण ध्यान नय। आज का राम अपने उम गौरव का अभी तक सफ न उत्तराधिकारी व रूप मे सुरािन रख रहा है।

पिभाजा व स्पाना व मुहल्ले म टहनत हुए मीन ग्रीक अमरिवन प्रव जमन रुमा आदि विभिन्न देश व नाग देखे। विगत महामुद्ध व पहिल इटला क तानागाह बनिटो मुनानिनी न भी इसका खूब सँवारा था। चीड रास्त बाग बगीच नय डग व बढ-बड भवन और जिजनी की सुविधा व कारण राम यूरोप व अन्ध म अन्ध गहर का टकरा व बन गया। आज राम का आवाली बाम नाख स भी ऊपर है जब कि इमा गताब्दि व प्रारम्भ म वह सिफ चार नाख था। गहर की सजम बढ समस्या है यातायात की भाट ठाक बहा जा हमार यही बम्बड बलकत और निरी की है।

मध्या का समय था। मी काफ ब्रवा म बडा काफा पा रहा था। काफ अरा राम का एक प्रसिद्ध काफ है जहाँ तक बनावार पत्रकार और एग एगन हा जान है। मर पाम का टबिन पर एक इगानियन एक अगरेज और एक अमरिवन बठ हुए थ। व आपम म बातें कर रहे थ। इगानियन भा माफ अगरेज बान रहा था। कभी-कभी तोना हा मग धार रख नन थ। मरी दृष्टि इगानियन म मित्रा ता उमन मुस्कगहर अभिवादन किया और तुरन धार पूरा अगरेज प्रव इगानियन वीन-मा भाषा म बान करने पर आपका सुविधा हागा ? नायन धार भागताय ह।

मीन अगरेज म बढ आपका अनुमान मना है। मी भागताय है। हम चारा एग न टेबिन पर बँठ गय। अब मी बका बना और शेष ताना थाता। उन्नि भागन और भागताय मन्त्रि पर प्रन्ता की प्रन्ता नगा न। मीन ममनान का कागिन का कि मी व्यक्तगाया है—राजनीति गानिय और इतिहास का मग

अभ्ययन माधारण मा है । अनवत्ता अपन यहा मामात्रिक कार्यों मे भाग लता हूँ ।

जिम प्रकार कानी का भ्रमण सारनाथ के बिना और मथुरा का वदावन क बिना पूरा नहा हाता उमी प्रकार राम जाकर वटिकन न देखना राम न देखन क बराबर ही है । राम का मन्त्व बदन एतिहासिक ही नहा वन्कि उमक साथ ईसाई धम का गौरव भी जुटा हुआ है और उमका केंद्र-स्थान है— वटिकन पाप का प्रामाण ।

वटिकन राम क अन्नगत एक छाटा मा राय है । इमका अपनी मरकार और अपन डाक तार पुनिस और रडिया स्टान है । इम राज्य का सर्वोच्च शासक है धम गुरु पोप । पोप का अधिकार उमकी रक्षा का साम्राज्य इतना विस्तृत और असीम है कि वहा मूर्यास्त हाता हो नता । पाप अपन छोट स राज्य क बाहर कभी नहा आने-जाने । इतिहास म पहला बार वतमान पाप अभी, इसा वष ईसा के जन्म-स्थान यरुसलम की पुण्य-नगरी म गय थे । इममे पहल कभी काई पाप अपने 'राज्य म बाहर नही गया था । उनका मारा समय धम चिन्तन और अभ्ययन म ही व्यतीत होता है । विश्व म उनका प्रभाव एव आंतर कम नता है । ईसाई चाह कैथोलिक हा या प्रोटेस्टेण्ट, पाप को नाना ही आदर की नष्टि मे देखते है ।

ममार क मभी दशा क कथानिक इसाई पाप क वाक्य का वेत् वाक्य मानते ह और मभा राष्ट्र वटिकन राय की सुरक्षा का ध्यान रखते ह । विगत महायुद्ध क दौरान राम पर सक्ता बार बमबारा हुइ किन्तु बमबपका न मत्व इम वान का ध्यान रखा कि वटिकन क्षतिग्रस्त न हा जाय ।

वटिकन का निर्माण वास्तव म पाचवा गताब्दि क प्रारभ म हुआ था । विगत पन्ह सताब्दिया म ममार क बाने-बान म अद्धानुद्धाने अष्टतम वस्तुएँ यहाँ भेंट म जाकर अपन का धय माना । लागा न अपन जावन भर की कसाई पाप क चरणा म अर्पित कर ता । यही कारण है कि आज यहाँ जितनी बहुमूल्य सामग्री मुर्गीत रूप म संग्रहीत ह वीनी न तो ब्रिटिश म्युजियम म है और न वाणिगयन मा सूत्र म ही । विश्व की दुनब वस्तुए पुस्तक और चित्र यहा देखन का भित्ने है । विश्व क अष्टतम कलाकारा न वटिकन गिरजो और मठा का गजान म अपना प्रतिभा का कनाथ माना और इना म साग जीवन खपा लिया ।

इतना वैभव आदर और अमाम अधिकार विसी भी व्यक्ति का चित्त डावाँ डान कर सकने थ । किन्तु वतमान पाप का दखकरमानना पन्ता है कि सात्विकता

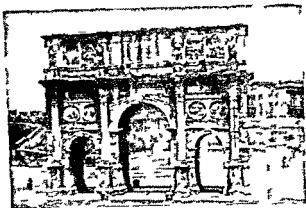
क भाग मानसिक विकार ठहर नहीं पाते । पिछली दो-तीन सन्धिया से तो पाप के चुनाव मे अत्यन्त मनकता और सावधानी बरती जाता है भल हा प्राचीन काल में कुछ पोषा का चरित्र सन्धि रहा हा ।

वटिकन को अच्छी तरह से देखन के लिए काफी समय चाहिए । मैं तो सरसरी निगाह से दीवारा पर अकित चित्र देख । ज्यादातर फुगम जिहाद के चित्र थ । इसक अलावा ईसाई धम से सम्बन्धित अय सुन्दर एव चित्ताकषक चित्र भी थे । म विद्व क सक्थ्रण्ट प्रनिभाशाला कनाकाग द्वाग बनाय गय हैं । कुछ ता इतन बहुमूल्य है कि प्रत्येक का मूल्य पचास लाख रुपय तक कूता गया है । यदि सज मिलाकर पोप क संग्रहालय का मूल्य कूता जाय ता अरबों तक पहुँचेगा । मन यहा पर मिन्टाइन क गिरज में विद्व के दो प्रसिद्ध कलाकार माइकल एजिलो और रेफिनल क माता और शिशु' एव बानक मीशु नाम के सर्वोत्तम चित्र देख ।

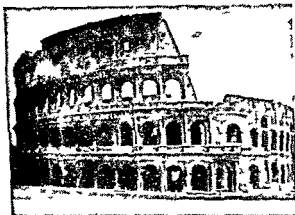
वटिकन म बहुत स गिरज और मठ हैं । मठा में ईसाई-साधु रहत हैं । वहाँ किगोर साधुग्रा की भी देखा जिह ईसाई धम तथा धार्मिक आचार-व्यवहार में पारंगत बना कर पूरा रूप म धार्य साधु बना दिया जाता है । इटली की पन्डिया म साधुग्रा क कुछ ऐसे सम्प्रदाय भी हैं जा अपन मठा म ही तपस्या करने-करते मारा जीवन व्यतीत कर देते हैं और कभी वहाँ से नीचे नटा उतरत ।

वटिकन में ही विद्व प्रसिद्ध मठ पीटम का गिरजा है । यह महात्मा ईसा क मुख्य शिष्य सन्त पीटर क स्मारक स्वरूप बनाया गया है । ईसाई मत वास्तव म सन्त पीटर का बना करणी है । फिलस्तीन क मरस्थल म महात्मा ईसा न बरगा और क्षमा का मत्र बर्बर लोग का मुनामा पर क म्नी पर चण लिय गये । उनकी मृत्यु क उपरान्त सन्त पीटर उनका मरण परिचय की और पहुँचान हुए राम पहुँच । रामन शामका क अत्याचार म पीडित जनता म इनक प्रम और गान्धि क सदन म आगा धर्म और जीवन क प्रति विश्वास का संचार हुआ ।

ईसा को मानन वाला की मख्या बाने गग । ईसा क जन्म का ६७ वय हां थु क थ । रामन साम्राज्य का गौरव मध्याह्न पर था । नीरो जैगा त्रिवकहान मघात गही पर था । उनम ईसादया की हजारों का मख्या में या हा पहाडा की चानी म पित्तया लिया या भाग में भुनवा लिया । सन्त पीटर भी जीने-जी जना लिय गय । ईसादया पर भूख मिह छाड गय । मय कुछ हुआ पर भानुरी शक्ति पर सन्त में देवच न विजय पाया । नीरो पापन हाकर मर गया । ईसाई धम



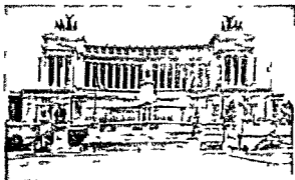
रोम में कोन्स्टान्टिनो का धुज



कालोसिआ, रोम



नया और पुराना रोम



रामना में श्रीं फिर रामना के माध्यम में उनके साम्राज्य के कोने-बाने में फैला । थोड़ा ही दिना में समस्त यूरोप तथा उत्तरी अफ्रीका ईसा की वाणी में दीक्षित हो गये । पूराप व प्रभुत्व के साथ साथ विश्व के कोने-कोने में ईसाई धर्म का प्रसार हो गया ।

संत पीटर का गिरजा विश्व की सबसे बड़ी इमारत तो है ही साथ ही बनापुण भी कम नहीं है । इसकी ऊंचाई के सामने दिल्ली की जामामस्जिद छोटी सी है । इसकी वास्तु-कला तो आश्चर्य-चकित कर ही देती है किन्तु निर्माण कौशल भी कम विस्मय में नहीं डालता । इसके अन्दर ६० हजार व्यक्ति बड़ी धामानी से प्रार्थना कर सकते हैं । अन्दर चारों ओर दीवारों और मेट्राबा पर धार्मिक चित्र बने हैं । इस गिरजा में अनगिनत स्मारक और समाधियाँ हैं । सबसे महत्वपूर्ण सेंट पीटर की वास्तु की विशाल मूर्ति है । सन्त पीटर एक कुर्सी पर बैठ हैं । शरीर बन्ध से ढका हुआ है । एक हाथ में क्रिस्टोस है और एक हाथ की तबला और मध्यमा मुद्रा विशेष द्वारा क्रिमी भाव का अभिव्यक्ति कर रही हैं । चहर पर धनी दानी है । सर व घुघराते बर्णा के पीछे बनाकार चक्र सा है जो सहज ही श्रद्धा और आदर की भावना जगाना है । सन्त पीटर का एक पैर कपड़ा में ढका हुआ है । और दूसरा बाहर की ओर बना सा है । भक्ता क स्पष्ट स चरण का यह अंश धिम गया है ।

दिन भर घूमते रहने व कारण काफी थक गया था । अतः जल्द ही अपने होल्ल लौट आया और विश्राम करने लगा । सिडकी से टाइवर नली दिखाई दे रही थी । उसी का एकटक खन लगा । बड़ी शान्ति मिली । मन में साचा एक साम्राज्य फैलाया था किन्तु ने, टूट गया । रोमन भा तलवार की नोक पर साम्राज्य पर साम्राज्य स्थापित करने गये, पर वे भी ठिक न सके । आश्चर्य है कि निहत्थे गौतम और ईसा का साम्राज्य कान व शाल में क्या नहीं गमाया ।

टाइवर से आती हुई हवा व एक झटके में पुमफुमाकर कान में कड़ा तलवार की नाक शरीर ही छेद सकती है पर क्षमा और प्रेम तो हृदय में धर बना लेते हैं । ' तुरन्त ही म्याज आया स्टेनिन, मुमोनिनी, स्टिटर और उनकी तुनना में हमारे अपने बापू का ।

निशा सूर्य के देश में

बहुत दिना स सुन रखा था कि हमारी धरती पर उत्तरी ध्रुव और अण्डिणी ध्रुव नामक एम स्थान भी है जहाँ ६ महीन का दिन और ६ महीन की रात हाती है। पिछनी बार स्वीडन गया तो मोचा कि उत्तर के ध्रुवाचनीय प्रदेशा व इतने निकट पहुच ही गया हू कया न इम अवसर का लाभ उठाकर निगा-सूय का भी दगन कर लू। इसी इगटे स नक्शे पर निगाट फेरी ता रखा कि उत्तरी ध्रुव का आइमलैण्ड स्कैण्डिनविया (नारव और स्वीडन) फिनलैण्ड साइबेरिया तथा अनास्का बत्ताकार घर हुए है। स्कैण्डिनविया यूरोप क उत्तर म एक प्रायगाप है जिमका आकार मुह खान हुए शेर की तरह है। उमम तो राज्य या रश हैं। उत्तर पश्चिम म नार्वे है और अण्डिणी-ध्रुव म स्वान्त।

स्कैण्डिनविया जान का कायक्रम मेरे यूरोप पयटन म था। अत मन इम प्राथमिकता दो। तय किया कि पहल स्वीडन की राजधाना स्टॉकहाम पहुचा जाय फिर वही उत्तर का और ध्रुवाचनीय प्रग्ण लैपलैण्ड म हात हुए नारविक क रास्त नारव म प्रवग कर उमकी राजधानी ओमना नौटा जाय कयाकि इन प्रकार स्वीडन और नारव दाना का उत्तर म दक्षिण तक ख खूंगा और निगा सूय का दगन भी कर सकूंगा।

स्टॉकहाम पहुचा। यह स्वान्त की राजधाना है। इमम चारा और छाती गगन पहाडिया के साथ साथ भाजा का कनार इम प्रकार गुथी हुई है कि मारा बानावरग घत्यन्त मुर्चिपूण और नयनाभिराम हा उठा। गटर व चारा और घन बन है इतन निकट कि गहर क मध्य भाग म २० २५ मिनट म नी बना म पहुचा जा सकता है।

स्टॉकहाम का स्थिति सामरिक दृष्टि म भा अत्यन्त मन्त्रयूण है। मध पूग जाय ता इमका स्थापना हा बाल्टिक सागर क रास्त स्वीडन पर हानवान आक्रमणा क विरुद्ध एक गट क रूप म हुई था। बाल्टिक सागर म अानवान गणघावा मनोय मानार भान क गमन स्वान्त म काफा अन्तर तव पहुच जाता था। उनरा मानार भान क मुगन पर हा रास्त क लिए उमक मुगन पर स्थित बर्ग गगन पर मार्चैण्टा का गया था और कद्राय स्थिति बान द्वाप पर ग्यारहवा गताका में

एक विमान दुग बनाया गया था। कारातर म उम दुग के ग्रामपाम दमिनया बमनी गइ। उनका विकमिन रूप ही आधुनिक स्टाकहोम है।

नगर के उत्तरी भाग म वाणिज्य-व्यवसाय का केंद्र है, जिसम आधुनिक किम्म की दूकानें और कार्यालय हैं। उत्तरी भाग म नदी की दूमरी धार, म्ना इन द्वीप है। इसी पर स्वीडन का ममद भवन स्थित है और उमम आगे प्राचान दुग के स्थान पर एक अत्यंत भव्य गज प्रामाद खडा है— रायन पतेम। जिन निना यहाँ स्वीडन क नरेण नहा रहते, उन निना इस कृत्र कथ सवमाधारण के रखन क त्रिये खान त्रिय जाने हैं। त्ममें एक मग्रहालय भी है जिसमें भूतपूर्व राजा गनिया के इस्तेमाल की वस्तुएँ और अस्त्र-तस्त्रादि संगृहीत हैं।

स्टाटेन ही स्टाकहोम का सबसे पुराना भाग है। उमकी कद गनियाँ बडा धुमावदार और इनती मँकरी है कि उपर का मजिना के त्राग खिडनिया म गलिया क धार पाग हाय मिन मकते ह। यहा काशी की गनिया की याद ताजी हा उठी। मुख्य धारा नावा पर मान चटान उतारन का है। नदी क किनार हर कहा मान अमवाव मे लग नावें लिखार्द पडती है।

किनार पर ही खन म बाजार तग है। भडकान रगा का रग बिरया छतरिया के नीच मजी दूकानें बनी चित्र विचित्र तगता है। यहा एक और भी विचित्रता दखी। कुदू दूकाना पर काच का प्रडा बडी पत्रिया म मछनिया तगती रती ह और गृहिणियाँ निना मछनिया म म हा खान क त्रिय चुन रता ह।

इस द्वीप का मध्य भाग कुउ ऊचा है। यहा मध्य म स्टाकहोम का प्राचानतम कथन खडा हुम्रा है। इसा म बाठ पर अकिन मन्त जाज और अजगर (मट जाज एण्ड डगत) की एक प्राचान मूर्ति भी लेखा।

स्टाकहोम में नीन रग की तामगाटियाँ ही आवागमन का मुख्य माधन ह। ये तामगाटियाँ काफी तेज रफतार मचरती ह। वम जनता क गहन-महन क स्तर की दष्टि म स्वीडन और स्विटजरलैण्ड की गिनता ममार क सर्वाधिक मम्पत दशा म की जाती है। स्टाकहोम म मैन रनिया मे मुमज्जित अनकानक 'मर्मीडीज' और हम्पर जैसी मन्गी मोटरगाटियाँ टैकिया म चरती हुई दखा।

शहर क मध्य भाग मे ताम द्वारा थियर पाक पटुचा। यहा स्कान्मन लेखा। यह एक बरा विनयण मग्रहालय है। इसम स्वीडन भर के विभिन्न प्रस्था क विभिन्न वास्तु गनिया के पूरे पूरे मकान लाकर रखे गये हैं। यहा मनिया पुरानी पवन चक्किया तगता क वन गिरज तप तगा की भोपनियाँ और विभिन्न इमारत माजू हैं। अत्रिकाश मवाना म उनके निमाण के कात का हा बनी मज,

नस्त्रियों और पुरुष धार्मिक थे। विभिन्न प्रजातों का धना धानी पापाता का भी ज्ञान गया गया है।

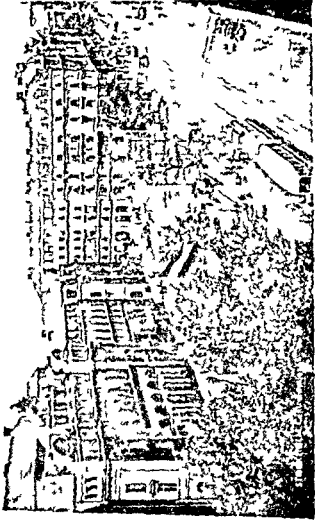
इसमें एक विशिष्टता भी है कि इसमें बचपन स्वीकृत न बाहर न पुरुषों का भी है। पुरुष मरणात्मक इस प्रकार बताया गया है कि प्राकृतिक शांति न साथ न एक साथ ही गया है। बच्चा भी वृत्तियां नही का कार्य है।

स्वीडन का सबसे मुख्य ज्ञान है टाउन हॉल। यह धार्मिक वास्तु कला का एक उत्कृष्टतम उदाहरण है और इसमें विशिष्ट गंगा न म प्रसिद्ध है। इसमें नियमित न बाहर बचपन ध। यह इमारत शांति भवन न किताब एक विशाल प्लाट पर बनाई गई है। भवन न पुरुष न बचपन न इसमें सभी और मरणात्मक की प्रतीकध्वनि गया ही बताया है। इसका एक पर एक हातर उभरी गूंगा न धार्मिक—स्वीडन—ना दगा ता गुमाद्वार मंत्रिया धमकाता नही हरे भर पाकों नाती दूगा रण विरगा धार्मिकान्तर दूनाता और तोराधा का दुसरे बड़ा ही धर्मन गया।

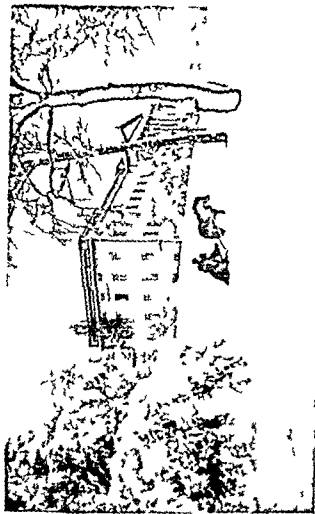
नारायण जान न विशिष्ट धीन पुरुषों नयाय माये गुता धर्मार्थ स्वीडन न बान्धन हीन हुए किताब न गान नारायण जान का माय। मीगर नरों का शिकट लहर न धर्म का शिन न ६ बज दून म गवार दूधा। धर्म न तोगर नरों का विरगा हमारे धर्म न पान नरों न विरगा न लगभग हे पर उभरी धार्मिक और मुविधाएँ बहा जया है। पुरी दून म गैर न नता दगा ताग नियन्त्रण का व्यवस्था था। धर्म बजान ही दून का एक धर्मधारी हाजिर ही जाना रान का गान न विशिष्ट विस्तर तैयार मित्रता और साथ ही तीर्थया नया पानी का ज्ञान भी। पाश्चात्य दगा में बहा भी विस्तर डान का मुगावन नता उभाना पडती क्योंकि जहाज हुआई जहाज नया दून धार्मिक का धार्मिक म या हात्न म जहाँ भी टहरीन बहो माफ-मुषरे विस्तर तैयार मित्रते हैं।

दून में भाजन धार्मिक की व्यवस्था भी था। निराश्रित हान न धावदून मुक्त धर्मविधा नया हुई। दूध, पाव रान और मक्खन पयास माना म मिल गया। यह दून पुरी तन न समानान्तर बान्धन तन जाती है।

स्वीडन न इस भाग में बहुत गुंनर प्राकृतिक दृश्य दखने को मिलत है। इस प्रदेश में घने जंगल हैं और यह वना का उपज तथा शिल्पाद्योग में सम्पन्न है। नम धवन म बड-बड जंगल नस्त्रियों और बन्दरगाह हैं। पश्चिम म नाग न पवना स नस्त्रियों निवलनर स्वीडन न धार पार पूव में बोधानियाँ का छाडी म गिरती हैं। इन नस्त्रिया म जंगलों से बाट छीन कर लकठ बहा शिवे जाते हैं जा बहने हुए



स्वीडन की राजधानी स्टावहाम



ओसनी का राजमहल

कारखाना में पढ़ेचने हैं। वहाँ इह काटकर समान बनाकर, निर्यात क निए बन्दरगाहा में भेज दिया जाता है। लकड़ी का उपयोग कागज बनाने म भी होता है। स्वीडन का कागज समार भर म प्रसिद्ध है। ननिया क प्रवाह का रोककर विद्युत् शक्ति का उत्पादन किया जाता है जिमसे बड-बड कारखान चलने है।

स्वाडन पर प्रकृति की बडी कृपा है। स्वीडिंग भी प्रकृति क प्रति अनुत्तर नहा हैं। व जगन म पेडा पर आरा ता चलाते है परन्तु उनके विकाम की भी व्यवस्था करते है। वे ननिया के प्रवाह को बाँध बनाकर रोकते हैं पर इस बात का भा ब्याल रखत हैं कि बाँध के कारण आगे चनकर खेती या जमीन पर प्रतिकून प्रभाव न पड। यही कारण है कि आज स्वीडन कागज और लकड़ी के उद्योग म समार क अग्रणी देशा में गिना जाता है साथ ही कृषि क क्षेत्र में भी ऊन्नति का भार अग्रभर हा रहा है।

स्वीडन का प्रकृति से एक और बरदान मिना है, बहुत अच्छी किस्म क लाह का। यूरोप में सवन अधिक लाहा इसा देश म हाता है। यहाँ लाह की खान अधिकागत दा स्थाना म है मध्यभाग तथा उत्तर क लैपलैण्ड म। स्वीडन प्राचीन काल म ही लौह-उद्योग म अग्र देगो म बनकर रहा है। आज भी उत्तम कोटि के लाह क निए स्वीडन का लाहा मानना पडता है। स्वीडन का समद्ध बनान और विदेशा म धन बजारकर तन में कागज और लकड़ी का भाँति जोहा भी मन्द कर रग है।

यात्रा काफी आरामदेह थी। शीश की खिडकिया पर काल पर्दे बाहर की राशनी से बचाव कर रहे थे। इसलिए नींद में बाधा नहा पडी। प्रात ८ बज नींद खुरी। रात भर म लगभग ७०० मील उत्तर की आर आ गया था क्योकि स्वान्न का दूनें आपना तेज रफ्तार के लिए विश्वविख्यात है। मुबह की टण्डी हवा में ताजगी थी। एक अपूर्व स्फूर्ति अनुभव हुई। चटपट तैयार हा गया। शारा से काला पन्ना हटाकर बाहरी दृश्य देखन लगा। बाहर तेज धूप छिटक रही थी आर धरता अग्रन के उम अतिम सप्ताह में भी वर्षीनी चादर से ढकी नजर आ रही था। मीना तक जगल और ऊचे-ऊच पड ये। कहा का कम्बा नही दीख पडता था, बल्कि कभी-कभी छोटे टाट गाव आँखा के सामन आकर तुरन्त आभन हा जाने थे।

तन ९ बजे बान्न पढ़ेची। यह उत्तरी स्वीडन का बडा रेलवे जकशन है साथ ही मैनिक् केन्द्र और एक औद्योगिक नगर भा। स्टाकहाम म यहा तक यह ट्रेन एकमप्रेस रहती है पर इसक आगे पसे-जर हा जाती है कयाकि उत्तर क इस प्रदेश में यात्रिया का आवागमन कम रहता है। बहा से उत्तर-पश्चिम का आर

विन्गा हाथ हूए नारियल तथा शिगण-गूँज की घास मुगला के कस्बेगाह पर पहुँचा जा करता है।

बोम्बे में टून बोर्ड ६० मीन हो चकी हाया। वि गफ पम्परा की बना एक सामा रेता निर्याद पया। में गाव हा रता था वि म्याडन का मोमा का घन ता मनी नहा होना चाहिये, फिर यह भासा रता मही रंग ? इनन म ही एक बाडे मोमा न सामन म गुजरता निर्याद पया। अगरेजा तथा घाय - भागामा म उग पर निरता था— उत्तरी वृत्त। में घान ममभ गया। मुभ गगा हूँ वि में अब प्रुवाचनीय प्रन्ग नैपण्ड म पहुँच गया हूँ जहाँ म मन्ग मूयास्त जाता हा मन्ग।

टून निन म कराव २ बज विन्गा पहुँचा। यहा इगता घनिम म्पेग था। ननरा म विन्गा का दस्त म एमा लगता है वि स्वाइन व मुद्दर उत्तर नैपण्ड म यह छाग सा वरता है, पर वास्तव म यह जानकर भाचय हाया वि यह इना बडा शहर है वि गसार व बड रड शहर जैम मन्ग, 'सूयाक' परिम तथा वन वना, भाति का लम्बा घोरान इगव गाभन कम है। यद्यपि इमरी भागाना निरं ११००० है पर इगवा क्षत्रफन है ३००० बग मोत। यह विन्गा-बाग और न्यूजागारा दा पवता की तनहरी में बगा है। इन पटाडा में बिरागता द्वारा लग भग ५० कराट टन ताग हाव का अनुमान लगामा गया है। गहर म चार का बग बडी भट्टिया है जहाँ गाधन और कलाई का काम होना है। इन् खनर हमारे म्पे व जमशानपुर का स्मरण ये आता है। गहर में आपना मनदूर व्यापारा उद्योगपति लप तथा थोर-बहुत विन्गा पर्यव भा मितग।

सामान स्टेशन पर रखकर में गहर दखन चितता। में जीवन म पहन पहल लैग को उनका जातीय पोशाक में यहा दखा। उनका लाल पागा या मोला डारियानर लिबास उनके स्वस्थ मुगठिन गरीरा पर खूब फर रहा था। शकल मूरत म नैप मुक्त एगियाइ लग। उनकी मंगलियन शौख और छोटो नाक इस बात की पुष्टि करती है। अनुमान है कि उत्तरी स्पेन्निविया म बसे इह हजारा वप हा गय हागी। म्चीनन म इनकी मख्या १०००० नारव म २००००, फिनलैण्ड म २,५०० और साइबेरिया में करीब २००० है। ग्राम तीर पर इनके रहन महन के तीर तराके देखकर यह धारणा बनती ह कि य लोग अपनी आदिम आदता और तरीका को छोडना नहा चाहते। व विगान व इम आधुनिक युग म भी उनसे चिपके हुए हैं। में ता यह समझता हूँ कि भले हा इनक जीवनयापन की प्रणाला का आत्मि कटा जाये पर है यह तरीका सही क्याकि जिस वातावरण गलवायु और जिन परिस्थितिया में उह जिन्गी बिनानी पडती है, उने दखत हुए सम्भवत इगने घबिक अनुकूल,

उपयोगी धार सुविधाजनक अय नगीके अपनाय नहा जा मनने । मत्रय बडा खूबी इमकी यह है कि अपनी आवश्यकतामा के निण नप का हम मभ्य कहानवान लागी की तरह परमुखापनी नही रहना पता । व मिफ नमक धोर काफी क लिए बाहरी दुनिया पर निभर करत हैं ।

किहना म लैपा की एक अच्छा मराय है । जहाँ व काफी धार गराव के प्याता पर जुते है म भी घूमते रामते वहा पहुचा । बडी दृचय था इह पाम म देखन-समभन की । वहा एक मुशिभित नप से भेंट हो गयी । वह अगरेजा थाडी-बहुत जानता था । टसी क माध्यम से उमस बात कर नपा क बारे म काफी जानकारा पायी । लैप जाति आदिम ह । उनकी अपनी वाई सम्यता नहा ह, पर व खूब जानने है परिस्थिति धार वातावरण क साच म ल जाना । माधारणत प्रत्येक लप ३ नहा ता कम म कम २ भापाय जानता ह । इनम कई एस हैं जा डाक्टर हैं स्कूल-कालिजाया विश्वविद्यालय म अध्यापक हैं । विन्दु अपनी बात धोर अपने लागी क प्रति जिस प्रकार का नमाव हम लोगी में गहना है उसा प्रकार का लपा में भा है । वह मन हा नकर इजीनियर या प्राफेसर बन जाय, उमका माह उस स्वजना की धार बराबर खाचना रहता ह । बटुत म एम नप भा हैं जा आधुनिकता स पिण छुटाकर अपने उमा कठार जावन म चन आय हैं धोर सचमुच उमम के मुख शक्ति धार आराम का अनुभव करत हैं ।

रेगिस्तान म जैस उँट सबसे बडी सम्पत्ति धोर जहाज है वस हा बफानी प्रन्ग में रेनडियर है । यह हमार दश क बारहमिने जैमा हाता है । हमारे देश म प्राचीन समय में जिम प्रकार गाय की महत्ता जावन के विविध अगा म थी, धोर अर भी है ठीक उमी प्रकार रेनडियर की महत्ता लप जीवन में है । इनकी आर्थिक धोर सामाजिक स्थिति इमी के महारे टिकी हुई है । वर्फानी प्रदंग का यन पशु बफ क बीच जमनेवाली कई जैसी घास लाकर ही जीवित रहता है । लपा का इमम अपना आहार धार दूध प्राप्त होता है । न इमका माम ता खाने ही हैं, उपरान्त अस्थियाँ धोर चर्बी मज्जा तनु रोय धोर चमड तल का काम में लाते है । साग धार हडडिया से हथियार, धौजार धार दस्तकारी का कलापूरण चम्तुए बनाते है, मज्जा मारन के लिए इमकी खान का उपयोग नाव बनाने म करते हैं । अतडिया तक का जगे के रूप में अपना तम्बू सीन में उपयोग करते है, जिह रेनडियर आवश्यकतानुमार इधर से उधर ढाते है ।

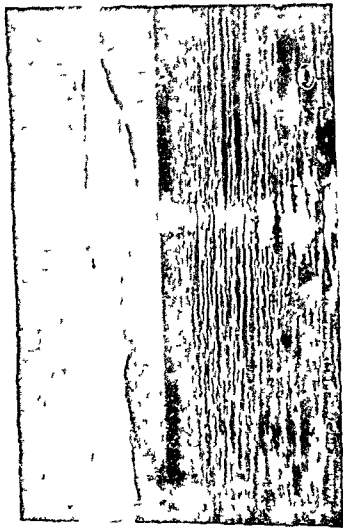
स्वीडन की सरकार न नपा की समान नागरिक अधिकार रे रख हैं । यही नहा उनकी निगा-मूया का भी समुचित अवस्था है ।

बाजार में आने रात्रि भाजा व लिए कुछ दान-धानन आर मंत्रियां लना चाहता था। शहर में सभी गुजराती आर आधुनिक शहरा की तरह है। वैग ता भगरेजी समझनेवाला आगरेजी मिल ही जायगे पर मुझ योगी नेर व लिए त्रिजत महगूस हुई। गयाग एगा पदा रि त्रिजम पूरू वही मरा बा न समझ और लाचारी जाहिर करता हुआ मारी मांग स। मारने लगा रि मंड और भगरेजी भाषा का सात तो एक ही भाषा में है। आगम में बा न भन ही न मों पर क्या इतनी दूर है कि परस्पर समझना भी कठिन है। मस्तुत स निरना हमारा हिंदी ता आना बहिन गुजराती बंगला मराठी भगमी वगैरह स इतनी मिलती जुलती है कि इनर बा ननयाला की भाषा बा न चाह न सकें, पर समझ ता सते ही है। भगरेजी की प्रसफरता स परापा म वना था कि भगरेजी जाननेवाल एक पात्री महान्य मिल गय। उन्होंने मर उपर बडी कृपा की। मारा सामान साथ रहकर खरीदवा लिया। इतना ही नहा अपन घर पर भी आमंत्रित किया। विदेश में उनर घर पर स्वजना का-मा जा स्नहपूर्ण व्यवहार मिना वट मुझ आज भी या है। उन्होंने मुझ स्नान तक पहुँचान का भा कष्ट उठाया।

म उनस विदा लकर नारविक जानवायी टून में बठा। विरुना पीछ छूटता जा रहा था। तरह-तरह व विचार मन में उठ रह थ। घण्टे दा घण्टे में स्वीडन भी छूट जायगा।

१० बज रात का नारविक पहुँचा। नारव व उत्तरी भाग में यह एक प्रमुख व्यापारी केन्द्र तथा बन्दरगाह है। ध्रुवाचलीय प्रशा में होन पर भी यह बन्दरगाह बारहा महीन जहाजों व आवागमन व लिए खुला रहता है। इसका कारण एटलांटिक महासागर के बीच स बहती हुई वह उपधारा है जिस गल्फ स्ट्रीम कहते है। वट इस बन्दरगाह के पास स गुजरती है और यहा बफ नही जमने देती। नारविक बन्दरगाह स नारव अपने मटा का तथा स्वीडन का भी लोहे का सामान और लकडी विशा को निर्मात करता है। इस नगर का पिछल महायुद्ध में जमना न बुरी तरह तहम-नहस कर लिया था म्त्रिन्तु अब नारववासिया के धय और अयवसाय के कारण यह पुन उठ खडा हुआ है। प्रतिवप हजारों का मरुया में यात्री निशा-मूय देखने यहा पहुँचते है। इसी कारण पयटक अयवा यात्रिया के लिए व्यापारिक मस्थाना एव सरकार द्वारा यधोचित प्रबध किया गया है। अन्धे अन्धे होम्स तथा यातायात की समस्त सुविधाय यहाँ बडी सरनता स उपलब्ध है।

रिंगा-मूय दखन व लिए स्वीडन तथा नारव दाना हा देशा में टूनें



अर्द्ध रात्रि का सूर्य



अत्यधिक सर्दी
होन पर भी
भूमि हरी भरी
है

आर्कटिक वृत्त
का एक स्टेशन



एक बच्चा
अध्यापिका के
साथ

हवाई जहाज बस घाटि बराबर नियमित रूप से राजधानी से ध्रुवाचन तक जाया-आया करते हैं। हवाई जहाज से तो ६ घण्टे में ही दक्षिण वापस आया जा सकता है। स्टॉकहोम के हवाई घण्टे में १० बजे रात को हवाई जहाज रवाना होता है और ध्रुवाचन में आपका निशा-सूय का दान बराबर पुन ३-३० बजे स्टॉकहोम वापस आता है। उत्तर का आग बन्द पर अधिकाधिक उजाना मिलता जाता है।

जिस समय रात में नारदिक पर्वों का उम समय में बस तिन की तरह प्रकाश था। विचार आया कि उत्तर का आर जरा बन्द पृथ्वी का अतिम गाँव हैमरफास्ट भी देख लिया जाय किन्तु विचार त्याग देना पड़ा। कुछ सफर की थकावट, कुछ साधिया का अभाव इन सब उन्पाट उठा कर लिया। दूसरे दिन मरर का ट्रेन में दक्षिण की ओर नारद का राजधानी आगना क लिए रवाना हो गया।

सुभ जितना मनोरम दृश्य किन्ना और नारदिक के बीच सफर में दान का मिला उतना किन्ना में अत्यन्त बड़ा नहीं मिला। भाग में तागनेआम्क भील का पानी जमकर चट्टान-आ बन्न गया था। लीप मछुण इस पर लम डालकर रह रहे थे। यही जीवन में सबप्रथम निशा-सूय का आनाक सिखा। सूय यों मई से जुलाई तक अस्त नहीं होता। अगन यहाँ सूर्यास्त के घण्टे भर पहले सूय में जैसा आभा रहती है वसी ही आभा रात को १० बजे सुभे सिवाई पडी। अतिज से कुछ ऊपर का उठा दृष्य वह मुम्बरा रहा था। उनक दान मान में मरा शरीर पुलकित हो उठा। मैं समझ न पाया कि प्रकृति का इस अद्भुत लीला-स्यनी के दमकन हुए उस प्रकार-सुत्र का क्या बड़े—दिवाकर निगाकर या प्रभाकर ? अखिल विश्व के सूदधार के अति मन अद्भानत हा उठा।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है डच वड वष्टमहिष्णु हाते हैं। साथ ही वे वड गैलानी क्लाप्रेमी खाने-पीने के शौकान और फूला के अनुरागी भी कम नहीं होते। हर एक नागरिक के घर में फूला का एक छाटा-भा बागीचा और कुछ हाथ की बनी तस्वीरें मिलेंगी चाहे व मुप्रसिद्ध चित्रकारों की हा अथवा उनकी स्वयं की बनाई हुई।

वहाँ वष म कई बार फूला की प्रतियोगियाँ होती हैं, जिनमें अच्छे फूला पर इनाम दिए जाते हैं। इस तरह हालण्ड को फूला व व्यापार से भी बड़ी आमदनी हो जाती है। प्रदर्शनी म आय हुए फूला व पौधा में से किसी किसी के ता बीस हजार रुपया तक दाम लग जाते हैं।

हालण्ड और डेनमार्क में साइक्लिना का बड़ा प्रचलन है। छुट्टी के दिन यदि साधारण सीधी धूप निकल आती है तो हजारों की संख्या में व बाल-बच्चा के साथ साइकिल पर सवार होकर दूर समुद्र-तट या डाइक पर सैर के लिए चल जाते हैं। एक साइकिल पर पति पत्नी और दो बच्चा का बठना तो साधारण बात है। इस दृश्य का अन्दाज नई दिल्ली की उन सड़कों से लगाया जा सकता है जहाँ दफतरो की छुट्टी के समय सड़कें अनगिनत साइकिल सवारों से भर जाती हैं।

हालण्ड में गो पालन भी एक मुख्य धंधा है। एक एक गाय से प्रतिदिन मन सवा मन तक दूध होता है। वहाँ का गाय हमारे यहाँ की भैंसा से भी बड़ी होती है। दक्षिण व उत्तरी अमेरिकावालों अच्छी नस्ल के बछड़ पैदा करने के लिए यहाँ से एक एक साठ पचास-आठ हजार रुपयो तक म खरीद कर ल जाते हैं। अपने यहाँ पिलानी (राजस्थान) म भी हालण्ड का भाड़ है जिससे उत्पन्न गायों व ४५ पीण्ड तक दूध प्रतिदिन हाता है।

यहाँ बेट-बूद भी जीवन का एक प्रमुख अंग है। बस ता सभी तरह के खेल होते रहते हैं परन्तु गतिमान म जब नहीं और नियाँ जम जाती है तब बफ पर स्की का खेल शुरू हो जाता है। इसी तरह गर्मी म इहाँ नहरा में नावा का दौड़ और तरने की प्रतिस्पर्धाएँ हाती रहना हैं।

हालण्ड के सभी शहर समुद्र के किनारे बसे हुए हैं। इसलिए यहाँ समुद्र स्नान और तैरना जीवन का आवश्यक अंग हा गया है। हर जगह स्नान की समुचित व्यवस्था है। अथ यूरोपीय शैली की तरह यहाँ हजारों की संख्या में ताल समुद्र-स्नान करते रहते हैं परन्तु यहाँ बनिम और मानव बार्तों की तरह स्त्री-सुग्धा का अट्ट-नानावस्था में नहा देना जा सकता। जन जीवन गुनी

प्रतीत होता है, क्योंकि वस्तुभावा का मूल्य, अथवा मूलापय देगा की अपेक्षा कम है। खास कर दूध, गन्नी, पनीर, मक्खन और पत्र बहुत ही मम्मे हैं।

इस घाट में देग में २५० मघ्रहानय (म्यूजियम) हैं जिनमें म हेग, एम्पटर्डम और रोटर्डम के मघ्रहानय ता विन्व विन्मात हैं।

यद्यपि इगलैण्ड की तरह हालण भी एव मप्र्राज्यवाणी म्ग है तथापि दाना व वतमान गामका के म्गन महन और शान गौरन में बहुत अन्तर है। प्रिनेन की महाराना का निजी सच प्रतिवप करोडा रुपव बँटना है जब कि हालैण्ड की महारानी जुलियाना बहुत ही साधारण ढग में अपन पति और बच्चा व साथ हग व एक देहाती अचन में रहती हैं। उनकी तीन लडकियाँ पञ्जिक स्कून म ग्राम वच्चा के साथ हा पत्नी हैं।

में सवप्रथम एष्टवष सं टून द्वारा राटरडम गया। रास्ते में एव मामा चीनी पर पामपोट का जीव की गया। हमारे देग का चाकिया की तरह यहाँ माल अमबाव उलट पनट और अय्यवस्थित नयी किया गया और न वस्त्र खुलवाकर नगा भाणी ही ली गयी। इसका कारण यही है कि इन दशा व अपमा मम्बध अच्छ हैं और लोग का नैतिक स्तर भा ऊँचा है। यहाँ पूर्वी देगा जैसा तस्कर-व्यापार नहीं होता।

राटरडम नगर का म्गानी करीब दम लाल है। द्वितीय महायुद्ध में जमना न बमबारी मे कुछ निता में हा इगके दम हजार मवान और तेरह मी कारखान नष्ट कर न्यि थे। इससे जा हानि हुई उमका अनुमान महज हा लगाया जा सकता है। परन्तु लडाई की म्गाम्पति के पदचात् बडी शीघ्रता म राटरडम का पुनर्निमाण हुआ और अग्य ममय में ही वह पहेले मे अचिक सुन्दर और समृद्ध बन गया। यह ंचा की परम्परागत पग्थिमगीलता का परिचायक है।

समुद्र व किनारे और राइन तथा माज नयिया व मुहाने पर स्थित होने के कारण, रोटर्डम विन्व के सर्वोत्तम बन्दरगाण में गिना जाता है। उत्तरी जमनी और स्विटजरलैण्ड व आयात निर्यात के लिये यह एव बडा बन्दरगाह है और इस भी उन दशा व विवाम का लाभ मिन रहा है।

रोटरडम बन्दरगाह के गान्गों में आठ करोड मन माल रखने की जगह है। यहाँ प्रतिदिन तीस लाख मन मात्र चन्पाया-उतारा जाता है। इस काम व लिए ३५० छोटी बडी षन मशीनें लगी हुई हैं। बन्दरगाह के अनुष्प ही, यहाँ विनाल रेनवे स्टेगन है जहाँ केवत भा असबाव उतारने चाने के लिए माइडिग्न की नम्बार्द १७५ मीन है।

उपर हम उन्लम कर प्राय हैं कि अब लाग पूना क बड शीरीन हान है । उन्हने गुन्दर तरीके स इम शीर का गग का भामग्ना का एक ग्यात भा बना लिया है । कारनहाफ शहर म गिरा पूना क ही बाग है जहाँ गीरडा तरह म उन पर प्रयोग और परीक्षण होने रहने हैं । जैसे विभिन्न नस्ला क परगुषा की मिश्रित जातियाँ तैयार की जाती है वम ही भिन्न भिन्न जाति क पोषा की बनमा क चम चनाकर नाना प्रकार क ग्गा और प्राटृतिया क पून उपजाये जात हैं, जिन्हें खेलन विन्गेना स लासा की मस्या म यात्रा घात रहन हैं । कारनहाफ क समीप ही भाल्ममार नामक शहर म इन पूना का नोनाम प्रति सताह हाता है । इस शहर का अस्तित्व ही यन् फूने क इस व्यापार पर आधारित कहा जाय ता कोइ अत्युक्ति नहा हागा । पूना क निर्यात स हार्नेण का बीम करोड रुपया की वार्षिक भामदनी हा जाता है ।

एम्सटडम हार्नेण्ड की व्यापारिक राजधानी तथा सबसे बडा शहर है । आज स ५०० वष पहले जहाँ दन्दनी जमान और छिछने पानी का जमाव था, वही डचा न इतना सुन्दर और विन्गा नगर बना लिया है कि इसको यूरोप का दूसरा वेनिस कहा जाता है । स्वच्छता मकाना की सुन्दरता और सडका की चौडाई म तो यह वेनिस से भी बढा-चढा है । वेनिस का यन् हम भारत का वाराणसा कह तो इस सहज ही बगलौर की उपमा दो जा सकती है ।

सुबह ही जलपान से निवृत्त होकर शहर देखने निकला । होटल के सामन की नहर में एक माटर-बोट खडा देखा जिमम लाग सवार हो रह थ । मैं समभा कि यह भा कोई किराए का बाट है अत म भी उसमें जा सवार हुषा । कोई पन्द्रह मिनट बाद करीब ५० यात्रिया का लकर बोट बई नहरा स गुजरता हुआ खल ममुद्र में पहुँच गया । मने साथ के यात्रियो स पूछने की चष्टा भी की कि हम जा कहीं रटे हैं । परन्तु अगरेजा योरप के ग्वास खास होटना क बडी-बडी दूकाना के अलावा और कही काम नहा देती । फच म जानता नहा था लाचार होकर चुपचाप बठा रहा ।

कुछ देर बाद मोटर-बोट अघाह जनराशि के विनारे एक टापू के पास जाकर रवा । वहाँ एक जहाज बनान का बडा कारखाना था । सब यात्री बोट स उतर पड बेवल में ही रह गया । समझ नही पड रहा था कि वास्तविकता क्या है । मवत की भापा म बोट चालका को समझाया कि मुझे तो वापस गहर गना है परन्तु सफलता नहा मिली । सौभाग्य से वहा पर कारखाने म अगरेजी जाननेवाला एक कमचारा मिन गया । उसने बताया कि यह बोट तो इस जहाजी कारखाने के कमचारियो को गहर म लान और ले जान के लिए है । यह इह

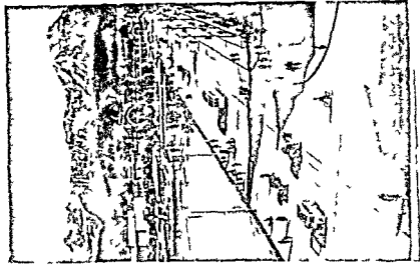
लेकर घाम का ही वापस लीटेगा। अब मरी समझ में बात आई कि मुझे भी कारखान में जा बाला समझकर न ता किराया ही मांगा गया और न जाने की गहट का नाम ही पूछा गया। बड़े भ्रममजस में पण। शहर से मीला दूर समुद्र के बीच। भूख भी बडाक की लग रही था। कोई एक घण्टा मामने से एक बन्ग बाट आया। सयाग से यह यात्री-बोट था। उसम बठकर करीब दा बजे वापस एमस्टडम पहुँचा और आते समय डेल हयया किराय का भी दना पडा। इगत्र बाद तो यात्रा-महायत्र केन्द्र पर जाकर सागी बाना की जानकारी कर ली और वही से शहर का एक नक्शा भी ले लिया।

एमस्टडम की एक छोटी सी घटना में आज भा नहा भून पाता। एक महिना न मने किमी रास्ते का पता पूछा जो उसने सकेत स बता दिया। थोने दूर जाने के बाद पाछे स एक आदमी दौडता हुआ आया और टूटी-फूटी भगरजा म बताया कि मेरा रास्ता उस तरफ न हाकर दूसरी तरफ स है। वह महिला भी उनना ही देर तक वहा खडी हुई भरी तरफ दखता रही। जब मैं सही रास्ते की तरफ मुड गया तभी वह अभिवादन कर लौटी। सभवत जो रास्ता बताया था उसम भून हा गयी थी और इमालिए उसन उम आत्मा को दौडाकर मुझे परेगानी स बचा लिया। इस घटना स हठात मरा ध्यान अपने देग के ऐमे लागा की तरफ चना गया जा अपरिचित राहगीन का रास्ता पूछन पर या ता भिन्नक दमे या जान-बूझकर गलत रास्ता बना देंग।

हानण म जाकर यति जाइन्टजी का बाध आर मीफोन का हवाई अडडा न लेवा जाये तो यात्रा अधूरी ही समझी जायेगी। जाइन्टजी का बाध १९२० म बनना शरू हुआ और १९३२ में पूरा हुआ। यह २७ मान नम्बा है। एक तरफ अथाह खारा समुद्र है, ता दूसरी तरफ मनुष्य निर्मित मीठे पाना की भीलें व हरी भरा वृषि-योग्य उपजाऊ जमीन। बाध की दीवार इतनी चौडी बनाई गई है कि उग पर एक साथ माटर साइकिन पैदन चननवाना क निए अतग-अतग सडकें हैं। छुट्टी क दिन इस बाध पर हालण्ट क युवका आर युवतिया व बच्चा का मेला-मा लग जाता है।

इसी तरह सीफान क हवाई अडडे को भी दुनिया का आठवा आश्चय कहा जाय ता काइ अत्युक्ति नहा होगी। मौ वप पहन जहा समुद्र नहरा रहा था वहाँ विश्व का सबन बडा हवाई अडडा बन जाना कम आश्चय की बात नहा। प्रतिदिन गैकटा वायुयान यहाँ आते जाते हैं। उडडयन क क्षेत्र में आज भी क० एन० एम० के हवाई जहाज और उनके डच चानक सतान में धपना सानी नही रखत।

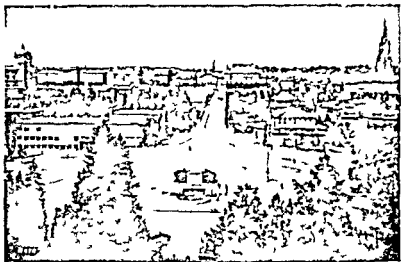
अतः म. यहाँ के विद्वत् प्रसिद्ध 'विष्णु' के कारमान के बारे में भी दा. ग. विष्णुना अप्रामाणिक ग. हागा । जहाँ विष्णु का कारमाना है वही, जमरापुर को तबह. आद. हावन नाम का एक नगर हा. वेग गया है । पगठ वर्ष पट्टन बहुत छोटे पैमाने पर इस कारमान की मात्र प. था । आज दुनिया में उमरी ७२ शालाएँ हैं जिनमें एक नाम से भा. अथि. आ. भी काम करत हैं । विष्णु के रंडिया. माइनास्वाय. एक बिजनी के अर्थ उपकरण का वापिस उतारन करीब दा. सी. कराड. रथ के मूल्य का हाता है ।



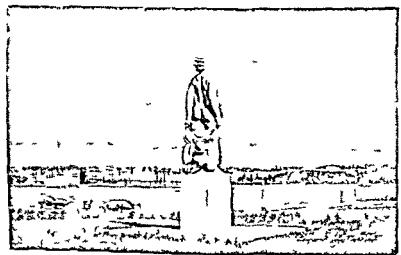
आल्प्स की शोद में बसा हुआ लूजन



स्विटजरलैंड का सबसे बड़ा शहर ज्यूरिख



स्विटजरलैंड की राजधानी बर्न



जिनेवा शील का नगर

भूलोक के नन्दन कानन

मैं तो बार स्विट्जरलण्ड हा आया हू—महत् १०५० और फिर १९६० में। पहली बार मुझे तो मनीन रहन का अवसर मिला था। माग दग घूमने के लिए पयाप्त अवकाश था। प्राकृतिक सौन्दर्य देखन व माथ-माथ, मुझे स्विस जनता के निकट सपक में आन और उनका जीवन देखन-अमपन का भा मीका मिला। प्राकृतिक उच्च आकषक अवश्य लगा परन्तु म वहा के सामाजिक जावन म कहा अधिक प्रभावित हुआ। कमठ सामाजिक जीवन ही उन दग की मवागीस र्प्रति का मात्र कारण है। काश्मीर म केवल प्रकृति मुस्कराना है स्विट्जरलण्ड म प्रकृति और स्विस जनता दाना ही मुस्कराने मिलते है।

आल्पम की गां म यह एक छोटा सा देग है। इसकी आबादी १० ०० ००० ही ह परन्तु यहा र्वनी सी आबादी के निय भी न तो पयाप्त अन्न पया हा पाता ह आर न स्विस आगा व पाग खनिज पयाथों का काई भणार ही है जिमम अन्न निय खाद्य सामग्री तथा जीवन व अयाय आवश्यक माधन जुग मर्के।

इन तारा न इन समस्या का समाधान उत्तम ढग स किया ह। य परिवार नियोजन द्वारा जन-संख्या का वद्धि पर नियंत्रण रखने हैं। इसी का परिणाम है कि पिछ्ठ कुछ वर्षों के दौरान ममार के अयाय देगा का जन-संख्या में पचास माठ प्रतिशत तक वद्धि हो गई पर स्विट्जरलण्ड की जन-संख्या अधिक नडा व पा ।

खाद्य-सामग्री तथा जीवन के अन्याय आवश्यक माधन जुगने के निय इन्हाने नियति का माग अतनाया है। इन्हाने अपने सभा गिल्पाद्योगा का यही एक उद्देश्य बना रखा है। विदेगा से कच्चा मान—जैम रोग, कायता तथा अय आवश्यक खनिज पदाय—मवाकर उनका तयार मा—जैम मनीने घटिया र्वायें विज्ञानी का सामान, र्वादि—रिनेगा को भेजते हैं। गिल्पाद्योग की इस नाति व कारण विदेगों म काफी धन मिल जाता ह जिमका कुछ भाग खाद्य-सामग्री कुछ कच्चे मान व अयात और शेष राष्ट्र की समृद्धि पर व्यय किया जाता है।

स्विस सामाजिक जीवन की राह गिल्पाद्योग हा है। इसालिए वहा का जन संख्या का ब्यालीम प्रतिगत भाग किसी न किसी रूप म गिल्प मे सवर्तित है। हर व्यति की काय-शुशानता का वना वहुत ध्यान रखा जाता है। इनको मना

इन बातों की चिन्ता बना रहती है कि इनका वस्तुएँ धन तथा का वस्तुओं का मुकाबिल ऊँच स्तर की धोर त्रिपिंगा गिद्ध है। यही कारण है कि ममार भर में स्विट्जरलैण्ड में बन डीजन धोर मरान क बड-बड इजना ग लखर छोटी छोटी घडिया तक की मांग सबसे अधिक रहती है। अमरीका प्राग धोर जमनी जैसे औद्योगिक राष्ट्रों के बीच भा स्विट्जरलैण्ड का एक अगला त्रिपिंगा एवं गरिमापूर्ण स्थान है।

इसका एक धोर भा कारण है। इन्होंने अगल उद्योग धंधा का अत्यान्व तथा का भाँति पूरी तरह पर मशीना के हवाले नहा दिया है। इमीलिये इनका बाराती धोर त्रिपिंगाउपन का मुकाबिला करना बडिन हाता है। वहाँ कुतार नियम अर उद्योग का बडा मुल्त समन्वय मिनता है। उदाहरण के त्तिय एक घडी म १२६ से २०० तक पुर्जे लगते हैं धोर सामायत हम ममभते हैं कि इनके लिये वहाँ बड-बड कारखान लट हाग परन्तु मन ज्युरा अचन म हजारों कारीगरों का अगन अगन धरा म ही ये पुर्जे तैयार करते देखा है। हर कारीगर घडी का एक न एक पुजा तैयार करन म गिद्धहस्त हाता है। इमीलिये अमरीका धोर ब्रिटन की घडियाँ लाख कारिगारों के बावजूद स्विट्जरलैण्ड की आभगा धोर रीनकम के अग नही ठहर पाता।

शिल्पाद्योग की यह नीति इतनी सफल रहा कि अगल स्विट्जरलैण्ड का आर्थिक स्थिति अत्यन्त दृढ़ हा गई है। पिछले वर्षों के दौरान बड बड राष्ट्रा के सिककों की कीमता म काफी उतार चढ़ाव आय, परन्तु स्विस सिक्के का कीमत स्थिर बनी रही। इतना ही नहा उनको अपनी अथ-व्यवस्था की दृढ़ता पर इतना भरोसा है कि वहा फी करेन्सा है अर्थात् अगल स्विस बका में किसी भी देण की मुद्रा बदल सकते हैं। उनका इस बात का भय नहा कि उनकी मुद्रा बाहर चली जायगी। यहाँ के बका म किन्शी प्रचुर मात्रा म धन जमा रखते हैं परन्तु उह इसके लिए सूद मिलना तो दूर रहा बल्कि उन्टा कुछ शुल्क देना पडता है।

द्वितीय महायुद्ध के फलस्वरूप सन १९१० में सारा यूरोप महंगाई के बोध से दिन दिन अधिक दबता जा रहा था परन्तु स्विट्जरलैण्ड में महंगाई ज्यादा पर नहा पसार पाई। उन दिनों वहाँ कुछ अत्यावश्यक वस्तुओं के दाम इस प्रकार थे—दूध आठ आने सेर, दही बारह आने सेर आटा एक रुपया सेर धोर सब तीन आने का एक। उसके बारह वर्ष बाद सन १९६२ में जब मैं दूसरी बार गया मूल्या में पचास प्रतिशत वडि तो अवश्य हो गई थी फिर भी औसत आय के हिसाब से वे भारत के मुकाबिल बहुत कम थे।

वहा मजदूरी क काम की इतनी अधिक गुजाइश है कि पडाम के दशा मे भी लोग घाकर मजे में जीविकापाजन करने हैं। इतनी और भीम के लोग काफी सख्या में आते है। कहा-वही ता भारतीय डाक्टर भी बसे हुए है उनकी प्रैक्टिस भी अच्छी चल निकली है।

एक स्विस परिवार में ग्राम तौर से चार व्यक्ति हात हैं। प्रति व्यक्ति सात आठ सौ रुपय मासिक आय के हिसाब स पूर परिवार की औसत आय तान हजार रुपय तक बठती है। हमारे देश जसी इतनी आर्थिक असमानता भी वहा दिखाई नहा बता कि एक और तो असस्य परिवारा का एक जून खाना भी कठिन हो और दूसरी आर एस लाग भी हा तिनका मासिक आय बइ लाख रुपय तक पहुँचती है। सम्पन्न से सम्पन्न स्विस परिवार की मासिक आय आय कर देने क बाद पच्चीस हजार रुपय स अधिक नहा बठती। अधिक असमानता न हान क कारण सामाजिक जीवन में भा विपमता नहा दिखाई पटती। जन जीवन सुखी है।

इनका आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण भी इतना स्पष्ट और स्वस्थ है कि आज क कम्युनिज्म को खुली चुनौती दे रह है। उनका मत ह राष्ट्र की उन्नति के लिए यह आवश्यक नहा कि व्यक्ति क धर्म का जबरन राष्ट्रीयकरण करके उभ मनुष्य से मशीन का पुर्जा बना लिया जाय। स्विटजरलण्ड क सार उद्योग धंध गैर मरकारी क्षेत्र म है कवल डाक-तार टेलीफोन और रेनव सरकारा क्षेत्र में ह।

इन्होंने इसा तरह अपनी राजनीतिक समस्या का भी हल निकाल लिया है। सारा देश बाईस छान छोट कटना (स्वतंत्र राज्य सरकारा) का एक सभ है। प्रत्येक कटन स्वतंत्र है। उसके अपन अलग नियम और कानून बन हुए हैं। य कटन कभी भी एक-दूसरे क मामला में हस्तक्षेप नहा करते यहाँ तक कि केन्द्र भी इनक मामला में दखल नही देता।

स्विटजरलण्ड की सामा जमनी फ्रान्स आर इटली म मिनी हुई है। उन दशा क लाग सदिया पहल यहाँ जाकर बस गये थे। इसलिए यहा आज भी तीना दशा की ही भाषायें वाली जानो हैं। इस बीच उन ताना राष्ट्रा म अनेक बार भयानक युद्ध टन चुके हैं नशाम रक्तपात हा चुका है पर स्विस राष्ट्रीयता क मगम पर जमने फ्रेंच और इतालियन सांस्कृतिक धाराय अपना वैमनस्य भुनाकर त्रिवर्णी बन गयी हैं।

उत्तर-पूर्व के जमन भाषी, पश्चिम क फ्रेंचभाषी और दक्षिण के इतालियन

भागी स्विस नागरिका व शरीर म दान जर्मन देश और इतारियन पूवजा का रक्त भरी ही बहता है। इनका ध्यान व्यक्तिगत जीवन म अपना भाषा और सरहति पर बितना भी नाज क्या न है। किन्तु राष्ट्र का गवान उगी पर य सभी एक हा जाने है। य वषन इतारा जानने है कि हम स्विस है और स्विसजरीण हमारा है। बाग ! हम भारताया म भी य भावना जना न गरी हाता ।

स्विसजरीण म जहाँ भी जाइय, गभी जग बतव्य-बाध और नीतिमता का भावना सिनाई पन्धी है। साग शान्ति प्रिय है। जिन्ना और जान दा व सिद्धान्त का प्रभाव इनक जीवन और विचारधारा में स्पष्ट भनकता है। चारी और उच्चवापन का नाम नहा। परिम और बाहिरा की तरफ, परलिया बच्चा बूढ़ा और स्त्रिया व टग जान का भय भी नहा है। पुनिम का काम गान्ति बनाय रखना और लागी की सहायता करना है। विनेमिया व निरन्तर आवागमन व कारण उनकी महायना व लिय पुनिम विभाग का रहना बढ़त जरूरी है।

मन इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया है। एक बार मेरा पासपाट खो गया था। चित्त उन्म और परेशान था क्याकि उसक बिना विदगा में बड़ी बठिनाइयाँ उठानी पडती है। पासपाट व साथ ही कुछ रुपये और कुछ जरूरी वागजात भा थ। चिन्ता म था, परन्तु दूसरे ही दिन सुबह की डाक स पासपाट आ पहुँचा। सारे वागजात और रुपय ज्या-व-त्या थ। दूसरा बाई दश हाता ता वागजात और पासपाट भल ही मिल जाते, पर रुपये शायद न मिलत।*

मैं एक बार जिनेवा व एक काफ म गया। खूटा पर अपना फट हैट टोगवर में टेबिल पर जा बठा। काफी पीकर पैस चुकान के बाद जब चलन लगा तो देखा—हैट नदारत था। आश्चय तो हुआ पर चुपचाप अपन होटल लौ आया। दूसरे दिन जब फिर पहुँचा ता देखता रह गया। हैट उसा खूटी पर ज्या व-त्या टगा था साथ म एक पुर्जा था—भूल व लिय खेद है।

स्विस लागी में अनुचित लाभ उठाने की प्रवृत्ति भी नहा दिखाई दी। इसका भी मने प्रत्यक्ष अनुभव किया है। मेरे छोटे भाई तपदिव की चिकित्ता के लिए लेजाँ म रहते थ। लेजाँ पहाडी पर बसा हुआ एक छोटा मा कस्बा है

* जिन सज्जन को मेरा पासपोट मिला था उन्होंने भारतीय नाम देखकर उमे एकर इण्टिया के जिनेवा-कार्यालय में भेज दिया जहाँ म यह मर पास भेजा गया था।

और अपने खाम जलवायु व कारण तपेदिक की चिकित्सा का एक केन्द्र भी। वही चिकित्सा के मिलमिले म, मुझे विश्वविख्यात चिकित्सक और शल्य शास्त्री डा० पेनेरे से मिलने का अवसर मिला था। उन्होंने भर भाई का आपरेशन किया था। आपरेशन काफी बड़ा था, परन्तु पारिश्रमिक व रूप म केवल बारह मी रुपये लिये। व आपरेशन व बाद भी पन्द्रह दिना तक प्रतिदिन आकर रागी को देख जाते थे पर अलग म उसकी कोई फीम उन्होंने नहीं ली। महज ही मरा ध्यान अपने गरीब दग क चिकित्सका की बनी हुई फीम की आर गया।

स्विटजरलण्ड मदा से शान्तिप्रिय और सही मायन में निरपन्न राष्ट्र रहा है। इन मीमावर्ती दश सन्ध्या मे आपम म लान्ते भगडते और भार-काट करत रह हैं, पर इमन कभी किसी का भी पक्ष नहीं लिया। यन् जमनी इटली और फ्रान्स जैसे शक्तिशाली राष्ट्र चाहते ता दा महायुद्धा व दौरान कभी भी अपने इम छाटे से पडोसी को कुचल सकते थ पर उनका भी इसकी निरपन्नता का त्रिहाज करना पडा। उन्होंने एक एस राष्ट्र की आवश्यकता महसूस की जहाँ बटकर वे समझौते की बातचीत कर सकें। एमी स्थितिया में स्विटजरलण्ड न मदेशवाहक का काम करक विपणिया का एक-दूसरे व निकट आने का अवसर दिया। इमक अतिरिक्त जब युद्ध से जजर यूरोप क नागरिक अन्न-वस्त्र क अभाव म प्राहि प्राहि करने लग, तब इस छाटे से राष्ट्र न उनका अन्न-वस्त्र दिया आर असहाय अनाथ बच्चो का पानन पोषण भी किया।

इम छोटे से राष्ट्र न सना का सगठन अपनी शान्तिप्रिय नीति व अनुकूल ही किया है। य न तो किसी दूसरे देश पर अधिकार करने की इच्छा रखते है आर न किसी दूसरे राष्ट्र का अधिकार अपना धरती पर सहन करने को तयार है। इनका समूचा मनिक-मगठन सुरक्षा की दष्टि स ही किया गया ह। नियम व अनुसार, उनीस वष से ऊपर के प्रत्येक स्विम नागरिक क लिय चार महाने की सैनिक शि ना अनिवाय है। इसक अतिरिक्त इनका अभ्याम के लिय प्रतिवष एक निश्चित अवधि तक मनिक दस्ता मे रहना पडता है। इम प्रकार प्रत्येक नागरिक एक समय सैनिक भा हाता है। आवश्यकता पडने पर, स्विस सेना बात की बात म आधुनिकतम अस्त्रा से लस हाकर मातृभूमि की रक्षा के लिए सनद्ध हा सकती है परन्तु यहा की सरकार एक विशाल सेना रखन के व्यय भार से मुक्त रहती है। राष्ट्र का धन सेना और अस्त्र शस्त्रा पर खच न कके अन्य उपयोगा एव उत्पादक कार्यों में लगाया जाता है।

स्विस लोगा का घरेलू जीवन भी यूरोप के अय दशा मे थोडा भिन्न है। यहाँ फ्राम जैसा स्वच्छता नहा। बातचीत, व्यवहार और काम के तरीका म

एक गंधी-नायमित गति रहती है। जानन में स्वायत्तता है, पर गरिम और बनिम गीसी उच्छ्वसता नहा। स्विट्जरलण्ड में जहाँ भी विन्ना स्त्री या पुष्प न लक्ष्मण रेता पार का वहा यह सागा का विगाह स गिर जाता है। ममात्र म स्त्रिया का दजा बूत-मुद्ग भारत गीगा है। हमारे यहाँ स्त्रिया को मनाबिचार प्राप्त है और वे राजनीति म भा दन्तन रततो हैं, परन्तु स्विग स्त्रिया इन दाना स वचित है।

स्विग लागा का दग विदेश क पयत्कास कराना गय का सामन्ना हा गानी है। ससार के सभा दगा स लासा पयत्क यहाँ आवर प्रवृति का अनुपम द्दग देखकर व्यस्त और प्रस्त जीवन स बुद्ध समय क लिय मुक्ति पाकर एक नवान्न शक्ति सचय करते हैं। इन पयत्का क म्पार-सत्कार का एक बडा मच्छा व्यवसाय है जिमम जन मर्या का काफी बडा भाग लगा हुआ है। स्विग लागो न अपने अय धधा की भांति इसको भी एक सुव्यवस्थित रूप द दिया है। सभी रमणाक स्थाना में गाइड और होटल मौजूद हैं। इसलिए पयत्का को यह नहा लगता कि व किमी अपरिचित और अनजान देग म आ गय है। सभी जगह स्वाभाविक मुस्मान क साथ उनका स्वागत किया जाता है। व अपनी जेब के मुताबिक होटल चुन सकते हैं। दस स सत्तर रुपय प्रतिदिन तक के होटल मिन्ते हैं जिनमें रहने के साथ सुबह का नास्ता गामिल रहता है।

सरकार भी पयत्का क लिय हर प्रकार की सुविधायें जुटाती है और मुन्य वस्था करती है। पत्यक स्टान पर स्टेट बूफ' हैं जहाँ सस्ते दामा म मच्छा भोजन मिल जाता है। रेलव की ओर से भी सस्ती दर पर पाद्रह दिन तक 'इच्छानुसार यात्रा के टिकट मिलते है जिह लेकर आप कही भी जा सकते हैं।

या तो स्विट्जरलड के सभी शहर और कस्बे आकषक हैं स्विग जनता न उनको करिने स सजाया सवारा है उनकी सफाई का पूरा ख्याल रखा है परन्तु मुझे जवाब बन बजल ज्यूरिख आर ल्यूजन विशप सुन्दर लगे।

जनवा अपने ही नाम की भील क दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ है। शहर की आबादी तो डन लाख हा है पर इनका मट्ट्व अन्तराष्ट्रीय है। प्रथम महानुद्ध क वाग लीग आफ नेशन्स का प्रधान कार्यालय यही स्थित था। आज भी ससार की बडी बडी राजनीतिक समस्याए हल करन क लिये विभिन्न राष्ट्रा क प्रतिनिधि और राजदूत यहा अधिवशना और सम्मेलनो म एक साथ बैठकर विचार करत है। ऐसे अधिवशना स ससार म स्विट्जरलण्ड का यग बढता है और यथष्ट आर्थिक लाभ भी हाता है।

वन क भारतीय दूतावास में मन अपने दस क प्रमुख नेताआ क चित्र देखे।

यूरोप में काफी लम्बे असें के बाद मुझे यही के वातावरण में अपने देश की सहज आत्मीयता मिला। दूतावास यहाँ से एक बुलेटिन के रूप में भारतीय समाचार प्रकाशित करता है। स्विटजरलैंड की राजधानी बर्न के अनावा यह एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर भी है।

यज्ञल उत्तर पश्चिमा कान पर बसा हुआ है और व्यापार का नष्ट म राप्न नदी का सप्त प्रमुख बन्दरगाह तथा व्यापारिक केंद्र है। अन्तराष्ट्रीय लन न के कारोबार में यह अपना एक विनिष्ट म्यान रखता है। स्विटजरलण्ड क गमायनिक उत्पाद क क्षेत्र म यह सबसे बड़ा केंद्र है। विश्व प्रसिद्ध आपधि निमाता सीबा (CIBA) कंपनी का कारखाना यहाँ है। बर्नल में ही समाज का प्रसिद्ध आयात नियात कम्पनिया क कार्यालय हैं। यहाँ प्रति वष अग्रत म एक औद्योगिक प्रदर्शनी आयोजित का जाती है जिसम समाज क विभिन्न दशा मे लावा ग्राहक पहुँचते हैं।

ज्यूरिख यहाँ का सबसे बड़ा शहर है। इसका आबादी लगभग चार लाख है। इसका गणना विद्वान व सप्त सुन्दर नगरा में की जाती है। यह समाज भर में घड़िया और मशीना के निमाण का एक प्रमुख केंद्र माना जाता है। मशी कन-कारखान प्राय विजली स चलाय जाते हैं। इसालिय ज्यूरिख क आमपाम बल-कारखाना की भरमार हाते हुए भी गल और धुए का नाम नहा। उनकी बनावट भा स्कूला आर कालिजा जैसी है।

स शहर की एक विशेषता यह है कि अन्य शहरा का भाति यही लाग रात में काफी दर तक बंधा और स्टैरा में नहीं रहते। सारा वातावरण बारह बज रात तक गन्त हो जाता है।

इसक आमपाम प्राकृतिक स्थला का भा पयाप्त आकषण है। पहाडिया भान और वन बरबस हा आर्कषित कर लते हैं। ज्यूरिख या भी भाल क किनार बसा है और फिर शहर क बीचोबीच लिम्मन नदी की धारा इसकी छटा और भा क गुना बसा दता है। विश्व प्रसिद्ध हाटल दोन्देयर यहाँ पर है।

छाटे कस्बा म मोना नाभि लूजा यू सटल इत्यादि बडे हा सुन्दर है। लूजा और न्यू सटल विद्या क केंद्र भा हैं जहाँ विश्वा स हजारों छात्र विद्याध्ययन क लिए आते रहते हैं।

सबसे ऊँची ट्रेन : सबसे लम्बी सुरंग

म स्विट्जरलण्ड म जहाँ कही भी गया, सभी स्थान सुन्दर स्वच्छ और आरपक्व लग । म्विस लोगो ने अपन देश म जहाँ कहा भी मुरम्य स्थल पाया है, उनकी शोभा का बनाया है उस मजाया है मवारा है । उनत विमान क दम्भ में अपनी जल्दत पूरी करने क ख्याल से प्रकृति क आशियान का बनानिक हथियारो से उजाडा नहीं है बल्कि विमान के सहारे रम्य स्थलियो को पपटका के निर सुगम सुविधापूर्वक और सुरभित बना दिया है । वैसे तो हमारे देश म भा प्रकृति की रमस्थलियो की कमी नही और न नैसर्गिक गाभा का अभाव है पर दुभाग्य ही कहा जायगा कि हमने उसे सवारन की कागिण नही की और आज स्वाधीन हान पर भी उस लिंगा म हमारा ध्यान अनेमाहृत कम हो गया है ।

स्विट्जरलण्ड म दुगम और उँची-ऊँची पहाणियो की चान्तियो पर तार की मजबूत रम्मिया क सहारे भूतते हुए कही मन किमी पवता नी को उबना की तरह धरती पर उतरते हुए देखा । वहाँ दखा पहाड़ी नदी हजारो फुट नाच पवन का धनी बनानी के बीच तक छिपकर मुस्ताक प्रसरती भाग ग्या है । इन मोका पर कई बार मन म यह बात आया कि स्वर्ण तीरकर प्रकृति का उजाडन की लिंगा म यदि कुछ भी रोक धाम कर सवा ता अपन को धय ममभूंगा ।

इसोम क पहाडा क पाम एक गुटर भरन क विनारे बटा में नारता कर ग्या था कि मुभ अनी बरानाय की मात्रा का स्मरण हो आया । वहाँ भी हनुमान चर्या क आगे कतकत करते भरन क विनारे मुस्ताकर कुछ बना चरना करन का त्रिवार किया था । परन्तु जैम हो तुमय मात्रम पडी और चारा तरफ जो रूप दखा उमम भूख का भाग जाता ता स्वाभाविक हो था परन्तु मन में भा उम ग्नाति न हुई । उस समय भा कुछ ताप-मात्रा भरन क विनार मन त्रिजनेन कर रहे थे । गर्मा वस्त्रधारी हो बाजा गागा का राका ता व भगडा करन का तैयार हो गय और दूरर भक्ता न भी मुझे हो बुरा भना बना । कथि मनिया क देश म उना म तब करना उचित न ममभवत हुए ग गया ।

परन्तु स्विट्जरलण्ड की गा विशाणता नी य है कि प्रत्येक स्थान की गाभा निगती है । उनकी दृष्टि में अना एक विशाणता है और वहाँ क गागा म

स्वच्छता का ता इनना अधिक ध्यान है कि अगर कहीं बूड का टय नहीं है ता छिनक वगरह अपना जेब में डान गेग परन्तु स्थान को गदा करन का विचार भी नहा ला सवेंग । यदि थोड में कहा जाय ता यह सारा दश ही सवागमुन्दर है । फिर भा सारा देश देख लने पर यागफ्राऊ न मुझे मवाधिक प्रभावित किया घर आज भी व दश्य मानसपटन पर ज्या क त्या अकित हैं ।

यागफ्राऊ का अर्थ है नवयुवता । इसक सौन्दय की चचा स्विटजरलण्ड में प्रत्यक मित्र-परिचित का जबानी सुनन में आयी थी । स्वत ही यागफ्राऊ की आर खिचना दुआ इन्तरनाकेन जा पढ़ेचा । इन्तरलाकेन एक छाटा सा कस्बा है । शायज और धून नाम की दो भीला क बाव बगा हान क कारण इस इन्तर लाकन—गे भीला की भूमि—बहत हैं । इन भाला क चारा आर क पहाड भीला क जलरूपी दपण में अपनी शाभा देखकर भूमते स लगते हैं । कभा-कभी एसा लगता है कि वादन भी अपन का पाम स दखन के त्रि० भीला का सतह पर भुवते आ रह हैं ।

वहा का आबाली माधारणत अधिक नहा है । कराब दो ढाइ हजार टांगा । परन्तु गर्मिया म जब पहाडापर बरफ गलने लगता है और शीत का प्रकाप अपनावृत कम हा जाता है उम समय यहा पयटका का अच्छा खासा जमाव हा जाता है । पक्काराहण आर अयान्य खन-बूदा क सारे मामान यहा क कलदा आर दूकाना म मिन जात हैं । यात्रा अनुभवा आर कुसल प्रत्याका (गाइडस) का अपन माय ल लते हैं आर निरन पटते हैं पहाडा की चार्टिया पर चान क लिए । यहाँ एक बात कहू कि स्विटजरलण्ड क गाइड आर दूकानदार यात्रिया का दुहन क फेर म नहा रहते । वाजिव महनताना और उचित मूल्य स अधिक नहा मांगते । साथ ही शिष्टाचार और स्नह का भाव भा बरतते हैं । इसनिए यहाँ खच करक जिल म अफमाम नहा हाता ।

इम तरफ जमन भापा बानी जाती है । चष्मा कग्न पर भी जब दूकानदारा का ममभान में सफन नहा हाता था ता उनक सामन रुपय रख देता आर उममें स व अपना उचित मूल्य ले लते । कभी भा मुझे एसा प्रतीत नहा हुआ कि मैं घाडा-बटुत भी टगा गया हूँ । दूकाना में प्राय बित्री करनवाली मुन्दर और स्वस्थ युवतियाँ ही हाता है जो मान दिवान क माय माय मधुर मुस्कान भी बिखरना रता है । एक बार कई वस्तुए दखन पर भा मैंन एक दूकान में कुछ भा नहा मरीगा ता भा वहाँ की गन्ध गन फाटक तक पढ़ेचानके लिए आया और ' थक घू मर कहकर हा वापिस गई । भुम बरबम हा कनवते की एक घटना का स्मरण हा आया । एक दूकानदार क यहाँ पाउटन पन खरापन के लिए गया । दा-तीन

मिन्ट तक ता उगा बात ही नग की फिर जय पन खपनर धुआं नगन का माच ही रहा था कि उसन मुन इग तरह पूरना गन दिया माना म पन उठानर भागने वाता है। मैन उमम कहा मुन वाटरमा या म्यान का पन दिखनाइए, तो उगन भन्नाकर कहा, मागाय । ता घापनी मिचामिवा टाइम यस्ट कारचन घामि जानि घापनाक रिफूर्ड किनवार नाई । किना बडा घन्तर है हममें घोर उनम ?

परिचम क लागे में मैन एक विशपता पायी कि उनर गन-भू मनारजन म साहम घार जीवन का मुस्वान रहती है । वही क प्रयन मरल, स्वम्य घोर नागरिक जिस डग स घपन भवकाग का उपयोग करने हैं वैगा साधारणतया हमम नहा पाया जाता ।

माच महीन का घन हा रहा था जाडा सिमट रहा था । पर घन भी उनन घपना नम नहा छोटा था फिर भी इन्तरलावन में लोगा का जमाव शुरू हा गया था । कनव घोर हाटला म चहन-महल म रही थी । नृत्यगाला घोर रेस्टरी में जीवन खिलखिलान लगा था । लोग हँसकर, नाचकर घवमर घोर भनकाश का घानद न रहे थ । किमी की तीयारी थो स्वेनिंग की, किमी की स्की' करने का तो किमी की दुगम पहाडिया पर रस्तिया क महारे चन की—उनके गिखर घून की ।

'स्की भी क्या जीवट का खेल है पैरा क तनव म मामन की घार उठी हुई लण्डी की दा चिकनी पटरियाँ बांधकर बफ पर किमलना । मैन भी प्रिन्म घली खाँ की दया-खी पांच सवारा म घपना नाम निखाया पर बिलकुल निक्म्मा माविन हुमा । जब कभी दस बीस फुट घन्ता कि या ता आसमान दखता या जमान सूघता । कई बार कोशिश की सब बकार । लिहाजा स्की का दडवत की घोर स्वा करनेवाला को देखकर ही निल का हासला पूरा किया । हजारों फुट की ऊचाई म बरफ पर स्की की पटरियाँ बाँने बिजली की मो तेजी स कूटना किमलना देखकर दाँता तल उगती दवानी पडती है । स्विटजरलैण्ड का ता यह राष्ट्रीय खेल है । विदेशा से प्रतिवप सैकडा खिलाडी घपना करतब दिखान यहाँ गाते हैं । वास्तव में स्की में अभ्यास क माघ बल चाहिए घोर चाहिए एकाग्रता । उन्साह घोर बल मेरे पास था साथ ही कुशल गाइड भी । पर करता क्या ? स्की क मामन में मेरा बल खा गया क्याकि भनी खा की तरह पैर तुडाना उचित नहा जचा ।

इतरलाकेन घोर उनके आस-पान खूब घूमा । दृश्य बड हा मु र थ ।

इह देखकर मुझ जैम सावारण मनुष्य का हृदय जब अनुप्राणित हो गया ता पश्चिम क बड़े-बड़े कलाकार और साहित्यकार क्या न भाव विभोर हो उठते हाग ? प्रसिद्ध साहित्यकार गणे शैली, कीटम, यैररे, रस्किन लागफेला और माकटवाइन आदि का कृतिया में इतरलाकन क मनोरम दुःखा की नैमगिक छाया स्पष्ट परिलक्षित होता है। यहा पर अगरेजा के प्रसिद्ध भावुक कवि वायरन ने विद्व प्रसिद्ध ग्रंथ 'मनफ्रेड बे-जनज' लिखा था।

परन्तु इतरलाकनेन मुझ राक न सका। वह यगफाऊ भुलाई न जा सकी। आस अन्तम था और मन चंचल। बढ चला यगफाऊ का और।

यह यात्रा बडी ही मनारजक रही। माथ म कई पयटक थे अधिकांग विदेशी। यूरोप में इम्मण्ड को छोडकर साधारणतया याथा नीरस नहीं होता। विदेशिया से, विशेषकर हम भारतवासिया से, तो लाग जान-गहचान कर ही गते हैं। ट्रेन में बठा हुआ बाहर क दस्य दख रहा था। पाम में ही यूरो पियन यगफाऊ बठी था। व आपम में अपनी भाषा में बातचीत कर रही थी। कभी-कभी नजर बचाकर मरी और देखती भी जाती थी। लगता था, वे मेरे ही वारे म चर्चा कर रही हैं। मर कान म आवाज आई 'गाधी और इण्डिया।' मैंने उनकी ओर मुडकर दखा। उनमें एक ता अगरेजी म पूछ ही बठी, क्षमा काजिए आप भारतीय हैं ?

ना हाँ, आपका अनुमान सही है, मैंन कहा।

देखिए न, मेरी बहन कहती था कि आप भारतीय हो ही नहा मकने।

भारतीय इतने तगड नहा हान।

मुझे हमी आ गइ। मैंन कहा माने-दुबल लव और नाट मनुष्य ता हर देग में हाते हैं। व भी हँम पडा।

परिचय क सिलमिल में पना चना कि व मुसपन परिवार की हैं और छुट्टियाँ मनाने निकला हैं। विचार विनिमय का ताता लगा। गाधी-नेहन-रवीन्द्र म लकर हमारी सांस्कृतिक सामाजिक व्यवस्था तक पर बातें हुं। स्त्रियो के अधिकार विवाह और भारत की कती हुइ जनसख्या आदि पर भी चचा हुइ। जिस स्पष्ट रूप स इनसे विविष पहलुआ पर खुलकर बातें हुइ वह हमारे देश में सभव नहीं। मुझे ता शुरू में कुछ भिन्नक सी लगी। यह स्वाभाविक भी था कयाकि महिनाआ मे इन सब विषया पर विचार विनिमय करने का कभी मौका ही नहीं आया था। परन्तु यूरोप की इन बहिना के उमृकन हृदय ने मेरे मन की हिन्नक पिटा दी। इम घटना पर ध्यान जाते ही यह विचार उठता है

कि हम यहाँ वस्तुस्थिति पर आवरण डालकर जिसे पर्दा कहते हैं उस पश्चिम में व्यथ का आडम्बर माना जाता है। बहुत अशा म यह सही भी है क्योंकि हमारी वर्तमान सस्त्रति म गिप्टाचार के नाम पर दकियानुमीपन का समावेश हो गया है और भ्रष्ट आचार बरतन हुए भी लिखाव का प्रथम दिया जाता है। किन्तु वहाँ मभी उमुक्त है। इर्मलिए हृदय क स्वच्छ और स्वस्थ रहने का सुयाग भी अधिक है।

विजली से सचालित हमारी टन अपना यात्रा क आरभ स ही क्रमग पहाड की उचाई पर बढ़ती जा रही थी। स्विजरलण्ड म सभी टनें विजली स चनती है। किन्तु यह यात्रा तो सधया भिन्न थी क्योकि पहाड की ढलान का काट छाटकर यगफाऊ की चोटी पर चान क लिए माग नही बनाया गया है जैसा कि हमार देश म दार्जिलिग और शिमला की पहाडिया पर है। यहाँ स्विम इजीनियर और वज्ञानिका न पहाड के भीतर ही मुरग का दी हैं जिनम स यह टन गुजरती हुई यगफाऊ की चोटी पर बती चली जाती है। यात्रियो को मालूम तक नही हाता कि प्रतिपल क समतल भूमि म कितन उपर उठत जा रह हैं। बीच-बीच म कई जगह पर यह टन कुछ देर के लिए खता है जहाँ पहाड काटकर बाहर का दश्य देखन की जगह बना गई है। यहाँ यात्री उतरकर बाहरी दश्य दखत है—पहाड की ऊचाड मे गिरत, गार मघात भरन इठनाता हुई पहाडी नदियाँ और रजत शभ्र बफ पर तैरते हुए बान्ल।

वनजन म हमारी टन कुछ दर रुकी। सुना था कि यहाँ स सूर्यास्त का दश्य बडा ही अनुपम दीखता है। सूर्यादय ता मन दार्जिलिग क टाइगर हिल म दखा था। वापस लोटते समय जब म वनजेन पहुँचा ता सूर्यास्त का समय था। भवमर हाथ से जाने नना नही चाहता था। बाहर का और आकर देखा मूय पश्चिम की पहाडिया क पीछे जा रहा है और हिमानी गिखर और पबत की धानिया पर सध्या केसरिया रग बिलेर क न्वाकर का बिनाद का अभि नन्तन द रही है।

वनजन स फिर हमारा टन भागिन का तरट मुरगा म खा गई। टन क प्रकाग में केवल शोना और गुणए और पहाड की चटाना क भलावा कुछ नही मूमता था। कुछ दर म हम शर्तेंग पहुँच। यहाँ म यगफाऊ क लिए ट्रेन खलना पशती है और घटाम यगफाऊ की खास यात्रा शुरू हाता है। ट्रेन फिर पबत क गभ में ममा गई और चक्कर लगाता हुई भाइजमायर पहुँची। १०३६८ फुट का उँचाई पर या म्यान पबत की गम चटाना का काटकर बनाया गया

ह और स्विस यात्रिक बुगानता का उत्तम नमूना प्रस्तुत करता है। आइजमीयर (हिममागर) जैसा नाम ह वैसा ही उन पाया। गम कपड पहिन था फिर भी ठड महसूस हान नगी। अब हमारी यात्रा का अन्तिम चरण प्रारंभ हुआ।

आखिर यगफ्राऊ तक ट्रेन न हम पहुँचा ही गिया। यह समार का मन्नस उँचा रनव स्टेशन ह और यही पर मने धूराप क मन्नस उँच हायल बगहाक्रम म नाशना किया। यात्रिया क निए माग सुविधाए यहा था धार स्की म हाथ पैर टूट जान पर प्राथमिक चिकित्सा की भी व्यवस्था थी। गम और आरामन्द रहन का जगह और भोजन का मुख्यवस्था रखकर चित्त प्रमत्त हो गया।

यहाँ स निपट क सटारे यगफ्राऊ की धार उँचाई पर जा पहुँचा जहाँ एक बडी दूरबीन लगी हुई है और जिमस समीपवर्ती देग देखे जा सकते हैं। बचपन में पडी हुई परिया की कहानिया जैसी विचित्रता यहा देखन में आई। इस जगह बरफ का एक मकान है जिगमे बरफ की टबुल बरफ की कुर्गियाँ और बरफ का ही मोटर है। पचाम पचपन वर्षों स बना हुआ यह मकान और इसकी वस्तुए आज भी उमी तरह कायम है क्योंकि इस जगह गर्मी इतनी अधिक है जिसकी वजह से बरफ गलने नहीं पाता। यगफ्राऊ की उँचाई १२००० फुट ह हिमागम की चाटिया स कही कम। फिर भी इसकी अपनी विशेषता है अपना आकर्षण है। इसक पार्श्व म पहुँचना उतना कठिन नहा। विज्ञान और कौशल न मन्नस मुगम कर दिया है। प्रकृति के विविध रंग रूपा की उमत्त छवि का आनन्द यहा जिस सरलता स लिया जा सकता है वह अयय कही भी सम्भव नहा। यह जानकर और भी ताज्जुब हुआ कि ऐसा जगह और इतनी मकटापन्न उँचाई पर मे भा लोग स्की करते हैं। जरा भी चूके कि प्राण गय। जस हानण्वाल ममुद्र का चपा-चपा जान गय ह उसी तरह स्विस लोग अपन पहाडा का। वे साहम और उल्हाह का सीमा नहा मानते। यहा तक पहुँचना दुगम और दुष्ट रहना होगा, किन्तु स्विस यात्रिक दक्षता न यगफ्राऊ क सौन्दर्य का रहस्य दुनिया के मामन प्रकट कर गिया है।

यगफ्राऊ क शिखर पर जब मैं पहुँचा ता दोपहर था। सूर्य के प्रकाश स बरफ वाली सी चमक रही थी। चारों धार बुहामा था। बातावरण की गति म स्वित्जरलण्ड की मारी यात्रा चाचित्र की तरह मानस म एक क बाद एक उत्तरन लगी। माचा आखिर यह भी मत्वलाक का दश है। अभाव और आवश्यकता यहा भी रही हागी। फिर क्या न्ना यहाँ सैन्य है? देखा, मरा स्विस गाइड मुझे देखकर मुस्करा रहा है। मेने अनुभव किया कि थम का सही अर्थ

समझन पर मनुष्य दबत्व या गयता है। गादड़ न पूछा, नहीं भ्रमिक् ता नहा लग रही है ? नीच उतरग ? मेने उत्तर लिया— दबदूत । स्वग मे नाच जान का क्यो कहते हा ? और हम नाना हैम पट ।

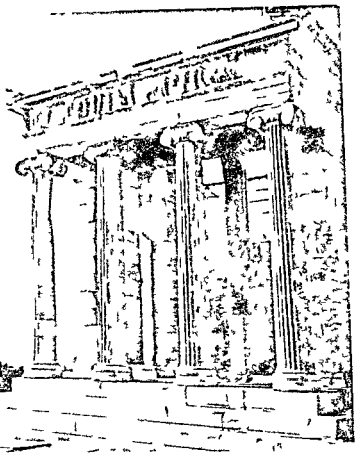
छोटे से दग स्विटजरलड क बुगन यात्रिका न जिम तरह स विश्व का सबसे उची टून बनाई, उगी तरह यूराप क हिमालय 'भाल्पम' क पट का चोरकर भूतल की मयग लम्बी सुरग बनाने का सुयग भी उन्हे ही प्राप्त हुआ ।

वसे तो १८७० म उन्हाने माट कनिग नाम की घाठ मीन लम्बी सुरग बना ली थी परन्तु सिम्पलन सुरग का ता अपना मतलब हो महत्व है। विश्व विजयी वीर नपातियन का भाल्पस क उपर स अपनी पीज ल जाने में हजारों मनुष्या और अपरिमित मुद्ध-भामशा से हाथ धाना पडा था बिन्तु उसी भाल्पम को मुटठी भर लागा न काबू म कर लिया। आज हम जनवा में भाराम से टून म सो कर सुबह इटली क मिलान नगर म पहुच जात हैं। हम पता भी नहा चलता कि सारे भाल्पस क शैल शिखरा का हम पीछे धाड भाप हैं।

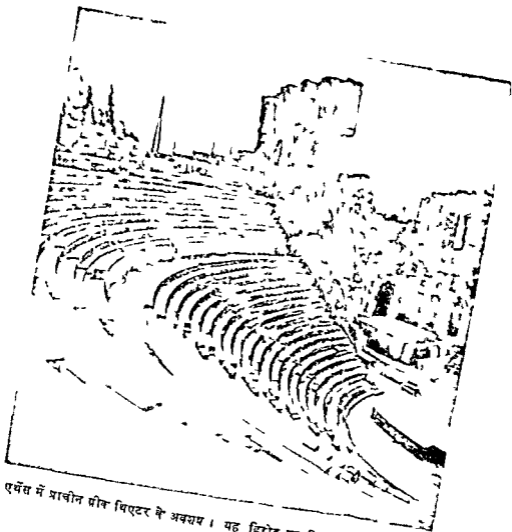
यह सुरग १८९८ मे शुरू हाकर १९०५ में समाप्त हुई था। एक हजार मजदूराने रात दिन तीन पाली से काम कर ६॥ बर्षों म इस कठिन काय को पूरा किया। १२॥ मील लम्बी इस सुरग का वहाँ-वहाँ ता ७ हजार फुट की उचाई का बोझ सहन करना पडता है।

अधिक चौडी सुरग बनाने से उपर क दबाव क बोझ से पहाड खिसकन का भय था इसलिए ५६ फुट की दूरी पर दो समानान्तर सुरग बनाई गई है और हर ६०० फुट के बान दोनो म आवागमन का भाग बना लिया गया है। इस तरकीब से काम तो शीघ्र समाप्त हुआ हा हवा क प्रवेश में भी सुविधा रही।

जब २॥ मील सुरग बन गई तो अकस्मात् प्रबल बग से ठठे बर्षों न जल की धारा निकल आई जिसका बहाव १०॥ हजार गलन प्रति मिनट था और ६०० पौंड प्रति इंच का दबाव था। इस आकस्मिक बाधा और विपत्ति से ब लाग घबडा तो गये परन्तु फिर भी उन्होने साहस के साथ काम को अविराम गति से चालू रक्खा। परमात्मा ने भी इन वीरा की मदद की। कुछ ही भाग जाकर एक गम पानी की धारा मिल गई। इन दोना के सम्मिलन से तापमान सन्तुलित हो गया और सिम्पलन सुरङ्ग बनकर तैयार हो गई जिसे देखते दुनिया क हर कान से लाखों पयटक आते रहते हैं और व मनुष्य की इस वतृत्व शक्ति का देखकर गन्गद हो जाते हैं।



एथेंस नगर में एथना देवी का मंदिर—एक्रोपोलिस जो ईसा पूर्व पाँचवी सती के अंतिम वर्षों में बनाया गया था ।



एवंत में प्राचीन प्रीक पिण्टर के अवशय । यह हिरोड का पिण्टर कहलाता था ।

सुकरात और सिकन्दर के देश में

रोम में वायुयान द्वारा एथेंस आ रहा था पादचात्य सभ्यता के दूसरे मूल स्रोत यूनान की राजधानी एथेंस। जहाज जब यूनान की भूमि पर मँडराया तो ऊबड़ खाबड़, बजर पवनाय भूमि देखकर राजस्थान में चित्ताट क्षत्र का यात्रा आ गई। मन में प्रश्न उठा क्या इस प्रकार की शुष्क भूमि में ही एस वीर उत्पन्न होते हैं जिनका गौरव गाया बरान करके होमर और चल् बरणाई धरमर हा गए ?

फ्रांस और स्विट्जरलैण्ड में मित्रा ने कहा था कि आप विश्व के मुल्करनम स्थानों का देखने के बाद यूनान जैसे नीरस और निजन देश में क्या जा रहे हैं ? परन्तु प्रचान सभ्यता के अवशेषा विचित्रिस्थान आर्कोपानिम पवत और देवी एथीना का मन्दिर देखने के मोर न विवग कर लिया।

विश्व के इतिहास में भारत एवं मित्र के समान यूनान का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। निम्न समय अथ युरोपाय देगा के निवामी गुफामा में रहते, वरुन पहनने थे, उम समय यूनान अपनी सभ्यता के चरमात्मक पर था। यद्यपि भारत और मित्र जैसा पुराना इतिहास ता यूनान का नहा है परन्तु जिनकी सामग्री उमके इतिहास के बारे में उपनध है वह इन दाना देगा की अपेक्षा कहा अधिक है। यदि किसी को कवन आमाद प्रमाद के लिए रात्रि कनव और वड-वड एग और आगम के माधन ही चाहिए, ता यह उपयुक्त स्थान नहा किन्तु जा मानव की मलन विनामा मुख प्रवर्तिया का अध्ययन करन के अभितापी हा उह यूनान अवश्य जाना चाहिए।

भारत में नन्दन जानवान यात्रिया का यूनान जाने के लिए वाइ अनिगिन व्यय नही करना पडता। कुछ हवाई कम्पनिया के जहाज एथम में भी उतरते हैं। व यात्रिया को इस बात का सुनिधा दते है कि वे कुछ दिन बहा रिता मर।

एथेंस का यूनान की लिन्हा कहना उपयुक्त हागा। यूनान के इतिहास में दम नगर का क्या ही स्थान है, जया भारत के इतिहास में लिन्हा का। एजियन समुद्र के किनारे तरह तरह की जनसख्या का यह नगर राजधानी हान के साथ साथ एक बडा बन्गगाह और यापार केंद्र भी है।

भाग बरत भी तो उठा है उमर गायन भा धर्मिय है इतिहास लथम में
 तई शिल्पा का गहर बर-बद भाव भवत गगन का उठा गिरत । परन्तु निरा
 गिया का धार्मिक गगन धोर उमर की मुग्धता व गगनता पर कमा गत
 कर गता है ।

मे नाना कर्क शैल मूमन शिवत गया । गवग गहू । धार्मिकताम परत
 पर गया जा शहर से धानी दूर पर हा है । इस गया । धार्मिक उपासना-भा
 दग है । यहा पर गणपतिना मुक्तरा का जहर का व्यापन गियाया गया था ।
 यहा ग वार गिरा-र न धानी शिव विजय का अभियान धार्मिक गिया था ।
 जिग समय गिरा-र की वार जमनी धार्मिक पुन का विचारितय क विरल गाय,
 गीतना क साथ धार्मिक भरी विचार द रती थी उम समय पर निमो । परत
 मत हा मन गार पर हेग रता हागा कि मर विचार धर्मिय हा है ।

उम बात का धार्मिक शक्ति हठार का ध्यान हा बुद्ध है । धर्म दगा की
 तरह यान म भी गगियान पर निरन्तर बना । कभी ता यही क वार धार्मिक
 दगा म मूठ का सामना धोर गगन-गगिया का लखर विजयी हातर धार्मिक धोर
 कभी गगा समय भी धार्मिक कि रामन धोर तुर्की गगा क धार्मिक म इह लथम
 गाना कर्क भाग जाता पटा ।

वेग ता धार्मिकताम परत पर कई इमारता क सन्तुष्ट शिल्पावर हात है
 परन्तु गगप्रथम म धार्मिकता क सन्तुष्टता में गगमरमर क का देना लथाना क
 मन्दिर म गया । शिव की कता कृतिमा म इन मन्दिर का धनुष्य स्थान है ।
 धार्मिक यही धारा लखर शिवर हूण गगमरमर क लथरा धोर शक्तिम मूर्तिया क
 गिनाय धोर बुद्ध दक्षिणावर नहा हाता परन्तु २००० वर्ष पहन एक एमा
 भा समय था जब इना मन्दिर क प्रागण म दंडवर सन्नाट धारा धार्मिक गरदारा
 क साथ शिव विजय का लखरता बनाया करने ध धार्मिक विजय अभियान क
 पूव देवा ऐंभीना स बरलान मंगिन ध ।

एक कान म कश्च क एक लथर पर बँठ हूण मन साचा—मनुष्य कितना
 विश्वरगुशील है । दायद इग कश्च म हा कई एमा दुर्गन्त प्रताशा सन्तुष्टता सोमा
 हागा जिमन विगी समय धार्मिक तनवार से हाजारा बच्चा धोर श्रिया का धनाथ
 कर शिया हागा धोर धार्मिक उमर कश्च क बुद्ध मिट्टी क कला म धार्मिक गए है ।
 उम समय मुभ कश्च की यह उक्ति माद भा गयो —

कितनी लख मठक म इसम धार्मिक है कितन सन्नाट
 एक धार्मिक म धुग, धडी भर टहर, हूण धार्मिक से पार ।

जहाँ गह्र जमगा विभव था, वही जहा मदिग लहरी
 वन आज उन राजगहा के मिह उगालान्धि प्रहरी ।
 करते थे जा यहा वहाँ की व्याख्या रात रात भर जाग,
 मत्र धकियाण गए अत्र में, भूल गया मत्र राग विराग ।
 वहाँ गईं उनकी वह वाली, किए गए मवके मुह वद
 भर दी गई धून उनम या घर दी गई धक्ता धाग ।

करीब तीन हजार वर्ष पूर्व एथेंस का नाम केफापिया था । यहा के एक वीर सरदार एथन्स ने दबो एथेंस के नाम पर नगर का यह नाम रखा था । उसके बाद की ८ शताब्दिमा म ता एमी जगह म यूनानी साम्राज्य का गामन मचा नित होता रहा ।

ईसा पूर्व पाचवीं शतादी म ग्राम में परीक्कीज नाम का एक महापुरुष हुआ जिमकी वकृत्व शक्ति और काय-कौशल से ही आर्कोपोलिस का इमारत बना । इह बनाने में मिश्र क पिरामिडा का तरह गुनामा से जबरन महनत नहा कराई गई थी । यीसत्रामिया न स्वच्छा से श्रमदान द्वारा लगानार चौदह वर्ष में इस पूरा विषा था । ऐमा क्या जाता है कि उस समय एमी इमारत विश्व के विभी भा देश म नहा थी । अग्नेजी म एक कहावत भी है कि दुनिया म आकर यदि एथेंस नहा दखा ता जीवन बथा है ।

प्रथम ईस्वी गतादी म रामना न यूनान का विजित कर लिया और एथीना व मन्दि में माता मरियम की मूर्ति स्थापित कर दी गई । इसके बाद पंद्रहवा गतादी म तुका न एथम पर कजा कर लिया और एथीना का मन्दि माता मरियम का मिरजा कुछ शताब्दिमा के लिए मस्जिद व रूप म परिणत हो गया । तान मी वर्षों व तुकी गामन-बान म यूनान को जा मास्कृतिक और जन-हानि उगाना पंडो वह कभा पूरी न हा सकी ।

आर्कोपानिम के खण्डहर दक्ते दक्ते मन्दाह हा गया । गर्मी महमूम हा रण थी कयाकि अय यूरोपीय देश की अग्नेभा यूनान अधिक गम देग है । तो ना इन खण्डरा में कुछ एगा आकषण था कि वहाँ मे वापन धान का जो नना करता था । एव बड खण्डहर व रूप में बठकर घकावट मिया रहा था कि तद्रामी भा गई । हठान् रवि ठानुर व शुभित पापाण कहाना के नायक की तरह में भी ११ हजार वर्ष पहन के यूनान में पटव गया जहाँ विचित्र वगभुषा म नाग नाना प्रकार व गग रग कर रहे थे । थोडी त्रै बाद एक मिन्दर

श्री महम्मूग हुई और औरत गुनन पर गरिया का जगह विन्ना, भयात्रा श्वन मगममर व सम्भ विन्नाई शिव । आगिर जी बना करन परिन मजार उतर वास्तविक जगत् म था गया ।

सन्ध्या-भमय एथेग का राष्ट्रीय मप्रहानय श्गन गया । २ ३०० वर्षों क तम्ब व्यवधान का जिना यागारें मूर्तियाँ और वस्तुओं इमम मगहान है, उतना सायन हा मयन कहा हा । वैग ता लान माना । गरिग और वार्तिगन्त के मप्रहानय मगार म बड भद्रभुत मान जान है पर एथग क मप्रहानय ता म्रपना ही महदर है । इमर गिवाय एथेग म मय प्राचान श्गनीय वस्तुमा की भी कमी नहा । इमम प्रमुत है नायन का मन्त्रि एगामग मार एगम क गिर प्रमिमिस की कन्नगाट डिनाग का पिपन्तर हाल और स्पर्शियन परन्तु एधाना क मन्त्रि और पाथेनान व सणहरा का वगन ही महा पयात होगा ।

इस प्राचीन एथेस के माय एक नया एथेम भी है जिग हम इन्प्रस्थ क मुकाबिल म नई शिल्लो कह सकत है । यह नगर आज म १५५ बरष पूव बसाया गया था । मय यूरोपीय नगरा की तरह यहाँ भा विद्वविद्यालय कनव बाजार दुकानें सडन पुस्तकालय सरकारा दफतर सिनमा नाट्य-गृह आदि सब कुद हैं । परन्तु फाग और वल्लिजयम स लोठ प्रत्येक पयटव क लिए इमम कुद आवरण नहा रह जाता । एक बात मुभ भवदय अनुभव हुई कि यहा के निवासिया म पूव और पदिचम का मम्मिथरण है इनालिए यूराप क पदिचमा देशा की अपना व मुदर मार गातानार मुलाकृति वान हैं । वशभूपा म भी पदिचमी यूरोपीय देशा से कुद अतर मालम दता है । कई जगह लम्बी दाग वाल, चाग और लम्बी टोपी पहने पाखी भी श्लिआई दिए । इसक सिवाय गलिया और सटवा पर भी हमारे महाँ की तरह मिठाइया और मय वस्तुए बचनेवाला के खोमच दिखलाई पन् जात हैं । कुद्र बाजार ता भारत क बाजारा की याद दिलाते है ।

यूनान बहुत बडा देश नही है । इसका क्षत्रजन ५० हजार वगमील और आवादी करीब ७५ लाख है । न ता यहाँ बड बड कारखान हैं, और न यहाँ खनिज सम्पत्ति ही अधिक है । इसलिए अमरिका व यराप क सम्पन्न देगा की तरह यह देश धनी नहा है । तो भी इसकी अपना सम्भता है अपना इतिहास है । आज भी जब कोई विदेशी यूनानिया स बातें बरता है ता उसे उनके गौरवपूर्ण अतीत की भूलक मिलती है ।

१९४० क अत म जमना और इगालियना ने इम देश पर अधिकार कर

निया या जा तान वर्षों तक कायम रहा। इन अवधि में इस बहुत हानि उठानी पनी। १९४४ में मित्रराष्ट्रा की सहायता से वह फिर स्वतंत्र हुआ और वहाँ का नाम इन दिनों तेरह वर्षों में अपना नाम का नाम बनाने में कुछ प्रयास तक सफल हो चुका है।

१९७० में एक भारतीय स्पेस के बन्द में वहाँ के तान सौ माक मिनत थे। इसमें वहाँ की गिरी हुई आर्थिक हानि का पता चलता है। इन दिनों सरकार ने अपने मित्रों की कामत से गुनी कम करके आर्थिक अनुदान मित्रों की चला की है।

एथस और आर्कोपोलिस के अतिरिक्त और भी बन्द से स्थान देकर याग्य हैं जैम शीट और स्पेस। परन्तु मरे पान समय कम था और स्वदेश लौटने की जल्दा थी इसलिए उन्हें देख न सका और वायुयान से काहिरा आ गया।

यद्यपि थोड़े समय तक ही ठहर सका परन्तु जा भी देखा उसकी स्मृति जावन भर बनी रहना। यहाँ की एक घटना आज भी हृदय पर अंकित है। उसका उल्लेख कर यह लेख समाप्त करूँगा।

एथन प्रवान के समय टी० डब्लू० ए० (एक अमरीका वायुयान कम्पनी) के युवक अफमर श्री कार्नोपालिस से मरा मित्रता हो गई थी। उन्होंने मुझसे कहा कि वे एक बार मुझे अपनी पत्नी से मिलाना चाहते हैं। चार महीने पहिले उनका दाईं बंध का इकठ्ठा बच्चा का बलि हो गया था। उस दिन के बाद से प्रत्येक दिन उनको स्त्री तीन चार घण्टे उसकी कब्र पर बैठकर राती रहता और कुछ विनिष्ट भी हो हा गई थी। मन आपका जिज्ञास किया था। वह आप में एक बार मित्रता चाहती है।

दूसरे दिन उसके घर जाकर थोड़ा नाश्ता किया और उसकी पत्नी से मिला। वह उस समय भी गार्क चिह्न धारण किए हुए थी और बहुत ही उदास मानुष होती थी। उसने मुझसे कहा— भारत की ज्यादातर विद्या के बारे में मने बहुत कुछ सुन रक्खा है। कृपया मेरा हाथ देखकर बताए कि मेरा भविष्य क्या है।

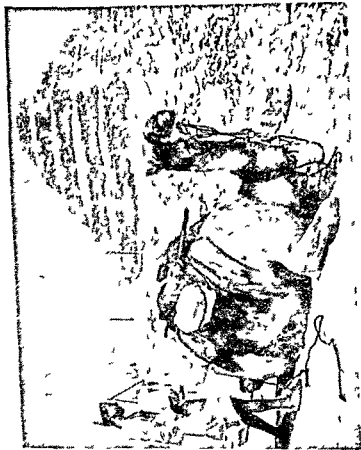
यद्यपि मैं ज्योतिष का बखाना भी न जानता था परन्तु उस गार्क-मन्त्रित मानुष हृदय का मान्यता देने के विचार से मन हाथ देखकर कहा कि— दो वर्ष के भीतर ही आपका पुत्र प्राप्त होगी।

यह सुनकर उसके उत्साही चहरे पर प्रसन्नता की भाव दिवाई थी। मैंने भी अपनी बात में समय के पीछे समय के दंगल पाए।

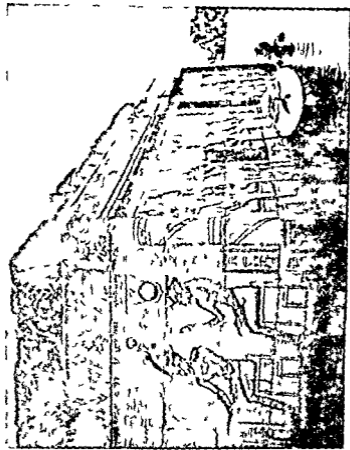
गयांग की बात है कि २१ वर्ष बाद अन्तर्गत की एक दिन उमर पति का पत्र मिला, जिसमें उमरों अपना धीरे धीरे हरी का धार में बसुत ही कृतज्ञता में निर्यात था 'आपने कथानुसार हम पुत्र की प्राप्ति हुई है। हम क्या प्रसन्नता होगी यदि आप एक बार हमारे यहाँ पधारें।

बाप ! मैं फिर से यूनान जाकर उमर सम्पत्ति में मिल पाता ।





सक्कारा में सम्राट दुयोसर का ५००० वर्ष पुराना विरामिड



अस्वान बाघ व जल में डूबा हुआ स्तित शीप अपन गौरवमय स्मारका व साथ

पिरामिडों के देश में

पश्चिमी यूरोप के बाद यूनान भी दख चुका था। अब खतना था मित्र— पिरामिड का देश। ठीक भी यही लगा, क्योंकि इतिहास के अग्रोदय-काल में ही यूनान की भाँति नील का घाटी में भी मानव-सभ्यता की एक धारा प्रवाहित हुई थी जिसे मित्र का सभ्यता कहते हैं। यूनान अबालान और सिन्धु घाटी की प्राचीनतम सभ्यताओं की भाँति ही, इसकी महिमा और गरिमा भा उत्तरात्तर विरमित हुई थी। और, अब इसके अक्षेप बताते हैं कि भौतिक उन्नति में भी यह अपना समकालीन सभ्यताओं में किमी बदर कम न थी।

मित्र जाना पूर्व निश्चित था। एथस में सभी काम निपटाकर हवाई अड्डे पहुँचा। महाना मई का था और मौसम थाफ। ११ घण्टे बाद ही हमारा विमान अन्वार को चीरता हुआ बग चला मित्र की राजधानी काहिरा की ओर।

दो घण्टे में यूनान से मित्र। आज से १,००० वर्ष पूर्व कितना समय लगता होगा? और अपन विजयो-माद में चूर प्रांती को तेजी से बढ़ना हुआ मित्र की कितने दिनों में मित्र तक पहुँच पाया होगा?

ध्यान भंग हुआ। विमान की परिचारिका कह रही थी काहिरा आ रहा है। हम नीचे उतरेंगे।

विमान में मित्र की बरता का रण किया। उम समय रातक साठ बारह बजे रहे थे। चुगा अफमरो के घेर से बाहर निकला। हमें टी० डू० ए० (टास बल्ड एयरबज) की धम ने नगर में अपन पूर्व निश्चित स्थान विक्टोरिया हाटल पहुँचा दिया।

हाटल यूरोपीय ढंग का था साफ और आरामदेह किन्तु दिल्ली के 'अनाक और 'इम्पीरियल के मुकाबल का नहा। बिस्तर पर पाठ मीधी करते ही नाम आ गयी।

मुबह उठा। दिन बग आया था। घाठ बजे थे। गरमी ने बता दिया कि यह अफीका है और सहारा का रेगिस्तान यहाँ में दूर नहा। नित्य-क्रम में निपटकर हाटल में निकला।

रास्ते और बाजार बहुत-बुद्ध पुराना मिनी और कलकत्ता की जकरिया स्ट्रीट की तरह रामन और घरवी त्रिपि में तिस गाइन थो अधिकान लाग ताअबरण और दीधवाय । उट दगवर लगा कि मिय सदिया ग घरव और अमीका का गगम स्थल रहा हागा । उनवा पटनावा भी घरवा का सा था । लम्ब चाग प्रमाम दीन पायजाम और उंची लान टापी । किसी किसी की टापी क चारा और फग भी बैया हुआ था । बातचात क तोर-तरीक भी बहुत-बुद्ध अपन यहाँ की तरह थ । बुकों म औरत मस्जिद और गल—वातावरण अपरिचित नहा लगता था शायद इसीलिए कि करीब सात सौ वर्षों तक भारत पर भी इस्लाम का प्रभुत्व रहा है । चीजा की सजावट म भी बहुत सादस्य था । एक जगह देखा—तरबूज के भुने हुए बीज और नमकीन चन रख हुए थे । एक बड तरबूज की रसदार फाँव भी सजा था । पट भर चन और बीन छाया ऊपर स तरबूज तृप्ति महसूस हुई । यान् आया राजस्थान में बाजरे क सिन्ट खाकर मत्तीरे का पानी पीना ।

गहर क मवान विगप आकषक नहा लग वास्तु कता की दष्टि स य हमारे यहा स अच्छे नही । नय मवान यूरोपीय ढग क थ । मुहम्मद अली का मस्जिद बडा ता जफर है पर दिल्ली क जामा मस्जिद और अजमेर की दरगाह गरीफ की विशालता और गान कुड और ही है ।

गरमी सता रही थी । नहाना चाहता था । साचा—नील ही म क्या न नहाऊँ ? चल पडा । नील थोडी ही दूर था । तीतिय म कपड लपटकर विनार रवे और जाधिया पहिन नप्पी म उतरा । अब तक देस के बाहर इस प्रकार खन कर नहाने का अवसर नहा मिता था । आनन्द भा गया । लगा गया म स्नान कर रहा हू । तैरने के तिए हाथ चढाय ही थ कि आवाज आइ 'अच्छी तरह तैरना ता जानते ही हाग ?'

देखा—पास ही एव बुजुग स्नान कर थ । गहुआ रग स्वस्थ शरीर हल्की दानी और महीन मूछें । मैंने मुस्कराकर कहा 'जी हा तर सता हू ।

कैसा लगा हमारा देग ? बडी साफ अगरजी बोल रह थ ।

मने कहा 'अभी कुछ देख नहा पाया, नल रात हा आया हू ।'

हमारा देग सुनकर मुभ कुड ताज्जुब हुआ । मैं पूछ ही तो बठा 'माफ कीजिए क्या आप यन्ी क है ?

उन्होंने हमकर उत्तर निया 'जी हाँ क्या भरी अगरजी की बजह स आप

मुझ वहां घोर का समझ रहे हैं ? प्रेंच, इतानियन घोर जमान बोनने जाने भा आपरा यहाँ भिन्न जायेंगे ।

मने कहा 'मरी धारणा थी कि' भिन्नवासा ताम्रवर्णा क होते है मगर आप ।

वे कहन लग 'आपका अनुमान सही है, पर पूरा रूप से नहा । हमारे देश का उत्तरी भाग अरब और यूरोप क पाम है । इसलिय दक्षिण का आप ता पना वाला वा रंग आपको साफ मिलगा । इसके अलावा कुछ अरब तुक यहूदी, यूनानी और इतानियन भूमध्यसागरास तट पर सैकड़ वर्षों म बसे हुए है । उनका मिश्रित सन्तान अपनी सुन्दरता के लिए मसार म बजाड है ।

वातचीत में मजा आ रहा था । मैंन कहा 'बचपन म पना था कि मिस्र नाल का दे, है । इसलिये नील के प्रति आप लाग़ा क हृदय म बटी श्रद्धा है । आज मैंन भी अपनी स्नान की हुई पवित्र नदिया की मख्या एक आर बना ली ।

मिस्री बुजुग न कहा जनाव हमारे लिए ता यह आब ए ह्यात है, हमारा सम्पूर्ण देश रेगिस्तान है । पश्चिम में लाबिया स गरम रेत की आधियां आनी है और पूव म अरब का रेगिस्तान है । मशकिस्पता स वाच म यह अमृत का धारा मौजूद है । यह इथापिया के पठारा स उपजाऊ मिटटी लाकर अपने किनाग पर जमा करती जा रही है । इसी म खेती करके हम कुछ अन्न उपजा सते है । हम यहाँ विश्व की सर्वात्मि रूई पैदा कर उस अन्न देशा को नियात करके अपनी आर्थिक दशा ममाल हुए ह वरना न ना हमारे पाम अच्छ उद्योग बच हैं और न खनिज पदार्थ ही । हमारे यहा ८० प्रतिशत लाग नील क किनारे खेता करक जावन बापन करते है । शेष २० प्रतिशत शहरा में रहते है । शहर भा इमा के गाना किनारा पर हैं । मिस्र में नील भी खुदा की तरह एक ही है । —ककक व हमने लग ।

दर तक नहान के बात हम बात निरुत । उन्होंने कपट पहनते हुए कहा 'बनिए काफी पी जाय । सामने ही कहवा घर है । मिस्र म चाय की जगह काफी पाने का प्रचलन है ।

कहा घर हमारे यहा क भद्रामी रस्तारा की तरह था । कमरे की लीवार पर गह फाहल और मक्का शरीफ क चित्र कुरान शराफ की आयतें आर कुछ कनडर ग्य थे । हम एक छोटी टेबिल के किनारे बठ गये । मैंन पूरा हल्का मंगाया या बडी ? उन्होंने महज मुस्कात के साथ कहा यह सवाल तो भारत म आप मुमम कर सकते हैं यहा तो मैं हा आपस कहूंगा ।

काफ़ा तुरा नहा थी । उन्होंने बट हा उल्हाह स अपन दग क वारे म जान कागी नी । मुभ एमा नगा कि वास्तव म मित्र का त्रिग स उत्तर तक खन के लिए कम से कम दम त्रिन का समय चाटिंग । इमी प्रमग म र्मन कता आप अगर दुग न मान ता एक बात पूछ ?

शोक म पूटिए ।

मने शाह फारुख के वित्र की आर इशारा करत हुए पूछा 'परिस म गाह फारुख के वारे मे बुद्ध ऐमी चर्चा मुनी कि दुनिया क हर कान की मुन्दरिया का एक बडा मजमा इनक हर्म में है जिम पर कराना रुपय सालाना खच रिय जान ह ।* इनकी ऐयागी और इनक अजीब गरीबो शोका पर इमी तरह मित्र की बशमार दीलत बरवाद हाती है । इम आपका देग कैम बर्नास्त कर रहा है ?'

बुजुग महादय न सजीदगी स कहा 'गनाव गख, राजा और बाग्शाह—बुवत हिन्दुस्तान या मित्र—कही क भी हा जब तक उनक पाम निरकुग भत्ता रहेगी ता नतीजा साफ हा ह ।

इम मक्षिप्त उत्तर स मुभ अपन मवाल का जबाब मिल गया आर याद आ गय अपन तग क नवाब और राजाआ क लज्जास्पद विवकहान कारनाम । विन्शा हात समय बुजुग महादय न मर हाथ अपन हाथा म लकर मीन स लगाए ।

पाछे मुकर दखा—छोटी द्वाडी आगियाँ और नाच पाल तान नील की लहरा म तिर रहा था । लहरें धूप म चमक रहा था । यान आ गया भारतेन्दु की पक्ति नव उज्ज्वल जन धार हार हीरक सी सोहति ।

काहिरा स सात मीन दक्षिण म 'गिजे' नामक स्थान ह जहाँ विश्व विख्यात पिरामिड हैं । बस म बठकर उतर हा चल पडा । शहर स निकलत ही गरम रत आर सूखा हवा के थपड लगने लग । मने साचा—बीच सहारा म तपता रत की आधिया म केंसी गुजरती हागा ?

गिज स पिरामिड डड माल पर ह । बस से उतरत हा गध और ऊर वाला ने घर लिया । गरमी के कारण यात्री बहूत कम थ । अत सभी अपनी आर साचा ताना कर रह थे । अंगरेजी फेंच और इतानियन क टूट फूटे सग म व अपना अपनी सबारी की प्रशाना कर रहे थ । उन वाक्या क बीच हिन्दी का बहुत अश्वा सुनकर मुभ बहुत अच्छा तगा । मैं उनके माल भाव से चौकन्ना था क्योंकि इम विषय में पहन पन चुना था ।

* मन मित्र की यात्रा मन १९५२ में की थी । गाह फारुख उन त्रिना मित्र क गाह थ ।

माच रहा था कि गधे पर बर्तू या ऊट पर। गध का सवारी म विफायन, ऊट की सवारी में ज्यादा खच। गधा का देखा—कान लटकाए ल है। गधे की सवारी का अपन यहाँ घच्छा नहा मानत, लिहाजा 'रेगिस्तान का जहाज' हा उमकुन रहगा। वगे हुज्जत के बाद अन्दुन मे ऊट का किराया तप हुया तीन रुपय। यहा एक प्रात देखी कि जेम हमारे यहाँ ग्राम तौर पर हर नपाली 'बहादुर है उमी तरह हर मित्री 'अन्दुल है।

रास्त म अन्दुन ऊट का नवल याम चला जा रहा था। ऊट की चान मुस्त पर अन्दुन की जवान तुस्त। टूटी फटी अग्ररजी म अपनी अपन खानदान की और अपने ऊँट की तारीफ। कान खटे हो गए जब मुझे यह बतलाया गया कि मैं उस कमान पर बैठा हुआ हूँ जिन पर मुप्रमिद्ध जमान जनरल रामल बठ चुका था। इतना ही नहा, रोमल को हराकर जब जनरल माटगामरी काहिरा प्राया तो उमन भी तमाम ऊँटों में म इसी को पमद किया था।—'अंगरेज बुरे हा था भल, हाते हैं बदर्दा। वम आपन यहा के कश्मीर क महाराजा न भा इसका चान म खुग हाकर १०० रुपय ता बतौर बन्शीश ही दिय थे।

एक ता गिर पर कडकडाती धूप दूसरे कमाल की चान। परेगानी हा रही था। उम पर जनाब अन्दुन न परमाया 'यह शुक्र समझिय कि आपको उन ठगो स बचाने के लिए मने या ही तीन रुपये कड दिये, वरना दम म कम में ता कमाल नखन ही नगे यामन देता।' उमकी बकबास पर खीझ ता बहुत था रही थी किन्तु बियावान 'सहारा में उमके दीयावार डील चील का देखकर उम चुप करान क बजाय पद ही चुप्पी साथे रहने मे भनाई समझी।

हाल बहान हो रहा था पर पिरामिड क पाम पदवन पर गान्ति मित्री। एसा ममाशिया ममार म अयन बही नहा है। इनका निर्माण प्राय ६,००० वष पूव हुआ था। कितन विमान हैं य। इनका अनुमान इस तरह लगाया जा सकता है कि खूप क पिरामिड म जा इन तीनों में मसब बडा है, लगभग तीस लाख तन बडा-बडा शिनाएँ गगी है जिनका कुन वजन ८॥ करोड तन कूता गया है। मिस्र क शामक इन पिरामिडा का इसलिए बनवाने थ कि उनकी मृत्यु क ग्राव व इनमें समाधिस्थ कर लिये जायें। दाव के साथ उनका प्रिय वस्तुएँ—अनगर स्वग पात्र, गज्य चिह्न वस्त्रादि इनमें रखे जाने थे। इनम से जो टोम स्वण क वन बटे बजनी किम्म क अलकार पात्र अथवा राज्य चिह्न हैं उनका अथ मिस्र क राज्य मग्नानय म रख लिया गया है। इनकी दीवारा पर राजा क जीवन की प्रमुख घटनाया एव कीर्ति के विष उत्कीर्ण किये जाते थे एव उनका कमान भी

रहता था। पत्थर पर खोले हुए चित्रों के साथ बड़ा-बड़ा रंग का भी प्रयोग किया गया है। राजा का शत्रु रामायणिक लप लगाकर एक विशेष प्रकार का तावूत में बंद कर लिया जाता था। इस शब्द का 'ममी' कहते हैं। इस तावूत को पत्थर के एक बड़े बक्के में रख लिया जाता था। इस पर राजा का प्रतिमूर्ति उसका राज्य नाल आदि अंकित कर दिया जाता था। ममी में रखे हुए शब्द मरने न थे। लप का रामायणिक नुस्खा बड़ा था, इसका पता आज तक नहीं चला।

पिरामिडों का निर्माण अत्यन्त बड़ा एक व्यय-साध्य था। हजारों गुलाम बड़े बड़े पत्थर सैकड़ों मीट्र दूर से लम्बी रस्सियों से खींचकर लाते थे दृढ़ता बालू की आग्नी में जहाँ पानी का नाम नहीं। कितनी जान गयी होगी, यह कल्पनातीत है। इसके पास ही स्फिंक्स (Sphinx) की विशाल मूर्ति है जिसका ऊँचाई १८९ फुट है। इसका मारा शरीर सिंह का परन्तु सिर मनुष्य जैसा है। इस टंग की मूर्ति बनाने में राजा की शक्ति एवं पराक्रम के दिग्दर्शन की भावना रहती थी। अपनी कीर्ति और यश को अमिट रखने की आकांक्षा मनुष्य में कितनी अधिक रहती है!—पिरामिड कुतुबमीनार और ताजमहल इन्हीं का प्रथम मान है।

पिरामिड से बापस बस-स्टैण्ड पर आया। तो बज रहा था। अद्भुत का तीन रुपये देने लगा, तो वह भ्रमण करने पर उतारू हो गया। हाथ हिलाने हुए चिल्लाकर कहने लगा 'दम की बात हुई, पेटे हैं तीन रुपये। गोर सुनकर दूसरे ऊँच जाने भी वहाँ आ गए। आश्चर्य तो यह था कि जात समय जहाँ सभी अल्पम में उलझ रहे थे, अब सब उसी की तरफ़ारी करने लग। खैर किमी प्रकार दूसरे लोगों के बीच बचाव से पांच रुपये में छुट्टी मिली। मैं साचने लगा 'पूर्वो देश में हम लोग अपने इस व्यवहार के कारण पयटन व्यवसाय को कितनी हानि पहुँचाते हैं और साथ ही विश्वेशिया का नजरो में अपने राष्ट्र को नीचा गिराने हैं।

गिजे में बस पर बैठकर गहर लौट रहा था। मन में विचार उठे—नील व बुजुग और ऊँट वाला अद्भुत—गाना ही सा मित्तक है। गिजा और सस्कार मनुष्य मात्र को कितना प्रभावित करते हैं! जिसे देग में इन पर अविश्व ध्यान दिया जाएगा बड़ा अद्भुत कम मिलेगा। पिरामिडों में बाहर खड़ा रहा था—पिरामिड आभूत हाँचुके थे। कितना श्रम, धन और समय लगाया गया था इन

पर। सत्रियाँ गुजर चुकी हैं जमाना कहीं से कहीं आ गया, पर य खड अपने युग का गवाही न रह है।

शहर आकर नास्ता किया। सग्रहानय देखने गया। दरवाजा पर 'गाइडा' न धर लिया। मैं किमी को माथ नहा लिया, क्योंकि समय कम रहने के कारण मरमरी तीर पर ही देखना चाहता था। मिस्र का यह सग्रहालय बहुत बड़ा नहीं है। सग्रह भी उतना विविध नहीं, जितना कलकत्ता म्युजियम का है। मरी निचस्पी मिस्र की शिल्पकला, पुरातत्व और इतिहास में थी। अत उहा का देखने लगा। मिस्र के प्रागैतिहासिक एव प्राचीन काल की बहुत सी वस्तुएँ देखीं किन्तु मैं अनुभव किया कि उनकी बारीकियाँ समझना मेरे लिए दुःख था। अच्छा हाता कि इजिप्टानाजा (मिस्र के पुरातत्व की विद्या) का धाना मा ज्ञान प्राप्त कर लता अथवा गाइड साथ ले लता।

यहा ममी म रखा हुआ तुतेनखामन का मन देखा। उसकी बहुमूल्य वस्तुएँ भा यही सुरक्षित हैं। यह मम्राट राज म ततीस मी वष पूव हुआ था। धन के लोभ से पिरामिड की तूट-खटाट सैकड़ों वष तक चरती रही। परन्तु रेत न नाच न्य जान के कारण तुतेनखामन का पिरामिड सुरक्षित रह गया। पम्पि यार्ड की वस्तुएँ भी इटली म इतनी ही अच्छी हातत म रखन को मिली थी, परन्तु वे इनसे चौन्ह सौ वर्षों के बाद की थी।

अप्य वस्तुआ में प्राधान अस्त्र शस्त्र चित्र अलकार लकड़ी के वक्म म्त्यादि को बनावट प्राचीन मिस्रवामिया की परिमार्जित रचि का परिचय दे रही थी। तेइस मी वष पहन के मोन चीनी के कुछ वतन मी रख जा लिन हुए कमल के आकार के थे। इन वस्तुआ को देखकर पता चरता है कि भारत की तरह यहा भी सभवत सूर्य, अग्नि, सप, और गन्ड की पूजा देवी देवताआ के रूप म हाती थी। रामशेष (Ramses) नामक मम्राट भी यहा हुए थे। एमा जगता है कि मुद्गर अतात में हमारे लक्ष से मिस्र का परिष्ठ सम्बन्ध रहा होगा।

सग्रहानय में अस्वान के बाँध का एक माल भी देखा। याद आया कि सुबह मिस्री बुजुग न कहा था कि पयटक पिरामिड देखन लो आते हैं पर अस्वान का बाँध कोई नहीं देखता जिसने मिस्र की काया पलट की है। सचमुच ही, यह बाँध आधुनिक मिस्र का एक आश्चर्य है। इसका निर्माण १८९८ में आरम्भ किया गया और १९०२ म जाकर पूरा हुआ था।

सौभाग्य से यहाँ काहिरा विश्वविद्यालय के एक प्राधेपर से भेट हो गयी।

